प्राप्ति केन्द्र

* श्री सम्पतराय बोरड
C/o मदनचन्द, सम्पतराय बोरड
४०, धानमण्डी
श्री गंगानगर (राजस्थान)

* श्री मोतीलाल पारख
दि अहमदाबाद लक्ष्मी कॉटन मिल्स क० लि०
पो० बाक्स नं० ४२
अहमदाबाद-२२

जिनकी वाणी का नाद आज भी हजारो-लाखो लोगो के हृदयों को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओ मे भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नही बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एव अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चिंतन एव अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एव चिरस्थायी बनाता है। बिना अध्ययन एव विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोंकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नही है, तो वह सभा मे हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसीलिए बहुत प्राचीनयुग मे एक ऋषि ने कहा था—वक्ता शतसहस्रेषु, अर्थात् लाखो मे कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनि श्री धनराज जी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता हैं। उनका प्रवचन, वस्तुत प्रवचन होता है। श्रोताओ को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एव मत्र-मुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बडे व्यापक एवं गभीर अध्ययन पर आधारित है। उनका सस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओ का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी! मालूम होता है, उन्होने पांडित्य को केवल छुआ भर नहीं है, किंतु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक 'वक्तृत्वकला के बीज' मे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति में जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदो मे लेकर उपनिषद ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—

ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओ का और भी अधिक विस्तार हो गया। अब मैं कैसे कहूं कि इन दोनो मे कौन बडा है और कौन छोटा ? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे से उपमित कर दूं। उनकी बहुश्रुतता एव इनकी सग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनि श्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूं। विभिन्न भागो मे प्रकाशित होने वाली इस विराट् कृति से प्रवचनकार, लेखक एव स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के प्रति ऋणी रहेगे। वे जब भी चाहेगे, वक्तृत्व के बीज मे से उन्हे कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नही रहेगे ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रवक्तृ-समाज—मुनि श्री जी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३ —उपाध्याय अमरमुनि
आगरा



बहुत समय से जनता की, विद्वानो की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियो की माँग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जन-हिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगो को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारणा प्रारभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने मे श्री डूंगरगढ, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, नरवाना कैथल, हासी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियो एव युवकों ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सौ कापियो व १५०० विपयो मे यह सामग्री सकलित हुई है। हम इस विशाल सग्रह को विभिन्न भागो मे प्रकाशित करने का सकल्प लेकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुए हैं।

इस पुस्तक की महत्ता और उपयोगिता के अनुसार ही इसकी भूमिका लिखी है जैनसमाज के वहुश्रुत विद्वान तटस्थ विचारक उपाध्याय श्री अमरमुनि जी ने। उनके इस अनुग्रह का मैं हृदय से आभारी हू।

वक्तृत्वकला के बीज का यह दूसरा भाग पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन एव प्रूफ सशोधन आदि मे श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा श्री ब्रह्मदेवसिह जी आदि का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते हैं। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओ और लेखको के लिए एक इनसाईक्लोपीडिया (विश्वकोश) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा....



का फरमान करदे। व्याख्यानादि का सग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने मे सहायता मिलेगी।"

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियो का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० स० १९८६ मे श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य वनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनो भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ सग्रह उस चातुर्मास में वहुत काम आया एव भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसग्रह करने की भावना वलवती वनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे। उनके दिवगत होने के पश्चात दोनो भाई अग्रगण्य के रूप मे पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेष प्रेरणा—एक वार मैंने 'वक्ता वनो' नाम की पुस्तक पढी। उसमे वक्ता वनने के विपय मे खासी अच्छी वाते वताई हुई थी। पढते-पढते यह पक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढो, उसमे जो भी वात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पक्ति ने मेरी सग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज वना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरत लिख लेता। फिर जो उनमे विशेप उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप में गू थ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भापाओ मे निवद्ध स्वरचित सैकड़ो भजन और सैकड़ो व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथा साहित्य एव तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि वढी। फलस्वरूप दोनो ही विपयो पर अनेक पुस्तको की रचना हुई। उनमें छोटी-वडी लगभग २८ पुस्तकें तो प्रकाश मे आ चुकी, शेप ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

सकी है। कही प्राकृत-सस्कृत, पारसी, उर्दू एव अग्रेजी भाषा है तो कही हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पजाबी और बगाली भाषा के प्रयोग हैं, फिर भी कठिन भाषाओ के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा म कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ मे भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थो, कवियो, लेखको एव विचारको ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा मे व्यक्त किए हैं तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा मे ही बोले है। मुझे जिस रूप मे जिसके जो विचार मिले हैं, उन्हे मैंने उसी रूप में अकित किया है, लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तो के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता—इस ग्रन्थ में उच्चस्तरीय विद्वानो के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमो के गम्भीर पद्य है, वेदो, उपनिषदो के अद्भुत मत्र हैं, स्मृति एव नीति के हृदयग्राही श्लोक हैं वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, हेतु, दृष्टान्त एव छोटी-छोटी कहानियाँ भी हैं। अतः यह ग्रन्थ नि.सदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेंगे, क्योकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एव हृदयग्राही बना सकेंगे एव अद्भुत विचारो का विचित्र चित्रण करके उनमे निखार ला सकेंगे, अस्तु !

ग्रन्थ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहाँ केवल बीज इकट्ठे किए गए है। बीजो का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहा करना—यह वप्ता (बीज बोनेवाला) की भावना एव बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्ति रूप फलों

अनुक्रमणिका

पहला कोष्ठक पृष्ठ १ से ७७

१ ब्रह्मचर्य, २ ब्रह्मचर्य की दुष्करता, ३ ब्रह्मचर्य की महिमा, ४ ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उपदेश, ५ ब्रह्मचर्य के फल, ६ ब्रह्मचारी, ७ ब्रह्मचारी को शिक्षा, ८ ब्रह्मचर्य की नव गुप्तिया (बाडे), ९ ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उदाहरण, १० अब्रह्मचर्य, ११ विषय-वासना, १२ काम, १३ काम के भेद, १४ भोग, १५ काम-भोग, १६ कामासक्त, १७ कामान्धो के उदाहरण, १८ विवाह, १९ विवाह का प्रभाव, २० विवाह का समय, २१ विवाह किसके साथ ? २२ कन्यादान, २३ विवाह के भेद, २४ विवाह के मत्र, २५ वैवाहिक रीति-रिवाज का रहस्य, २६ विवाह के विचित्र रूप, २७ पुनर्विवाह, २८ विवाह-सम्बन्धी कहावते, २९ बीद-बीदणी की अद्भुत जोडी, ३० पति-पत्नी की एकता, ३१ पति-पत्नी का सहवास, अनियमित न हो ! ३२ सहवास के लिए निषिद्ध समय एव त्याग, ३३ अति सहवास का निषेध, ३४ गर्भाधान के विषय मे विवेक ।

(चुगल), ९ निन्दा, १० निन्दा-निषेध, ११ निन्दा मे समभाव, १२ आत्मनिन्दा, १३ निन्दक, १४ द्वेष, १५ राग, १६ अनुरागी, १७ रागद्वेप, १८ राग-द्वेप के क्षय से लाभ, १९ स्नेह, २० स्नेह-त्याग, २१ प्रेम, २२ सहज एव सच्चा प्रेम, २३ प्रेम की महिमा, २४ प्रेम वन्धन, २५ प्रेम का निर्वाह, २६ प्रेम का नाश, २७ प्रेम के भेद, २८ प्रेम की प्रेरणा, २९ प्रेमी, ३० जाति प्रेम के उदाहरण, ३१ मोह, ३२ मोहक्षय, ३३ मित्र, ३४ मित्र के गुण दोप, ३५ सुमित्र एव सच्चा मित्र, ३६ मित्र की आवश्यकता, ३७ कुमित्र, ३८ मित्र वनाने के विपय मे, ३९ मित्रता, ४० शिष्टो और दुष्टो की मित्रता, ४१ मित्रता न करने योग्य व्यक्ति, ४२ मित्रता की प्रेरणा, ४३ सगठन, ४४ भिन्नता।

चारो कोष्ठको मे कुल १४५ विपय तथा दस भागों मे लगभग १५०० विपय हैं।

चिन्तन और विद्याध्ययन। इन तीनो अर्थो मे पहला अर्थ जगत्प्रसिद्ध एवं सर्वमान्य है।

५ प्रभूतकार्यकारिणि गुणे वीर्यम् । —सुश्रुत०

अधिक कार्य करनेवाले गुण के अर्थ मे वीर्य शब्द प्रयुक्त होता है।

६ रसाद् रक्त ततो मास, मांसाद् मेद प्रजायते।
मेदसोऽस्थि ततो मज्जा, मज्जात शुक्रसभव ॥
—शार्ङ्गधर

रस मे रक्त, रक्त से मास, मास से चर्बी, चर्बी से हड्डी, हड्डी मे मज्जा (हड्डी का सार) एवं मज्जा से वीर्य की उत्पत्ति होती है।

७. जैसे-एक औंस इत्र तैयार करने मे ८७५२ रत्तल गुलाव के फूल नष्ट होते है। उसी प्रकार वीर्य की एक बूद बनने मे काफी कुछ पदार्थों का विलय होता है।*

८. मरण बिन्दुपातेन, जीवन बिन्दुधारणात् ।

वीर्यपात करने मे मरण एवं वीर्यधारण करने से जीवन है।

९. ब्रह्मचर्य ही जीवन है। वीर्यहानि ही मृत्यु है।
—शिवसंहिता

१० एक शयीत सर्वत्र, न रेत स्कन्दयेत् क्वचित्।
कामाद्धि स्कन्दयन् रेतो, हिनस्ति व्रतमात्मन. ॥
मनुस्मृति २।१८०

ब्रह्मचारी सदा अकेला सोवे। इच्छापूर्वक कही भी अपना वीर्य न गिरावे। क्योकि इच्छापूर्वक वीर्यपात करनेवाला व्यक्ति अपने व्रत का नाश कर देता है।



* जीवन-लक्ष्य पृष्ठ १५० के आधार से

३ ब्रह्मचर्य की महिमा

१ तवेसु वा उत्तम बंभचेरं। —सूत्र० ६।२३

ब्रह्मचर्य सभी तपों में उत्तम है।

२ पंचमहव्वय-सुव्वयमूलं, समणमणाइलसाहुसुचिन्नं।
सव्वपवित्ति-सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण-अवंगुयदारं।
देवणरिन्दणमंसियपूयं, सव्वजगुत्तम-मंगलमग्गं।

—प्रश्नव्याकरण संवरद्वार ४

ब्रह्मचर्य महाव्रतों और अणुव्रतों का मूल है। शुद्ध हृदय-वाले साधु पुरुषों द्वारा सेवित है। जगत की सब पवित्र वस्तुयें इसके द्वारा पवित्र होती है। मुक्ति और स्वर्ग का यह खुला द्वार है। देवेन्द्रों-नरेन्द्रों द्वारा नमस्कृत और पूजनीय है तथा जगत में सर्वोत्कृष्ट मंगलमार्ग है।

३ तं बंभं भगवंतं गहगण-णक्खत्त-तारगाणं जहा उडुवइ, मणि-मुत्त-सिलप्पवाल-रत्तरयणागराणं य जहा समुद्दो, वेरुलिओ चेव जहा मणीणं, जहा मउडो चेव भूसणाणं, वत्थाणं चेव खोमजुयलं, अरविंदं चेव पुप्फजेट्ठं, गोसीसं चेव चंदणाणं, हिमवं चेव ओसहीणं, सीतोदा चेव निन्नगाणं, उदहीसु जहा सयंभूरमणो, ... एरावण इव कुंजराणं ... रुप्पाणं चेव बंभलोए ... दाणाणं चेव अभयदाणं ... तित्थयरे चेव जहा मुणीणं ... वणेसु जहा नन्दणवणं

जो यज्ञ कहा जाता है, वह वास्तव मे ब्रह्मचर्य है तथा जो मौन कहा जाता है, वह भी ब्रह्मचर्य ही है।

९. तपो वै ब्रह्मचर्यम्। —वेद

ब्रह्मचर्य ही तप है।

१०. शील परं भूषणम्। —भर्तृहरि

ब्रह्मचर्य सर्वश्रेष्ठ भूषण है।

११. शीलं दुर्गतिनाशनम्। —चाणक्यनीति ५/११

ब्रह्मचर्य दुर्गति को नाश करनेवाला है।

१२. शीलं भूषयते कुलम्। —चाणक्यनीति

शील कुल की शोभा बढाता है।

१३ कुरूपता शीलतया विराजते। —चाणक्यनीति ८/१४

शील के प्रभाव मे कुरूपता भी अच्छी लगने लगती है।

१४ तोयत्यग्निरपि स्रजत्यहिरपि व्याघ्रोऽपि सारङ्गति,
व्यालोप्यश्वति पर्वतोऽप्युपलति क्ष्वेडोऽपि पीयूषति।
विघ्नोप्युत्सवति प्रियत्यरिरपि क्रीडा तडागत्यापा—
नाथोऽपि स्वगृहत्यटव्यपि नृणा शीलप्रभावाद् ध्रुवम्।

—सिन्दूरप्रकरण-४०

शील के प्रभाव मे अग्नि जलवत्, साप पुष्पमाला वत्, बाघ हिरण-वत्, दुष्टहाथी साधारण-अश्ववत्, पर्वत पत्थर के खण्डवत्, जहर अमृतवत्, विघ्न महोत्सववत्, शत्रु मित्रवत्, समुद्र क्रीडा सरोवरवत् और अटवी स्वगृहवत्, बन जाती है अर्थात् अग्नि आदि अपने स्वभाव को छोडकर आनन्ददायी हो जाते है।



ब्रह्मचर्य के शुद्ध आचरण से ही उत्तम ब्राह्मण, उत्तम श्रमण और उत्तम साधु होता है। वही ऋषि है, वही मुनि है, वही संयत है, और वही भिक्षुक है, जो शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करता है।

५. जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं-संभग्ग-मथिय-चुन्निय-कुसल्लिय-पल्लट्टपडिय-खंडिय-परिसडिय विणासिय विणय-सील-तव-नियम-गुण समूहं"।

— प्रश्नव्याकरण सं०४

एक ब्रह्मचर्य के भंग होने से सहसा विनय, शील, तप, नियम, आदि समस्त गुणों का समूह मर्दित, मथित, चूर्णित, कुशलित्त, (टुकड़ा-टुकड़ा) खण्डित, गलित और विनष्ट हो जाता है।



ब्रह्मचारी

१. देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
बंभयारी नमंसंति, दुक्करं जे करंति ते ॥

—उत्तराध्ययन १६/१६

ब्रह्मचारियों को देव-दानव-गन्धर्व यक्ष, राक्षस और किन्नर ये सभी नमस्कार करते हैं, क्योंकि वे दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं ।

२ ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् बिभर्ति, तस्मिन् देवा अधिविश्वे समोता । —अथर्ववेद ११/५/२४

ब्रह्मचारी प्रकाशमान ब्रह्मज्ञान को धारण करता है और उसमें सब देवता ओतप्रोत हैं अर्थात् समस्त दैवी-शक्तियों से वह प्रकाश व प्रेरणा प्राप्त करता है ।

३ ब्रह्मचारी . श्रमेण लोकांस्तपसा बिभर्ति ।

—अथर्व० ११/५/४

ब्रह्मचारी तप और श्रम का जीता हुआ जगत है ।

४. इत्थियो जे न सेवंति, आइमोक्खा हु ते जणा ।

—सूत्रकृतांग १५/९

जो पुरुष स्त्रियों का सेवन नहीं करते (पूर्णब्रह्मचारी हैं,) वे पुरुष आदि-मोक्ष हैं अर्थात् उनका मोक्ष सर्वप्रथम होता है ।

५. जे विन्नवणाहिऽज्झोसिया, संतिन्नेहिं समं वियाहिया ।

—सूत्रकृतांग २/३/२

७ ब्रह्मचारी को शिक्षा

१ अवि धूयराहिं सुसहाहिं, धाईहिं अदुव दासीहिं।
महईहिं कुमारीहिं, संथवं से न कुज्जा अणगारे ॥
—सूत्रकृताग ४/१/१३

चाहे पुत्री हो, पुत्रवधू हो, धाय हो या दासी हो, विवाहित हो या कुमारी हो—साधु को इन सब मे से किसी भी स्त्री का सहवास नही करना चाहिये।

२. इत्थी-निलयस्स मज्झे, न बंभयारिस्स खमो निवासो।
—उत्तराध्ययन ३२/१३

जिस घर मे स्त्री रहती हो, उसमे ब्रह्मचारी को रहना ठीक नही है।

३. कुसीलवड्ढण ठाण, दूरओ परिवज्जए।
—दशवैकालिक ६/५६

ब्रह्मचारी को वह स्थान दूर से ही त्याग देना चाहिये, जहा रहने से कुशील की वृद्धि होती हो।

४ अदसण चेव अपत्थण च, अचिंतण चेव अकित्तण च।
इत्थीजणस्सारिय झाणजुग्ग, हियं सया वभवएरयाण ॥
—उत्तरा० ३२/१५

स्त्रियो को रागपूर्वक न देखना, उनकी अभिलाषा न करना तथा उनका चिन्तन एवं कीर्तन न करना-उपर्युक्त नियम उत्तमध्यान मे सहायक हैं और ब्रह्मचारियो के लिए सदा हितकारी हैं।

११. हत्थपायपडिछिन्न, कन्ननासविगप्पिय।
अवि वाससय नारी, वभयारी विवज्जए॥
—दसवैकालिक ८/५६

जिसके हाथ, पैर, कान एवं नाक कटे हुए हैं और वह भी सौ वर्ष की वृद्धा है—ऐसी विकृताग स्त्री का भी ब्रह्मचारी को त्याग करना चाहिए।

१२ जहा कुक्कुडपोयस्स, निच्चं कुललओ भय।
एव खु बभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं॥
—दशवैकालिक ८/५४

जैसे मुर्गी के वच्चे को विलाव का सदा भय रहता है, वैसे ही ब्रह्मचारी को स्त्री के शरीर से भय रहता है।

१३ अदु साविया पवाएण, अहमसि साहम्मिणी य समणाण।
जतुकूभे जहा उवजोइ, सवासे विऊ विसीएज्जा॥
—सूत्रकृताग ४/१/२६

अथवा श्राविका होने से मैं श्रमणो की सहधर्मिणी हू- यह कहकर स्त्रिया साधु के पास आवे, पर जिस प्रकार अग्नि के निकट रहने से लाख का घडा पिघलने लगता है, उसी प्रकार विद्वान पुरुष भी स्त्री के सवास से द्रवित हो जाता है।

१४ प्रमायन्तु ब्रह्मचारिण, दमायन्तु ब्रह्मचारिण',
शमायन्तु ब्रह्मचारिण। —तैत्तिरीय उपनिषद १/४/३

ब्रह्मचारियो को चाहिये कि वे प्रमा-यथार्थज्ञान को धारण करें इन्द्रियो का दमन करें और मन को वश मे करे।



३ स्त्रियोवाले स्थानो का सेवन न करे !

४ स्त्रियो की मनोहर एव मनोरम इन्द्रियो का अवलोकन व ध्यान न करे !

५ प्रणीत—अतिस्निग्ध आहार न करे !

६ मात्रा से अधिक आहार-पानी न ले !

७ स्त्रियो के साथ पूर्वकाल मे की हुई रति और क्रीडाओ का स्मरण न करे !

८ विकार उत्पन्न करनेवाले शब्द-रूप-गन्ध-रस स्पर्श मे तथा अपनी श्लाघा-प्रशसा मे आसक्त न बनें !

६ भौतिक सुख-सुविधा मे आसक्त न बने !

२ सेवो थानक शुद्ध, कथा न करो रस कामरा।
त्रिय-सग आसन तजो, भरी दृग निरख म भामरा।
वस मत अन्तर वास, जिहाँ त्रियशब्द सुणीजै,
कृतक्रीडा न सभार- सरस-आहार चित्त न दीजै ॥
परिमाण लोप अधिको उदन, उद्भटवेप म आदरो,
तज शब्द रूप रस गन्ध फरस, धीरज सू ए व्रत धरो ॥

—जयाचार्य

३ सुखशय्या नवं वस्त्र, ताम्बूलं स्नान-मज्जने।
दन्तकाष्ठ सुगन्ध च, ब्रह्मचर्यस्य दूषणम् ॥

—महाभारत शान्तिपर्व

सुखकारी शय्या, नया भडकीला वस्त्र, ताम्बूल, स्नान, मजन-दातन और सुगन्धित द्रव्य—ये ब्रम्हचर्य के दूषण हैं।

९ ब्रह्मचर्य–सम्बन्धी उदाहरण

१ अर्जुन से मोहित अप्सरा ने कहा—मैं आप जैसा पुत्र चाहती हू। उत्तर मिला—माताजी! आप मुझे अपना ही पुत्र समझ लें।

२ शिवाजी ने "कल्याण" को लूटा। सैनिको ने एक सुन्दर स्त्री हाजिर की। उसे देखकर शिवाजी ने कहा—मेरी माता यदि ऐसी सुन्दर होती तो मैं भी सुन्दर होता। यह कहकर शिवाजी ने उस स्त्री को अपने पति के पास भेज दिया।

३ सुन्दर स्त्री और शिवाजी का सवाद—

सारे झगडे छोड के, मेरी निगाहवाँ वनजा।
मैं तेरा पुत्र वन, तू मेरी माँ वनजा॥

४ वर्नाडशा से एक रूपवती महिला ने कहा—अपन विवाह करके ऐसा पुत्र उत्पन्न करें, जो मेरे तुल्य सुन्दर हो एव आप जैसा वुद्धिमान हो। वर्नाडशा ने कहा—इससे ठीक उल्टा अर्थात् तेरे जैसा अक्लदार और मेरे जैसा रूपवान् हो जाय तो? (वर्नाडसा वदसूरत थे)

५ याकूव का वेटा यूसुफ सदाचारी था। भाइयो ने ईर्ष्यावश उन्हे कूप मे डाल दिया। किसी ने निकाला। भाइयो ने

१० अब्रह्मचर्य

१ मैथुनमब्रह्म । —जैनसिद्धांतदीपिका ७/६

स्त्री-पुरुष के जोडे की कामराग-जनित सभी प्रकार की चेष्टायें मैथुन—अब्रह्मचर्य है ।

२ अठारसविहे अबभे पण्णत्ते । —समवायाङ्ग १८

अब्रम्हचर्य अठारह प्रकार का है—

नौ प्रकार का औदारिकशरीर-सम्बन्धी और नौ प्रकार का वैक्रियशरीर-सम्बन्धी ।

३ तिविहे मेहुणे पण्णत्ते त जहा ।

दिव्वे-माणुस्से,तिरिक्खजोणिए।

तओ मेहुण गच्छंति-तंजहा—देवा, मणुस्सा, तिरिक्ख-जोणिया ।

तओ मेहुण सेवंतितंजहा—इत्थी, पुरिसा नपुसगा ।

—स्थानागसूत्र ३/१/१२३

तीन प्रकार का मैथुन कहा है—देवसम्बन्धी, मनुष्य-सम्बन्धी और तिर्यञ्च-सम्बन्धी । तीन मैथुन सेवन करते हैं-देवता, मनुष्य और तिर्यञ्च तथा स्त्री, पुरुष और नपुसक ।

४ स्मरण, कीर्तनं केलि, प्रेक्षण गुह्यभाषणम् ।

संकल्पोऽध्यवसायश्च, क्रियानिष्पत्तिरेव च ।

अब्रह्मचर्य घोर प्रमाद-पाप है।

८ मूलमेय-महम्मस्स, महादोससमुस्सय। —दशवैकालिक ६/१७

अब्रह्मचर्य सब अधर्मों का मूल है और महादोषो का समूहरूप है।

९ कम्प स्वेद श्रमो मूर्छा, भ्रमिर्ग्लानिर्वलक्षय ।
राजयक्ष्मादिरोगाश्च, भवेयुर्मैथुनोत्थिता ॥

—योगशास्त्र २/७८

मैथुन से कम्प—कँप-कँपी, स्वेद-पसीना, श्रम-थकावट, मूर्छा-मोह भ्रमि-चक्कर आना, ग्लानि—अगो का टूटना, शक्ति का विनाश, राजयक्ष्मा—क्षयरोग तथा अन्य खाँसी, श्वास आदि रोगो की उत्पत्ति होती है।

१० व्यभिचार के पास मत फटको। निश्चय ही वह गलत और गन्दा रास्ता है। —कुरान० १७/३२

११ Thou Shalt not Commit adultry
दाउ शैल्ट नॉट कमीट एडलटरी। —बाइबिल

व्यभिचार मत करो।

१२ मेहुणमुमिणे अट्ठसय। —जीतकल्प

साधु को यदि मैथुन का स्वप्न आ जाय तो १०८ श्वासप्रमाण कायोत्सर्ग करना चाहिये।



६ वासनाओ के रहते सपने मे भी सुख नही मिलता।

—रामायण

७ उस आदमी से बढकर रास्ते से भटका हुआ और कौन है, जो अपनी ख्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है।

—कुरान

८ नि सन्देह मुझे अपने लोगो के लिये जिस वात का सवसे अधिक डर है, वह है विपयवासना और महत्वाकाक्षा। विपयवासना मनुष्य को सत्य से हटा देती है और महत्वाकाक्षा मे पडकर मनुष्य परलोक को भूल जाता है।

—हजरतमुहम्मद

९ इन्द्रियो के विपयो की लालसा छोड दे तो मन शान्त रहेगा। —ताओ उप० ३

१० आपातरम्या विपया, पर्यन्तपरितापिन ।

—किरातार्जुनीय ११/१२

इन्द्रियो के विपय केवल प्रारम्भ मे रमणीय लगते हैं किन्तु अन्त मे दु ख देनेवाले हैं।

११ वद्धो हि को ? यो विपयानुरागी। —शकरप्रश्नोत्तरी २

वँधा हुआ कौन ? विपयो का अनुरागी व्यक्ति।

१२ विपया विश्ववञ्चका । —त्रिपष्ठि०

ये विपय जगत को ठगनेवाले हैं।

१३ विपस्य विपयाणा च, दूरमत्यन्तमन्तरम्।
उपभुक्तं विप हन्ति, विपया स्मरणादपि ॥

—उपदेशप्रासाद

स्थित समाधि को जानते है।

१९ ध्यायतो विषयान्पुस, सगस्तेपूपजायते।
सगात्संजायते काम, कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति समोह, समोहात्स्मृतिविभ्रम।
स्मृतिभ्रशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥
—गीता २/६२-६३

विषयो का चिन्तन करने से उनमे पुरुष की आसक्ति होती है। आसक्ति होने से उनमे कामवासना जागृत होती है। कामवासना मे विघ्न होने से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध मे संमोह-अविवेक उत्पन्न होता है, अविवेक से से स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है, स्मरणशक्ति के भ्रमित हो जाने मे बुद्धि (ज्ञान-शक्ति) का नाश होता है और ज्ञानशक्ति के नष्ट होने से मनुष्य अपने श्रेय-साधन से गिर जाता है।

२० अन्धादय महानन्धो, विषयान्धीकृतेक्षण।
—आत्मानुशासन ३५

विषयान्ध व्यक्ति अन्धो मे सबसे बडा अन्धा है।

२१ ददति तावदमी विषया सुख,
स्फुरति यावदिय हृदिमूढता।
मनसि तत्त्वविदा तु विवेचके,
क्व विषया क्व सुख क्व परिग्रह ?

जबतक हृदय मे मूढता-अज्ञान है, तभी तक ये विषय सुख देते हैं। किन्तु तत्त्ववेत्ताओ के विवेचक-हृदय मे कहा विषय, कहा उनका सुख और कहा उनका परिग्रह ? अर्थात् ये कुछ भी नही रह पाते।



७ संकल्पाज्जायते काम, सेव्यमानो विवर्धते।

—महाभारत शान्तिपर्व १६३/८

काम-विकार संकल्प से उत्पन्न होता है और सेवन करने से बढ़ता है।

८ अद्दस काम ! ते मूलं सकल्पा काम जायसि।
न तं सकप्पयिस्सामि, एवं काम न होहिसि ॥

—महानिद्देस पालि १।१।१

हे काम ! मैंने तेरा मूल देख लिया है, तू सकल्प से पैदा होता है मैं तेरा सकल्प ही नही करूंगा फिर तू कैसे उत्पन्न होगा ?

९ शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से राजा ययाति का विवाह हुआ। इधर कामान्ध होकर राजा ने वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा दासी से भी गुप्तविवाह कर लिया। देवयानी ने पिता से कहा। शुक्र ने श्राप दिया। राजा वृद्ध हो गया। क्षमा मागी। फिर छोटे पुत्र पुरु ने अपनी जवानी दी। ययाति खूब भोग भोगने लगा। (वृद्ध पुरु राज्य-काज देखने लगा) फिर भी तृप्ति न हुई। नन्दन वन मे अप्सरा से १००० वर्ष भोग भोगे, लेकिन शान्ति नही हुई। तब आकर पुरु से कहने लगा—

न जातु कौम कामाना-मुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूयएवाभिवर्धते ॥

—मनुस्मृति २/९४

शब्दादि विषयो के उपभोग से काम विकार की शान्ति कभी नही होती, प्रत्युत घृत से अग्नि की तरह वह और ज्यादा बढता है।

१० दूर का लाड़ू खाय सो पछताय, न खाय सो पछताय।

—राजस्थानी कहावत

१३ काम के भेद

चउव्विहा कामा पण्णत्ता, तजहा--सिगारा, कलुणा, वीभच्छा, रोद्दा ।
सिगारा कामा देवाण, कलुणा कामा मणयाण, वीभच्छा कामा तिरियाण, रोद्दा कामा णेरइयाण ।

—स्थानाग ४/४/३५७

चार प्रकार के काम कहे हैं—शृ गार, करुण, वीभत्स और रौद्र । देवो के काम-शब्दादि अत्यन्त मनोज्ञ रति-रस के उत्पादक होने से शृ ंगार कहलाते हैं । मनुष्यो का शरीर शुक्र - शोणित से वना हुआ होने से उनके काम क्षणिक हैं, अत करुण कहे गये है । तिर्यञ्चो के काम घृणोत्पादक हैं अत वे वीभत्स माने गये हैं और नारको के काम क्रोध के कारण होने से रौद्र गिने गये हैं ।

मृगयाऽक्षा दिवास्वप्न, परिवाद स्त्रियो मद ।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च, कामजो दशको गण ॥

—मनुस्मृति ७/४७

१- शिकार, २- जुआ, ३- दिन मे शयन, ४- परनिन्दा- ५- स्त्रियो का सम्पर्क, ६- मदिरापान, ७- नाचना, ८- गाना, ९- बाजे-वजाना, १०- व्यर्थ भटकना—ये दस व्यसन काम से उत्पन्न हो जाते है ।

खेत्त वत्थु हिरण्ण च, पसवो दासपोरुसं ।

मे तभी तक रह सकते हैं, जबतक शरीर मे कामाग्नि प्रज्वलित नही होती।

९ कृश काण खञ्ज श्रवणरहित पुच्छविकलो,
व्रणी पूयक्लिन्न कृमिकुलशतैरावृततनु ।
क्षुधा क्षामो जीर्ण पिठरककपालार्पितगल,
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि निहन्त्येव मदन ॥

—भर्तृ० वैराग्य १८

दुवला, काना, लगडा कनकटा एव दुमकटा कुत्ता, जिसके शरीर मे अनेक घाव हो रहे हैं, उनसे पीप-राव झर रही है और घावो मे हजारो कीडे पडे हुये है, जो भूख से व्याकुल हैं और जिसके गले मे हाडी का घेरा पडा हुआ है—ऐसा दयनीय कुत्ता भी कामान्ध होकर कुतिया के पीछे-पीछे दौड रहा है। हाय ! यह कामदेव वडा ही निर्दय है जो मरे हुये को पुन मार रहा है।

१० हृदय-तृणकुटीरे दीप्यमाने स्मराग्ना—
वुचितमनुचित वा वेत्ति क पण्डितोऽपि।
किमु कुवलयनेत्रा सन्ति नो नाकनार्य—
स्त्रिदशपतिरहल्या तापसी यत् सिपेवे ॥

हृदयरूप तृणो की झोपडी मे कामाग्नि प्रज्वलित होने पर पण्डित पुरुष भी उचित-अनुचित नही सोचता। क्या कमलतुल्य, नेत्रवाली देवाङ्गनायें नही थी, जो देवेन्द्र ने अहल्या तापसी का सेवन किया ।

११ उपनिपद परिपीता, गीतापि च हत ! मतिपथ नीता।
तदपि न हा ! विधुवदना, मानससद्नाद् वहिर्याति ॥

—भामिनीविलास

उपनिपदो का पान किया, गीता को भी अच्छी तरह समझ लिया

१४ भोग

१ अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ,
न यावि भोगा पुरिसाण णिच्चा।
उविच्च भोगा पुरिस चयन्ति।
दुमं जहा खीणफल व पक्खी। —उत्तरा० १३/३१

काल बीता जा रहा है। रात्रिया दौडी जा रही हैं। मनुष्यो के भोग नित्य नही है। फलरहित वृक्षो को पक्षीवत् ये भोग भी अपनी इच्छानुसार पुरुषो को छोड जाते हैं।

२ भोगा, भुत्ता विसफलोवमा,
पच्छा कडुय विवागा, अणुबंधदुहावहा।
—उत्तरा० १६/१२

भोगे हुए भोग विषफल के समान हैं—कटुफल वाले हैं एव दु.खो को लानेवाले हैं।

३ उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई।
भोगी भमइ ससारे, अभोगी विप्पमुच्चई॥
—उत्तरा० २५/४१

भोगो मे कर्मो का लेप होता है। अभोगी निर्लेप रहता है। भोगी संसार में भ्रमण करता है और अभोगी मुक्त हो जाता है।

४ जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो।
एवं भुत्ताणभोगाणं, परिणामो न सुंदरो॥
—उत्तरा० १६/१८

कर्मो की महान् निर्जरा करता है, उसे मुक्तिरूप महाफल प्राप्त होता है।

१२ वंतं इच्छसि आवेउं, सेय ते मरण भवे।

—उत्तरा० २२/४३

हे साधक! जीवित रहकर यदि तू त्यक्त भोगो की इच्छा करता है तो इसकी अपेक्षा तुझे मरना अच्छा है।

१३ ये हि संस्पर्शजा भोगा, दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय! न तेषु रमते बुधः॥

—गीता ५/२२

सस्पर्श से उत्पन्न होनेवाले भोग के जो सुख हैं, वे सभी दुःख के कारण हैं एवं उत्पन्न होकर नष्ट होनेवाले हैं, अत विद्वान इनमे रमण नही करता।

१४ प्रच्छन्न रोग है प्रकट भोग।
संयोग मात्र भावी वियोग।
हा! लोभ मोह मे लीन लोग।
भूले हैं अपना अपरिणाम,
ओ क्षणभगुर भव! राम-राम!

—मैथिलीशरण गुप्त



तणकट्ठेहिं व अग्गी, लवणजलो वा नईसहस्सेहिं।
न इमो जीवो सक्को, तिप्पेउ काम-भोगेहिं ॥

—आतुरप्रत्याख्यान गाथा ५०

तृण-काष्ठो से अग्नि तृप्त नही होती, हजारो नदियो से लवण-समुद्र सन्तुष्ट नही होता। इसी प्रकार काम-भोगो से भी इस जीव की तृप्ति नही होती।



६ तुलसीदास जी की स्त्री पीहर में थी। मध्यरात्रि के समय काम जागृत हुआ एव नदी को पार करके ससुराल पहुचे। द्वार बन्द होने से लटकती हुई रस्सी को (जो साप था) पकडकर भीत पर चढे एवं स्त्री को जा जगाया। कामातुरता पर विस्मित स्त्री ने कहा—

जितना प्रेम हराम से, उतना हरि से होय।
चला जाय वैकुण्ठ को, पला न पकडे कोय॥

७ को वा महान्धो ? मदनातुरो य।

—शकरप्रश्नोत्तरी ६

बडा अन्धा कौन ? जो कामातुर हो, वही।

८ कामासक्तस्य नास्ति चिकित्सितम्।

—नीतिवाक्यामृत ३।१२

कामासक्त व्यक्ति का कोई इलाज नही।

९ कोहं च माणं च तहेव माय, लोह दुगुच्छ अरइं रइंच।
हासं भय सोगपुमित्थिवेय, नपुसवेयं विविहे य भावे॥
आवज्जई एवमणेगरूवे, एव विहे कामगुणेसु सत्तो।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णादीणे हिरिमे वइस्से॥

—उत्तरा० ३२।१०२-१०३

कामगुणो मे आसक्त जीव, क्रोध, मान, माया, लोभ, घृणा, राग, द्वेष, हास्य, भय, शोक, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, और नपुंसकवेद तथा अनेक प्रकार के भाव और अनेक प्रकार के रूपो को प्राप्त होता है और परिणामस्वरूप नरकादि दु खो को भुगतता है तथा विषयासक्ति से अत्यन्त दीन, लज्जित, करुणाजनक स्थिति वाला होकर घृणा का पात्र बन जाता है।

१७ कामान्धों के उदाहरण

१ ब्रह्मा लूनशिरा हरिर्दृशि सरुक् व्यालुप्तशिश्नो हर,
सूर्योप्युल्लिखितोऽनलोप्यखिलभुक् सोम कलङ्काङ्कित
स्वर्नाथोऽपि विसंस्थुल खलु वपु सस्थैरुपस्थै कृत ।
सन्मार्गस्खलनाद् भवन्ति विपद प्राय प्रभूणामपि ॥

अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका ३१

कामान्ध होकर ब्रह्मा ने अपना सिर कटवाया, विष्णु नेत्ररोगी बने, महादेव का शिश्नछेदन हुआ, सूर्य छीला गया, अग्नि सर्वभुक् हुआ, चन्द्रमा सकलङ्क बना तथा इन्द्र का शरीर सहस्रभगयुक्त हुआ। सन्मार्ग से गिरने पर चाहे कितने ही समर्थ व्यक्ति क्यो न हो, विपत्तिग्रस्त हो ही जाते हैं।

२ सौतेले-पुत्र से माता ने शादी की वि स २०१०देहरादून में ।

३ न्यूयार्क का २६ वर्षीय वढई तीन वर्ष पूर्व डेन्मार्क जाकर डा० हम्बर्गर के निरीक्षण मे दो हजार इजेक्शन और छ आपरेशन से पुरुष मिटकर स्त्री बन गया ।

हिन्दुस्तान १९५२ दिसम्बर ६

४ कामान्ध पटियालानरेश के लगभग ३५० रानियाँ थी। उन्होंने एक साल तक प्रतिसप्ताह दो शादिया की। उन्होंने एकबार शिमला मे वायसराय की लडकी को पकड लिया था अत उनका शिमला जाना ही बन्द कर दिया

विवाह का समय

१ चतुर्थमायुषो भाग - मुषित्वाद्यं गुरौ द्विज. ।
द्वितीयमायुषो भागं, कृतदारो गृहे वसेत् ॥

—मनुस्मृति ४।१

ब्राह्मण आयु का चौथा भाग अर्थात् सौ वर्ष की अपेक्षा से २५ वर्ष तक अखण्ड-ब्रह्मचर्ययुक्त गुरुकुल मे रहकर, आयु के दूसरे भाग मे स्त्री से विवाह कर घर मे निवास करे !

२. पञ्चविंशे ततो वर्षे, पुमान् नारी तु षोडशे ।
समन्वागतवीर्यौ तौ, जानीयात् कुशलो भिषक् ॥

—वैद्यकग्रन्थ

वीर्य और रज की अपेक्षा से २५ वर्ष का पुरुष और १६ वर्ष की स्त्री परस्पर समान है, इस बात को कुशल-वैद्य ही जानते हैं।

३. तएणं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए नवगसुत्त-पडिबोहिए अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए गीय-रइयगधव्वनट्टकुसले, हयजोही, गयजोही, रहजोही, बाहु-जोही, बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था । —ज्ञाता सूत्र अ० १

उससमय वह मेघकुमार पुरुष की बहत्तरकलाओं मे पंडित

कामी बोल्यों एम, अवधि आया हूं मर सू ,
रंडवा कर गई दोय, एक रांड हूं भी कर सू ।
बदलो साधी मर गयो, रही दीवड़ी लार ,
"जगन्नाथ" गुरुज्ञान विन, गयो जमारो हार ।



४ अपने से उच्चकुल में विवाह करना अपनी स्वतन्त्रता बेचना है।

—मेसेजर

५ अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं, हंस-वारण-गामिनीम्।
तनुलोम-केश-दशनां, मृद्वङ्गीमुद्वहेत् स्त्रियम्।

—मनुस्मृति ३।१०

जिसका कोई भी अंग विकृत न हो, सौम्य नामवाली हो, (नक्षत्र वृक्ष, नदी, म्लेच्छ, पर्वत, पक्षी, सर्प, दास या भयानक नामवाली न हो) हंस एवं हाथी के समान गतिवाली हो, सूक्ष्म-लोम—पतले केश एवं छोटे दाँतवाली हो तथा मृदु-अंग वाली हो, उस कन्या से विवाह करना चाहिए। (यह महर्षि मनु का मत है।)

६ कुलशीलसमैं सार्धं कृतोद्वाहोऽन्यगोत्रजैः।

—योगशास्त्र १।४७

समानकुल और समानशील वाली अन्य गोत्र में उत्पन्न कन्या के साथ विवाह करनेवाला आदर्श गृहस्थ होता है।



जो पिता थोडा भी शुल्क-धन लेकर कन्यादान करता है, वह बहुत वर्षों तक रौरव-नरक मे मल-मूत्र का भोजन करता है।

४. कन्या यच्छति वृद्धाय, नीचाय धनलिप्सया।
कुरूपाय कुशीलाय, स प्रेतो जायते नर ।

—स्कन्दपुराण

जो मनुष्य अपनी कन्या को धन के लोभ से वृद्ध को, नीच को, कुरूप को या कुशील-व्यक्ति को देता है, वह मर कर प्रेत बनता है।

५. **लडके-लडकियों का मोल**—भारत मे लडको का एवं पाकिस्तान मे लडकियो का मोल धडाधड बढता ही जा रहा है। आज भारत मे सामान्य वर्ग के लडके का मोल ८ हजार से १५ हजार रुपयो तक है। [जिसके घर का कच्चा-पक्का मकान हो, वाप किसी दूकान पर मुनीम हो या किसी कम्पनी मे बाबू हो और स्वय मैट्रिक पास हो, साथ ही क्लर्क या चपरासी बनने का उम्मीदवार हो—वह सामान्य वर्ग कहलाता है]

मध्यवर्ग के लडके का मोल बीस से चालीस हजार है (मध्यम वर्ग वह माना जाता है, जो लडका बी. ए पास है एवं उसके मा-बाप उसके लिए कभी वकील व लैक्चरर बनने की और कभी व्यापार शुरू करने की घोषणा करते रहते हैं। इस वर्ग के लोग ऊपर साफ-सूफ रहते हैं, घर मे मेहमानो के लिए सजाया हुआ एक कमरा रखते हैं और आगतुको के स्वागत का अच्छा प्रबध करते हैं। इनका एक-आध सगपन रईसो के यहां अवश्य होता है, जिसे ये बात-बात पर आगे लाते हैं)

उच्च वर्ग का सौदा पचास हजार से पाच लाख तक पटता है। ये लोग कई इन्जिनियर, डाक्टर, प्रोफेसर होते हैं तो कई मकान-

२३ विवाह के भेद

१ ब्राह्मो दैवस्तथैवार्य, प्राजापत्य.तथाऽसुर ।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधम ॥

—मनुस्मृति ३।२१

विवाह आठ प्रकार का माना गया है—१ ब्राह्म, २ दैव ३ आर्ष ४ प्राजापत्य ५ आसुर ६ गान्धर्व ७ राक्षस, ८ पैशाच । इनमे ८ वाँ सबसे अधम है ।

१. ब्राह्मविवाह—वर को सत्कारयुक्त कन्या देना ।

२. दैवविवाह—यज्ञ मे विद्वानो का वरण करके उसमें कर्म करनेवाले विद्वान को अलकृत-कन्या देना ।

३. आर्षविवाह—एक या दो गाय-वैल का जोडा लेकर धर्म-पूर्वक कन्या देना ।

४. प्राजापत्यविवाह—यज्ञशाला मे विधि करके "तुम दोनो विधिवत् गृहि-धर्म पालो" ऐसे कहकर वर को कन्या देना ।

५. आसुरविवाह—कन्या अथवा वर के सम्वन्वियो को धन देकर विवाह करना ।

६. गान्धर्वविवाह—वर-कन्या का अपनी इच्छा से मिलना ।

७. राक्षसविवाह—कन्या के सम्वन्धियों को मार-पीटकर रोती हुई कन्या को वलात् ले जाना ।

१. समञ्जन्तु विश्वेदेवा, समापो हृदयानि नौ।
समातरिश्वा सधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ॥
—ऋग्वेद १ ।८५।१७

वर-कन्या यज्ञशालास्थित विद्वानो से कहें कि—हमारे दोनो के हृदय पानी की तरह शान्त और मिले हुए रहेगे। प्राणो के समान एक-दूसरे के प्रिय रहेगे। जगत को परमात्मा की तरह एक-दूसरे को हम धारण करेंगे और वक्ता श्रोतओ से जैसे प्रेम करता है, वैसे ही हम आपस मे प्रेम करते रहेगे।

२. ओ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्त मया पत्या जरदष्टिर्यथा स ।
भगो अर्यमा सविता पुरन्ध्रिर्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवा.॥१॥
—अर्थववेद १४।११।५०

ओ अमोऽहमस्मि सा त्वँ (ध्व) सा त्वमस्यमोऽहम्।
सामाहमस्मि ऋक् त्वं, द्यौरहं पृथिवी त्वम्॥
ओ तावेहि विवहावहै, सह रेतो दधावहै।
प्रजा प्रजनयावहै, पुत्रान् विन्दावहै,
वहूस्ते सन्तु जरदष्टय, सप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ।
पश्येम शरद· शत, जीवेम शरद शत,
शृणुया शरद शतम्॥
—पारस्कर ६।३

२५ वैवाहिक रीति-रिवाजों का रहस्य

१. पोखने का अर्थ पोषण करना है। कुकुम के तिलक से आरोग्य की कामना की जाती है। ऊपर चावल लगाकर सदा चावलो के समान उज्ज्वल-शुद्ध रहना ऐसे कहा जाता है। नाक खीचकर नाक ऊंचा रखने की शिक्षा दी जाती है। भेरना, मुशल, दताल, हल आदि फेरकर पशु-धन वगैरह मिल्कत की पृच्छा की जाती है। कन्या पान की पिचकारी थूक कर कहती है कि यह प्रेम का रग कभी उतारना मत! कच्चे सूत की माला मे पारस्परिक प्रेम-तार के सगठन की सूचना है। द्यूत मे एकी-दोकी आती है, उनमे एकी का मतलब है पति-पत्नी को एक-दूसरे का चिन्तन करते रहना एव एक पतिव्रत और एक पत्नीव्रत पालना तथा दोकी का अर्थ है कि आज से हम दोनो एक हो गए हैं और हमे एक-दूसरे के सहयोग से ही सुख की प्राप्ति होगी!



वोरे में वन्द किया जाता है, जिसमें भीषण चीटियाँ होती है।

वालोरिया—में वर-वधू के हाथ वाधे जाते है।

—नवभारत १ मई १९५५ ई०

२　(क) भारत की कुछ आदिमजातियो की हर एक वस्ती में एक मकान होता है जो घोटुल, एरपा, जोरा आदि नामोसे पुकारा जाता है। घोटुल, नृत्यशाला, शयनगृह आदि सुन्दर ढग से वने हुए होते हैं। उनके आरक्षक "कोटवार" एव "आरसर" कहलाते है। दिन छिपते ही गाव के अविवाहित युवक-युवतियाँ सज-घज कर वहाँ पहुच जाते हैं। युवक चेलिक एव युवती मोहियारी कही जाती है। रात को वे मिल-जुलकर गीत-गान एव नृत्य करते हैं तथा फिर सुख से सो जाते है। ऐसे करते करते जिस चेलिक-मोहियारी का मन मिल जाता है तव उनका परस्पर विवाह कर दिया जाता है।

(ख) कोरकजाति मे लडकी किसी एक युवक के घर मे घुस जाती है। लडके को उससे विवाह करना ही पडता है अन्यथा घर छोडकर भागना पडता है और उस घर की मालकिन वह लडकी वन जाती है।

इस जाति मे कई जगह लडकी के साथ एक साल लडका रखा जाता है। अगर एक साल मे लडकी गर्भवती हो गई तव तो उससे उसकी शादी कर देते हैं अन्यथा नामर्द समझकर उसे वहाँ से निकाल देत है ("लडका लमसेना कहलाता है")

यदि मीठी रोटी का एक टुकडा कन्या को दे देता है तो समझ लिया जाता है कि लडकी उसके पसन्द आ गई। फिर उनका विवाह कर दिया जाता है।

(ज) योरोप के कई देशो मे यह प्रथा है कि "लीपइयर" के दिनो मे कोई भी युवती किसी युवक से यदि आग्रह करती है तो युवक को कानूनन उससे विवाह करना पडता है। इनकार करने पर वह राज दण्ड का भागी हो जाता है।

(झ) हिमालय के अंचल मे स्थित जौनसार-परिवार मे सभी पत्नियो के साथ विवाह केवल वडे भाई का होता है। वही उसका प्रथम अधिकारी माना जाता है। पुन वह अन्य सभी भाइयो की पत्नी मान ली जाती है। छोटे भाई द्वारा घर मे किसी लड़की के लाने पर भी विवाह का अधिकारी वडा भाई ही रहता है।

(ञ) ईरान मे अस्थायी विवाह भी होते है जो "मुताह-निकाह" कहलाते है। वे एक निश्चित अवधि (एक दिन, एक हप्ता, एक महीना, एक वर्ष) आदि के लिए ही माने जाते है। उत्तरी अमेरिका के इण्डियनो मे, पश्चिमी अफ्रीका के निग्रो मे ग्रीस तथा अरब की कई जातियो मे एव तिव्वत मे भी इस तरह के विवाहो का उल्लेख मिलता है। मार्शल द्वीप मे सेन्फर साहब को एक वार एक ऐसा व्यक्ति मिला, जो २४ वर्ष की ही अवस्था मे ११ पत्नियो के साथ अस्थायी विवाह कर चुका था। यह युवक किसी भी युवती से सिर्फ तीन या छ महीने के लिए अस्थाई विवाह करता था।

साइकिल आदि देने पर ही शादी करूँगा।' ससुर ने बहुत कुछ कहा, नही माना। तब कन्या ने "गाना" तोड कर कहा–'नही करती ऐसे नीच से मैं तो शादी।' बरात वैरंग होकर वापस दिल्ली लौट आई।

७ भटिन्डे का लडका, लडकी देखने पटियाला गया एव कहने लगा–मैं तो लडकी का नाचना और गाना देख-सुन-कर ही उसे पसन्द करूँगा। अधिक हठ करने पर लडकी ने गाना-नाचना किया। लडके ने कहा–लडकी मेरे पसद है। फौरन लडकी ने कहा–मुझे तू नापसद है क्यो कि तुझे तबला बजाना नही आता। अपना - सा मुंह लेकर लडका घर आ गया।

८ पिछली फरवरी को २३ वर्षीय मार्टिनरेवलट (जिसके हाथ नही थे) की नवीन ढंग की मोटर पुलिसवालो ने रोकी। मार्टिन ने पैरो से लाईसेंस दिखाया। मोटर व पुलिस की खबर अनेक अखबारो मे छपी। उसे लाइव ओक फ्ले-रिडा में रहनेवाली १९ वर्षीय कन्या जोवेथ जान्सन ने पढा। 'जो' के भी हाथ नही है अत उसने पैरो मे पत्र लिखा एव अभी तीन सप्ताह पूर्व मार्टिन 'जो' से मिले। उन्होने सोमवार को शादी के लाईसेंस की अर्जी दी एवं शुक्र को बैपटीस्ट चर्च मे वे शादी कर रहे है।

—सान डि एगो केलिफोर्निया ११ जुलाई १९६३

—हिन्दुस्तान १२ जुलाई १९६३



(च) एक स्पेन की बाई ने तीन वर्ष मे १३ विवाह किये। जिस मे रूसी उमराव, कारखानादार, दूकानदार, मोची, कृपि-कार, सेनापति, जौहरी, नाई एवं दलाल आदि पति बनें।

(छ) अमेरिका में एक ७२ वर्ष का व्यक्ति मरा। उसने १७ विवाह किये एवं तोडे। उसकी पूरे बीस विवाह करने की इच्छा थी।

(ज) कुछ समय पहले तुर्की मे १०२ वर्ष का एक व्यक्ति मरा उसने १४ विवाह तो कर लिए थे, किन्तु १५ वी माग-विधवा बहिन के इन्कार कर देने से आघात लगा एवं वह मर गया।

—'जागृति' गुजराती समाचारपत्र मे

(झ) मध्य इटली मे एक ७४ वर्षीय मुगल एटोनियो प्रेटी और रोजा मोटोनितो की सगाई १९१० मे हुई थी। उसके बाद एंटोनियो को सैनिक सेवा के लिए बुला लिया गया और प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान दोनो बिछुड गए।

दोनो ने विवाह किए और अपने-अपने साथियो को खो दिया। हाल मे वे फिर मिले, अपने पहले सम्पर्कों को ताजा किया और गत सोमवार को चर्च मे दुबारा विवाह-सूत्रो मे आवद्ध हो गए।

—हिन्दुस्तान १७ फरवरी १९६८



२६ बींद-बींदणी की अद्भुत जोड़ी

१. बींद-बींदणी जोड़-तोड़, ले पमेरी माथो फोड़ ।

२ बींद-बींदणी सावधान, घर मे नही पाव धान ।

—राजस्थानी कहावतें

३. पति-हाड का क्या लाड, मर्द तो एकदन्ता ही भला ।
पत्नी-हाड का क्या लाड, मुंह तो सफम-सफा ही भला ।
(पति के एक दाँत था और पत्नी दंतहीन थी ।)

४. विवाह के समय तुतलाकर बोलनेवाले बींद-बींदणी -
बींद—तोड़ी-तोडी-तोडी,
बींदणी—मत्तोडो-मत्तोडो-मत्तोडो,
पडित—दो घर विगडते एक घर विगडा स्वाहा !

५ बींद मरो-बींदणी मरो, बामण रो टक्को त्यार ।

—राजस्थानी कहावतें

६ बींद रै मूंढै लाल पड़ै, जद जानी बापडा काई करै ? „

७ वर काणा था एव कन्या पांगली थी । फेरो के समय वर के चाचा ने कहा—"गढ जीत्यो रे बेटा ! काण्या !"
तब कन्या का मामा बोला—"खबर पडसी उठाण्या"

—राजस्थानी कहावत



३१ पति-पत्नी का सहवास अनियमित न हो

१. पशु-जीवन में दूसरी बात हो सकती है, लेकिन मनुष्य के विवाहित जीवन का यह नियम होना चाहिए कि कोई भी पति-पत्नी बिना आवश्यकता के प्रजा उत्पन्न न करे और प्रजोत्पादन के हेतु-विना संभोग न करे ! —गांधी

२. वृत्त्यर्थं भोजनं येषां, सन्तानार्थं च मैथुनम् ।
वाक् सत्यवचनार्थाय, दुर्गाण्यपि तरन्ति ते ॥

जो मनुष्य प्राण-रक्षा के लिए खाते हैं, सन्तान के लिए स्त्री-संसर्ग करते हैं और सत्य के लिए बोलते हैं—वे विपद् के पार हो जाते है ।



युग्मासु पुत्रा जायन्ते, स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिपु ॥४८॥

पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे, स्त्री भवत्यधिके स्त्रिय ।
समे पुमान् पु-स्त्रियौ वा, क्षीणेऽल्पे च विपर्यय ॥४९॥

—मनुस्मृति ३।४६ से ४९

(रजोदर्शन से जाने गए गर्भ रहने के समय को ऋतुकाल कहते हैं ।) रजोदर्शन के चार दिन-रात-सहित सोलह रात्रिया स्त्रियो का स्वाभाविक ऋतुकाल कहलाता है । (४६) उन सोलह रात्रियो मे चार तो पहली, ग्यारहवी और तेरहवी—ये छ रात्रियाँ निन्दनीय हैं और शेष दश प्रशस्त हैं । (४७) युग अर्थात् छठी, आठवीं, दसवी, बारहवी, चौदहवी और सोलहवी—इन छ रात्रियो मे गमन करने मे पुत्र उत्पन्न होता है और अयुग्म अर्थात् पाँचवी, सातवी, नौवी और पन्द्रहवी रात्रि मे गमन करने से पुत्री उत्पन्न होती है । (४८) पुरुष का वीर्य अधिक होने से विषम रात्रियो मे भी पुत्र होता है, स्त्री का वीर्य अधिक होने से सम रात्रियो मे भी पुत्री होती है, दोनो का समान वीर्य होने मे नपुंसक या पुत्र-पुत्री का जोडा होता है तथा वीर्य क्षीण अथवा कम होने मे गर्भ नही भी रहता ।

५. कामशास्त्र मे कहा है कि अग्नि, ब्राह्मण तथा माता-पिता-गुरु-ज्येष्ठ भ्राता आदि गुरुजनो के पास, नदी तट पर, मन्दिर मे, किला वगैरह मे, चौरास्ते मे, पराये घर में, जगल मे, श्मशान मे, दिन मे, सक्रान्ति मे, चन्द्रमा के क्षयकाल मे, शरद् ऋतु में, ग्रीष्म ऋतु में, ज्वर चढा होने पर, उपवास रखने पर, सन्ध्या समय और परिश्रम करने के बाद—पूर्वोक्त स्थानो एव समयो मे विद्वान को स्त्री-

३३ अति सहवास का निषेध

१ धर्मार्थाविरोधेन काम सेवेत।

—नीतिवाक्यामृत ३।२

धर्म और धन का नाश न करते हुए काम का सेवन करना उचित है।

२ अतिस्त्रीसप्रयोगाच्च, रक्षेदात्मानमात्मवान्।

—वैद्यक-ग्रन्थ

अधिक स्त्री-प्रसंग से अपने-आपको बचाए रखना चाहिए। इससे शूल-काश-श्वास आदि अनेक रोग उत्पन्न होने का भय रहता है।

३ ग्रीस के महात्मा सोक्रेटीज से उनके शिष्य ने पूछा—मनुष्य को स्त्रीप्रसंग कितनी बार करना चाहिए?

महात्मा— जीवन भर मे मात्र एक बार।

शिष्य – यदि इससे तृप्ति नही हो तो?

महात्मा— वर्ष मे एक बार।

शिष्य – यदि इतने पर भी मन नही माने तो?

महात्मा— महीने मे एक बार।

शिष्य – फिर भी रहा न जाय तो?

महात्मा— खैर, महीने मे दो बार, पर ऐसा करनेवाले की मृत्यु जल्दी होगी।

१. ऊनषोडशवर्षाया— मप्राप्तपञ्चविंशतिम् ।
यदा धत्ते पुमान् गर्भं, गर्भस्थ स विनश्यति ॥
जातो वा न चिरं जीवेद्, जीवेद् वा दुर्वलेन्द्रिय ।
तस्मादत्यन्तवालाया, गर्भाधान न कारयेत् ॥

—सुश्रुत शरीरस्थान अ० १०

सोलह वर्ष से कम उम्र की स्त्री मे यदि पच्चीस वर्ष से कम उम्र का पुरुप गर्भ-स्थापन करता है तो गर्भ कुक्षि मे ही बिगड जाता है । कदाचित् वच्चा जन्म भी जाता है तो अधिक जीता नही । कदाचित् जी जाता है तो कमजोर और रोगी होता है । अत कम उम्र की स्त्री मे कभी गर्भाधान नही करना चाहिए ।

२. तए णं सा धारिणी देवी नाइतित्त नाइकडुय नाइकसाय नाइअविलं नाइमहुर, ज तस्स गब्भस्स हिय मिय पत्थयं देसे य काले य आहार आहारेमाणी, नाइचित नाइसोग (णाइदेण्ण) नाइमोह नाइभय नाइपरित्तास ववगयचिंता-सोय-मोह-भय-परित्तासा त गब्भं सुहसुहेण परिवहइ ।

—ज्ञातासूत्र १

उस समय गर्भवती वह धारिणी रानी अति तीखा, अति कडुवा अति कसैला, अति खट्टा एवं अतिमीठा आहार छोडती हुई, जो उस गर्भ के लिए हितकारी, प्रमाणयुक्त एव पथ्य होता, वही

दूसरा कोष्ठक

१ परस्त्रीगमन-निन्दा एवं निषेध

१. अनार्य परदारव्यवहारः।

—अभिज्ञानशाकुन्तल

परस्त्रीगमन अनार्यों का काम है।

२ नहीदृशमनायुष्य, लोके किंचन दृश्यते।
यादृशं पुरुषस्येह, परदारोपसेवनम्॥

—मनुस्मृति ४।१३४

इस संसार मे पुरुष का आयुष्यबल क्षीण करनेवाला परस्त्रीगमन जैसा दूसरा कोई भी दुष्ट कार्य नही है।

३. परदाराभिमर्शात्तु नान्यत् पापतर महत्।

—वाल्मीकि रामायण ३।३८।३०

परस्त्री मे अनुचित सम्बन्ध करने से बड़ा पाप दूसरा कोई नही है।

४. परस्त्रीगमन करना जान बूझकर अपनी स्त्री को व्यभिचारिणी बनाना है। —विजयधर्मसूरि

५. प्राणसंदेह - जनन परमं वैरकारणम्।
लोकद्वयविरुद्धं च, परस्त्रीगमनं त्यजेत्॥

—योगशास्त्र-२।९७

२ परस्त्रीगामी

१. सर्वस्वहरणं बन्धं, शरीरावयवच्छिदाम् ।
मृतश्च नरक घोर, लभते पारदारिक ॥
—योगशास्त्र २।६७

परस्त्रीगामी पुरुष को यहा सर्व धन का नाश, जेल आदि का बन्धन एवं शरीर के अवयवो का छेदन प्राप्त होता है और वह मरकर घोर नरक मे जाता है ।

२ यावन्तो रोमकूपा स्यु, स्त्रीणा गात्रेषु निर्मिता ।
तावद् वर्षसहस्राणि, नरक पर्युपासते ।
—महाभारत अनुशासन पर्व १०४

स्त्री के शरीर मे जितने रोम—छिद्र हैं, उतने हजार वर्ष तक परस्त्रीगामी नरक मे निवास करता है ।

३ चत्तारि ठानानि नरो पमत्तो, आपज्जती परदारूपसेवी ।
अपुञ्ञलाभ न निकाममेय्य, निन्दं ततीय निरय चतुत्य ॥
—धम्मपद ३०६

प्रमादी-परस्त्रीगामी मनुष्य को चार चीजें प्राप्त होती हैं—१—अपुण्यलाभ, २—सुख से निद्रा का न आना, ३—निदा और ४—नरक ।

४. अवि हत्थ-पायछेयाए, अदुवा वद्धमसउक्कते ।
अवि तेयसाभितावणाणि, तय-खारसिंचणाइं च ॥
—सूत्रकृताग ४।१।२१

३ परस्त्री-त्यागी

१ मातृवत् परदाराश्च, परद्रव्याणि लोष्ठुवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतानि, य पश्यति स पश्यति ॥
—चाणक्यनीति १२।१३, पद्मपुराण सृष्टिखण्ड १९।३५९

जो मनुष्य दूसरो की स्त्रियो को माता के समान, दूसरो के द्रव्य को मिट्टी के ढेले तुल्य एवं सब जीवो को अपनी आत्मा के समान देखता है, वस्तुत वही सही-सही देखनेवाला है ।

२. स्वदारे यस्य सन्तोष, परदारनिवर्तनम् ।
अपवादोऽपि नो यस्य, तस्य तीर्थफलं गृहे ॥
—व्यासस्मृति

जो पुरुष स्वस्त्री मे सन्तुष्ट है और परस्त्री का त्यागी है, उसका कही भी अपवाद नही होता और उसे घर मे बैठे-बैठे ही तीर्थ का फल मिलता है ।

३. दिवि-दीपक लोय वनी वनिता, जड-जीव पतग जहाँ परते ।
दुख पावत प्राण गँवावत है, वरजे न रहे हठ से जरते ॥
इह भाति विचच्छन आँखिन के वश, होय अनीति नही करते ।
परती लखि के धरती निरखें, धन हैं-धन हैं नर ते-नर ते ।
—भूधरदास

४ सदारसंतोसिए अवसेसं मेहुण पच्चक्खाति, जावज्जीवाए ।
—श्रावकप्रतिक्रमण

७ नाहं जानामि केयूरे, नाऽहं जानामि कुण्डले ।
नूपुरेत्वभिजानामि, नित्यं पादाभिवन्दनात् ॥

—वाल्मीकि० किष्किंधाकाण्ड ६।२२

सीता हरण के बाद जब उसके गहने पहचान के लिए लक्ष्मण के सामने लाये गये तब लक्ष्मण ने कहा—मैं सीता के कंकणों और कुण्डलों को नहीं पहचानता, केवल नेउरों को पहचानता हूँ क्योंकि सदा चरणों में ही नमस्कार किया करता था, उसके मुंह और हाथों की तरफ नहीं देखता।

८. एक नारी ब्रह्मचारी —राजस्थानी कहावत

९ बिलाद् बहिर्बिलस्यान्त-स्थितमार्जार-सर्पयो ।
मध्ये चाखुरिवाऽऽभाति, पत्नीद्वययुतो नर ॥

बिल के बाहर बिल्ली हो और बिल के अन्दर साप हो, उनके बीच में रहे हुए उंदर की जो दशा होती है, दो पत्नीवाले पति की भी वही दशा समझो।

१० स सुखी यस्य एक एव दारपरिग्रह ।

—नीतिवाक्यामृत २७।३६

वही सुखी है, जिसके एक स्त्री है।



प्रिय पत्नी के न रहने पर समस्त संसार जंगल के समान हो जाता है।

६ जीवद्भर्तरि वामाङ्गी, मृतेवापि सुदक्षिणे।
श्राद्धे यज्ञे विवाहे च, पत्नी दक्षिणत सदा।

—अत्रिस्मृति-१३६

स्वामी के जीवित अवस्था मे अथवा मृत अवस्था मे स्त्री वायी ओर बैठा करती है, लेकिन श्राद्ध, यज्ञ और विवाह के समय दाहिनी रहा करती है।

७ नारीपरिभव राजन्! सहन्ते पशवोऽपि न।

—त्रिपष्टि० २।६

अपनी स्त्री का अपमान पशु भी नही सह सकते।

८. भोजनाच्छादने दद्याद्, ऋतुकाले समागमम्।
भूपणाद्यं च नारीणा, न ताभिर्मन्त्रयेत् सुधी ॥

—पंचतन्त्र ५।६१

स्त्रियो को भोजन, वस्त्र, आभूपण एवं ऋतुकाल मे समागम देना चाहिए, किंतु विद्वान् को उनके साथ गुप्त-मन्त्रणा न करनी चाहिए।

९ नाश्नीयाद् भार्यया सार्धं, नैनमीक्षेत चाश्नतीम्।

—मनुस्मृति ४।४३

अपनी पत्नी के साथ भोजन नही करे और उसे भोजन करते समय देखे भी नही।



४. जीवन्ति च म्रियन्ते च, समं पत्या पतिव्रताः

—त्रिषष्ठि० २।६

पतिव्रताएं पति के साथ जीवित रहती है एवं पति के साथ मरती हैं।

५ शुद्धानारी पतिव्रता —चाणक्यनीति ८।१७

पतिव्रता स्त्री पवित्र होती है।

६. पतिव्रताना नाकस्मात्, पतन्त्यश्रूणि भूतले।

—वाल्मीकि० ६।१११।६७

पतिव्रता स्त्रियो के आँसू किसी अनर्थरूप कारण के विना पृथ्वी पर नही गिरते। उनके आँसू गिरने मे अवश्य कोई न कोई अनर्थ होता ही है।

७ **पतिव्रताएँ चार प्रकार की होती हैं–**

एक ही धर्म एक व्रत-नेमा, काय वचन मन पतिपद-प्रेमा-
जगपति व्रताचार विध अहही, वेद पुराण संत सब कहही।
उत्तम के अस बस मन माही, सपनेहु आनपुरुष जग नाही।
मध्यम परपति देखहिं कैसे, भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।
धर्मविचारिसमुझिकुलरहई,सोनिकृष्ठत्रियश्रुतिअसकहई,
विन अवसर भयते रह जोई, जानहु अधम-नारि जग सोई

—तुलसीकृत रामायण

८ सगुणादासी को पीकदान देने मे राम के एक-पत्नीव्रत मे दोष एव एकदा भेंट मे आए हुए फूलों को, राम को धारण कराए विना सूंघ लेने मे सीता के एकपतिव्रत में दोष मान लिया गया।

९. एक ब्राह्मण अपने तपस्तेज मे बगुले आदि पक्षियो को

महासती वह है, जो किसी भी परिस्थिति मे अपने पति को नही छोडती, चाहे वह पंगु, अन्धा, कुबडा, कोढी, रोगपीडित अथवा विपत्ति-ग्रस्त भी क्यो न हो ।

१४. कोद्रू धान-धान में नही, परा आता आडो दीजे ।
मोल्यो माँटी, माँटी मे नही, परा दिन गुजारो कीजे ॥



स्वाभाविक स्नेहवाली कुलवनिता पति के जीने पर जीती है, मरने पर मरती है और पति की खुशी मे खुश रहती है। उसको किसके समान कहा जाए!

६. पतिप्रिया पतिप्राणा, पतिप्रियहिते रता।
यस्य स्यादीदृशी भार्या, धन्य स पुरुषो भुवि ॥

जिसकी स्त्री पतिव्रता है, पति को प्राणतुल्य माननेवाली है तथा पति के प्रिय और हितकारी कार्य मे तत्पर है, वह पुरुष धन्य है।

७ सती सुरूपा सुभगा विनीता, प्रेमाभिरामा सरल-स्वभावा।
सदा सदाचारविचारदक्षा, संप्राप्यते पुण्यवशेन पत्नी ॥

जो सती हो, सुन्दर हो, नयनानन्दकारिणी हो, विनीत हो पति मे प्रेम करनेवाली, सरलस्वभाववाली और अच्छे आचार-विचार मे निपुण हो—ऐसी पत्नी पुण्य के उदय से ही प्राप्त होती है।



पति की पूजा करने से स्त्री स्वर्ग को प्राप्त होती है

७. शशि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदो सूनो
कुल सूनो बिन पूत, पत्र बिन तरुवर सूनो।
गज सूनो बिन दन्त, सलिल बिन सागर सूनो।
द्विज सूनो बिन वेद, वास बिन पुहप जु सूनो ॥
हरिनाम भजन बिन सत, अरु घटा शून्य बिन दा।
'वेताल' कहे विक्रम सुनो, पति बिन सूनी का
—वेता

८. अबला जीवन ! हाय ! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध भरा, आँखों में पानी ॥
—मैथिलीशरण गु

९ सती-प्रथा

१. चितौ परिष्वज्य विचेतन पति,
प्रिया हि या मुञ्चति देहमात्मन. ।
कृत्वापि पाप शतसख्यमप्यसौ,
पति गृहीत्वा सुरलोकमाप्नुयात् ॥

—हितोपदेश ३।३०

सतीप्रथा के समर्थको का कहना है कि जो स्त्री अपने मरे हुए भर्ता को गोद मे लेकर अपने शरीर को छोडती (सती हो जाती) है, वह सौ पाप करके भी पति सहित स्वर्गलोक मे जाती है ।

२. वादशाह जहाँगीर ने आदेश दिया था कि जिस विधवा के पुत्र अथवा कन्या हो, वह मृतपति के साथ जलकर सती नही हो सकती ।

३. लार्ड विलियम वैंटिक के शासनकाल मे सन् १८२९ के समय राजा राममोहनराय के प्रयास से सती - प्रथा कानूनन वन्द कर दी गई ।

—टॉड, राजस्थान पृष्ठ ३३२



निर्गच्छ त्वरित गृहाद्-बहिरतो नेद त्वदीय गृहं,
हा ! हा ! नाथ ! ममाद्य देहि मरण जारस्य भाग्योदयः ।
—सुभाषित-रत्नभाण्डागार

पति—पापिनि ! रसोई क्यो नही बनाती ?

स्त्री—पापी तेरा बाप है ।

पति—रण्डे ! मेरे सामने बोलती है ?

स्त्री—मैं नही, तेरी माँ और बहन रण्डाएँ हैं ।

पति—निकल घर से बाहर !

स्त्री—तेरा घर है ही कहाँ ? जो तू मुझे घर से निकाले । ऐसी बातें सुनकर पति कहता है—हे नाथ ! मुझे मरण दे दे—यहाँ तो जार के ही भाग्य का उदय है ।

८. वाचाला कलहप्रिया कुटिलधी क्रोधान्विता निर्दया,
मूर्खा मर्मविभाषिणी च कृपणा मायायुता लोभिनी ।
भर्तृक्रोधकरा कलङ्ककलिता स्वात्मभरी सर्वदा,
दूरूपा गुरुदेव - भक्तिविकला भार्या भवेत् पापत ॥
—सुभाषित-रत्नभाण्डागार

वाचाल, कलहप्रेमी, वक्रबुद्धिवाली, क्रोध करनेवाली, निर्दय, मूर्ख, मर्म की बात कहनेवाली, कृपण, कपट करनेवाली, लोभ-युक्त, पति को कुपित करनेवाली, कलङ्कित, सदा पेट भरने में तत्पर, कुरूप, गुरुभक्ति शून्य—ऐसी कुभार्या पाप के उदय से मिलती है ।



दे अवरा शिर दोष, रोष अवरा सू राखै,
अवरा सूं अभिलाख, भाख मुख अवरां भाखै।
ऋतु केल-मेल अवरा करै, ध्यान अवर मन धारिणी।
चित मांह दीप समझो, चतुर! चरित एह व्यभिचारिणी ॥२॥

जाति जुडं जिहा जाय, जाय जिहाँ रात जगावै,
वसै सकल के बीच, गीत निरलज्जा गावै।
सरवर करण सिनान, जाय कारण दूरे जल,
घणो मांहि रहै गहर, छयल देखी खेलै छल।
व्यापार करै बाजार बिच, वचने सरम विसारिणी,
चित्त माह दीप समझो, चतुर! चरित एह व्यभिचारिणी ॥३॥

४. दुर्दिवसे घनतिमिरे, दु सचारासु नगरवीथीसु।
पत्युर्विदेशगमने, परमसुख जघनचपलाया ॥
—पचतन्त्र १।१८४

मेघ से आच्छादित दिन मे, शहर की गुप्त गलियो मे तथा पति का विदेश गमन होने पर कुलटा स्त्री को परम सुख होता है।

५. भर्ता यद्यपि नीतिशास्त्रनिपुणो विद्वान् कुलीनो युवा,
दाता कर्णसमः प्रसिद्धविभव. शृगारदीक्षागुरु।
स्वप्राणाधिककल्पिता स्ववनिता स्नेहेन संलालिता,
तं कान्तं प्रविहाय सैव युवतिर्जारं पतिं वाञ्छति।
—सुभाषितरत्नभाण्डागार

पति नीतिशास्त्रज्ञ है, विद्वान् है, कुलवान और जवान है। कर्ण राजा के समान दाता है। धनवान है और शृंगार की दीक्षा मे गुरुतुल्य है तथा जिसने अपनी स्त्री को प्राणो से भी अधिक

१२ स्त्री-स्वभाव

१ स्त्रीचित्तमहो विचित्रमिति !

स्त्रियो का चित्त विचित्र होता है ।

२ स्त्रियाँ महान आघातो को तो क्षमा कर देती है, किन्तु तुच्छ चोटो को नही भूलती । —हालीवर्टन

३ पुरुष अक्सर एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते है । स्त्रियाँ दोनो कानो से सुनती है और फिर मुँह से निकालती है ।

४ नहि नार्यो विना ईर्ष्यया ।

स्त्रियाँ प्राय ईर्ष्या विना होती ही नही ।

५ जातापत्या पति द्वेष्टि ।

सन्तान होने के बाद स्त्री पति से द्वेष करने लग जाती है ।

६ मृग मकोडो हरियर-काठी,
इतने त्रियन की गति माठी ।
कै तो अपनो जान्यो करिहै,
नहि तो प्राणघात करि मरिहै ॥

७ भग्नभाण्डे यथा नीरं, क्षीरं श्वानोदरे यथा ।
गुह्यवार्ता तथा स्त्रीणां, चिरकाले न तिष्ठति ॥

१३ स्त्री के दोष

१ अनृतं, साहसं, माया, मूर्खत्वमतिलोभता।
अशौचत्वं निर्दयत्वं, स्त्रीणा दोषा स्वभावजाः ॥

—चाणक्यनीति २।१

असत्य, दु साहस, छल, मूर्खता, अतिलोभ, अपवित्रता और निर्दयता—ये दोष स्त्रियो मे स्वभाव से ही होते हैं।

२. कुलीना रूपवत्यश्च, नाथवत्यश्च योषित ।
मर्यादासु न तिष्ठन्ति, स दोष स्त्रीपु नारद ।

कुलवती, रूपवती और पतिमती होकर भी यदि स्त्रिया मर्यादा म न रहे तो—यह उनमें वडा भारी दोष है।

३. चचल चपला चोफला, वहुभोजना सरोप ।
तुरियां एता पांच गुण, तिरिया एता दोप ॥

४ राजा चञ्चल होय, चूप कर शहर वसावे ।
पंडित चञ्चल होय, सभा विच ज्ञान सुणावे ।

५ हाथी चञ्चल होय, सूड सू चमर ढुलावे ।
घोडो चञ्चल होय, फेर मैदान दिखावे ।

१४ स्त्री के लिए निकृष्ट उपमाएं

१ दाराः परभवकारा। —सूक्त-मुक्तावली

स्त्रियां परभव में विविध दुःखरूप कैद को देने वाली हैं।

२. पंकभूयाओ इत्थिओ। —उत्तराध्ययन २।१७

स्त्रिया कीचड के समान हैं।

३. स्त्रियो हि मूलं निधनस्य पुसः, स्त्रियो हि मूल व्यसनस्य पुस ।
स्त्रियो हि मूलं नरकस्य पुसः, स्त्रियो हि मूलं कलहस्य पुस ॥

पुरुषों के लिए मृत्यु का, दुःख का, नरक का और आपसी झगडे का मूल कारण स्त्रिया ही होती हैं।

४ अवरेष्वमृतं नितम्बिनीना, हृदि हालाहलमेव केवलम्।

स्त्रियो के केवल होठो मे अमृत है, हृदय में तो हलाहल (जहर) भरा है।

५ द्वार किमेकं नरकस्य ? नारी। —शंकरप्रश्नोत्तरी ३

नरक का एक ही द्वार कौन-सा है ? स्त्री।

६. नागिनी विच्छु जहर भख, मरे नही मर जाय।
दुख नही उपजे, मुवां नरक नहि जाय।
नरक नहि जाय, तुपक फिर तीर कटारी।
नी इन तें अधिक, लगत गति अजब छटारी।

जैसे-वैतरणी नदी को तैरना मुश्किल है। ऐसे ही संसार में स्त्री-रूप नदी भी दुस्तर मानी गई है।

११. ससार ! तव निस्तार-पदवी न दवीयसी।
अन्तरा दुस्तरा नस्यु-र्यदि रे ! मदिरेक्षणा ॥

—भर्तृहरि-श्रृंगारशतक ६८

रे संसार ! तुझे तरण का मार्ग दूर नहीं। यदि दुस्तर-स्त्रिया बीच में न हो।

१२. प्रमदा मदिरा इन्दिरा, त्रिविधा सुरा-समान।
देखत पीवत सग्रहत, करत प्रमत्त ,जहान ॥

१३. दर्शनाद्धरते चित्त, स्पर्शनाद् ग्रसते बलम्।
संगमाद् ग्रसते वीर्य, नारी प्रत्यक्षराक्षसी ॥

स्त्री दर्शन से मन को खींचती है, स्पर्श से बल को और संगम से वीर्य को खींचती है, अत यह प्रत्यक्ष राक्षसी है।

१४. नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गडवच्छासु णेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लति जहा व दासेहिं ॥

—उत्तराध्ययन ८।१८

जिनकी छाती में दो मांस की गांठें हैं, जिनका चित्त अनेक पुरुषों में आसक्त है तथा जो पुरुषों को प्रलोभित करके फिर उनके साथ गुलामों की तरह खेलती हैं—ऐसी राक्षसी स्त्रियों में गृद्ध होना चाहिए।

ए इत्थी विसलित्त व कंटगं नच्चा।

—सूत्रकृतांग ४।१।११

१५ स्त्री की निरंकुशता

१. किं किं करोति नहि निर्गलता गता स्त्री ?

स्वच्छन्दता प्राप्त होने पर स्त्री क्या-क्या अनर्थ नही कर डालती ?

२. स्त्री पुवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम् ।

—भोजप्रबन्ध ३०४

जिस घर में स्त्री पुरुष के समान प्रभाव दिखाने लगे तो उस घर को नष्ट हुआ समझो ।

३ महादेव सो मर्द, नार किण भात नचायो ।
गोप्या मिल गोविंद, रासमिस जेम रमायो ॥
नाथी मालण निसक, धारा नो नाथ घुजायो ।
सोनारी श्वसुर नै, देवछल साच दिखायो ॥
सुर-इन्द-चन्द नागेंद मत्र, तीन लोक जीता त्रिया ।
कामणी एम दीपो कहै, कवि, पंडित खडित किया ॥

—दीप कवि

४. चतुरः सृजता पूर्व-मुपायास्तेन वेधसा ।
न सृष्ट पञ्चमः कोपि, गृह्यन्ते येन योषितः ॥

—पंचतन्त्र, पृष्ठ ६१

विधाता ने जगत का निग्रह करने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद—ये चार उपाय बनाये, किन्तु जिससे स्त्रियां पकड़ी जायें—वह पांचवां उपाय नही बनाया ।

१६ स्त्रियों की सबलता

१. नूनं हि ते कविवरा विपरीत बोधा,
ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम्।
याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातै ,
शक्रादयोपि विजितास्त्वबला: कथ ताः ?

—भर्तृहरि-शृंगारशतक १०

निश्चय ही वे कविलोग विपरीत ज्ञानवाले है, जो स्त्रियों को अबला कहते हैं। जिन्होंने अपने चंचल दृष्टिपात से इन्द्रादि देवों को भी जीत लिया, वे स्त्रिया अबला कैसे हो सकती हैं ?

२. संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति,
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति॥
एताः प्रविश्य सदयं हृदय नराणा,
किं नाम वामनयना न समाचरन्ति ?

—भर्तृहरि-शृंगारशतक २१

कोमलहृदय से मोहित करती हैं, उन्मत्त करती हैं, विडम्बित तथा अपमानित करती हैं। उसके साथ खेलती हैं एवं उसे खिन्न करती हैं। ये स्त्रियां पुरुषों के हृदय मे घुसकर क्या कर्म नहीं करती ?

३. हूं छू देवी चंडिका, माथे मोटी हंटिका।
के तो करूं आशा केव्याम, के काल्यो पींज्यो करूं कपास॥

१ सुस्त्री-प्रशंसा

१ सर्वसहत्व माधुर्य-मार्जव सुस्त्रिया गुणा ।

—धर्मकल्पद्रुम

सहिष्णुता, मधुरता और सरलता ये सुस्त्रियों के गुण है।

२ ण भूसणं भूसयते सरीरं, विभूसणं सील हिरी य इत्थिए !

—बृहत्कल्पभाष्य ४।१८

नारी का आभूषण शील और लज्जा है। बाह्य आभूषण उसकी शोभा नही बढा सकते।

३ रूप-यौवन-माधुर्यं, स्त्रीणां बलमनुत्तमम् !

—चाणक्यनीति ७/१०

सुन्दरता, यौवन और वचन की मधुरता—ये स्त्रियों के उत्कृष्ट बल है।

४ पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीव-मात्र के लिए करुणा सजोनेवाली महाप्रकृति का नाम नारी है।

—रमणमहर्षि

५ संपूर्ण महान वस्तुओं के मूल में नारी का वास होता है।

—लामार टाइन

६. सृजन-आदि मे विश्व नारी की गोद में क्रीडा करता आया

चारिणियो का और वृद्धावस्था में नर्सों का काम देती हैं।

—बेकन

१५. अगर स्त्रिया न हो तो पुरुषो की बाल्य-अवस्था असहाय एवं जवानी आनन्दविहीन हो जाय तथा बुढापे में कोई आश्वासन देनेवाला न हो। —जॉय (पाश्चात्य विद्वान्)

१६. ससार मे एक नारी को जो कुछ करना है, वह पुत्री, बहन, पत्नी के पावन-कर्तव्यो के अन्तर्गत हो जाता है। —स्टील



३. जो अपने घर आता है वह मेहमान होता है, अत स्त्री भी मेहमान है। —प्रेमचन्द

४ स्थितोऽसि योषिता गर्भे, ताभिरेवविवर्द्धित ।
अहो ! कृतघ्नता मूर्ख ! कथ ता एव निन्दसि ॥

स्त्रियो ने तुझे गर्भ मे रखा और उन्होंने ही पाल-पोष कर बडा किया। अरे मूर्ख ! तेरी कितनी कृतघ्नता है, जो तू उन स्त्रियो की निन्दा करता है।

५. राधा-कृष्ण स भगवान्, न कृष्णो भगवान् स्वयम् ।

राधायुक्त कृष्ण ही भगवान् हैं, अकेले कृष्ण नही। (इस पौराणिक-कथन मे राधारूप स्त्री का महत्व दिखाया गया है।)

६ व्याकरणकारो ने भी पूज्य मानकर स्त्रियों को प्रथम स्थान दिया है। जैसे—सीता-राम, राधा-कृष्ण, गौरी-शकर, माता-पिता आदि-आदि। —धनमुनि



४. तीतर-वरणी बादली, विधवा काली-रेख।
वा बरसै वा घर करै, इसमे मीन न मेख॥

—राजस्थानी दोहा

५ भ्रमन् संपूज्यते राजा, भ्रमन् सपूज्यते द्विजः।
भ्रमन् सपूज्यते योगी, स्त्री भ्रमन्ती विनश्यति॥

—चाणक्यनीति ६/४

राजा, ब्राह्मण और योगी ये देश-विदेश मे भ्रमण करते हुए पूजा-सत्कार को प्राप्त होते हैं, किन्तु भ्रमण करती हुई स्त्री का नाश होता है।

६. नारीणा पितुरावासे, नृणा च श्वसुरालये।
एक स्थाने यतीनाचा-ऽऽवासो न श्रेयसे भवेत्॥

स्त्रियो का पिता के घर, पुरुषो का ससुराल मे और मुनियो का एक ही स्थान मे रहना अच्छा नही होता।

स्त्रियों के सोलह-शृंगारः—

करि अजंन मंजन चन्दन चीर,
बिहूं कर कङ्कण कुण्डल जोरी।
फूल की माल झलक्कत भाल,
तिलक्क तबोल अलक्करी भोरी।
धमके घुघरी चमके डुलरी,
नकबेसर नेउर कुञ्ज की डोरी।
नट मान' कहै निज राग सुनो,
यह सोलह शृंगार बनावत गोरी॥



२२ वेश्या-निन्दा

१ वेश्याऽसौमदनज्वाला, कामेन्धनसमेधिता।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते, यौवनानि धनानि च॥

—भर्तृहरि-शृंगारशतक-९०

यह वेश्या सुन्दरता रूप ईंधन से जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है। कामी पुरुष इसमें अपने यौवन एवं धन की आहुति दे रहे हैं।

२ वित्तेन वेत्ति वेश्या, स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्।
वित्तं विनापि वेत्ति, स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्॥

धनी पुरुष चाहे जरा-वृद्धावस्था मे जीर्ण हो और कुष्ठी हो तो भी वेश्या उसे कामदेव के तुल्य मानती है और निर्धन पुरुष चाहे कामदेव के तुल्य सुन्दर हो, फिर भी वेश्या उसे जरा-जीर्ण एवं कुष्ठी-तुल्य मानती है।

३ धन-कारन पापिनि प्रीत करे, नही तोरत नेह जरा तिनको।
लव चाखत नीचन के मुख की, शुचिता सब जाय छिये जिनको।
मद-मांस बजारन खाय सदा, अधले विसनी न करें घिनको।
गनिका संग जे सठ लीन भए, धिक है-धिक है-धिक है-तिनको॥

—सुन्दरदास

४ वेश्या श्मशान-सुमना इव वर्जनीया।

श्मशान-घाट के फूलों की तरह वेश्या सर्वथा छोड़ने लायक है।

उन किन्हो ऋतुमान सबे रस लूट लीन्हो,
भीनो सुख पाय निशा बीती वो हुलास मे ।
भयो जब भोर दृग मोर मुसकाय बोले,
चले अब नाथ ! फिर मिलेंगे कहा समे ?
जोपै विद्या-स्मृति,वेद,पुराण सब सच्चे है तो,
तुम्हारी हमारी भेट कुभीपाक-वास मे ॥ १ ॥

वृन्दा ऋषिवृन्द सबे सेवत है वृन्द सखी,
रभादि नारद को विहार जो आकाश मे ।
विश्वामित्र कीन्हो कछु हेत काहु बश्यन ते,
शृ गी-ऋषि चित्रता-विचित्रता प्रकाश मे ।
मद काम लागो रग कामकुडला के संग,
विक्रम ही भोज के सयोग कालिदास मे ।
ऐसी ही अनूठी झूठी बात न बनात हो तो,
इतने मे कौन गयो कु भीपाकवास मे ? ॥ २ ॥

—भाषाश्लोकसागर

११ वेश्यावृत्ति वासना से उत्पन्न होने वाला दुर्गुण नही अपितु निर्धनता एव लोभ से उत्पन्न दुर्व्यसन है ।

—रैनेय बालनर



विल्ली लेकर उससे क्रीडा करता है। इन क्लबो को उच्च अधिकारियो का सरक्षण प्राप्त है। कीलर-काण्ड के बाद यह बात स्पष्ट हो गई है कि बडे-बडे मन्त्री भी इन क्लबो के सदस्य हैं।

—नवभारतटाइम्स २५ जून १९६७



२५ आवश्यकता

१ देयर इज नो वरच्यु लाइक नेसेसिटी । —शेक्सपीयर

आवश्यकता के सदृश कोई गुण नही ।

२ नेसेसिटी इज दी मदर ऑफ इन्वेन्सन । —अंग्रेजी कहावत

आवश्यकता आविष्कार की जननी है ।

३ आवश्यकता क्या नही, करवा सकती काम ।
पैरों से करते कई, करके काम तमाम ॥

—दोहा-सन्दोह

• लुधियाना निवासी नीकामल जैन पैरों द्वारा स्नान, हजामत एवं भोजन तो करता ही है, किन्तु कैंची से काटकर कागज के चूहे, साँप, मोर आदि भी बनाता है। लेखक ने आँखों से देखा है।

४ आवश्यकता कायर को भी वीर बना देती है। —सेल हास्ट

५ आवश्यकता बहुधा प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है।

—बालजक

६. आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है और विलासिता ललित कलाओं की। —शापेन हावर

७ आवश्यकता ही संसार के व्यवहारों की दलाल है।

—जयशंकर प्रसाद

१ अध्यात्मविदो मूर्च्छा परिग्रह वर्णयन्ति। —प्रशमरति०

अध्यात्मवेत्ता लोग निश्चय नय से मूर्च्छा को ही परिग्रह कहते हैं।

२ मुच्छा परिग्गहो वुत्तो। —दशवैकालिक ६।२१

मूर्च्छा—आसक्ति ही परिग्रह है।

३. मूर्च्छा परिग्रहः। —तत्त्वार्थसूत्र ७।१२

मूर्च्छा ही परिग्रह है।

४. परिग्रह का अर्थ है—भविष्य के लिए प्रबन्ध करना। सत्यान्वेषी, प्रेम-धर्म का अनुयायी कल के लिए किसी भी चीज का संग्रह नहीं कर सकता। —गांधी

५ महिच्छा, पडिबन्धो, लोहप्पा... भारो ... कलिकरण्डो ... अणत्थो. अगुत्ती. असुत्ती .तण्हा, आसत्ती, असंतोषो।
—प्रश्नव्याकरण ५

परिग्रह के अनेक नाम कहे गये हैं—जैसे महेच्छा, प्रतिबन्ध, लोभात्मा, भार, कलिकरंड, अनर्थ, अगुप्ति, तृष्णा, आसक्ति, असंतोष।

६ आरम्भपूर्वक परिग्रह। —सूत्रकृतांगचूर्णि १।२।२

परिग्रह (धनसंग्रह) बिना हिंसा के नहीं होता।

१४ अणाइय अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-ससारकंतार अणपरियट्ट ति। जीवा लोहवस-सनिविट्ठा, एसो सो परिग्गहस्स फलविवागो।

—प्रश्नव्याकरण-५

लोभवश परिग्रह-संचय मे आसक्त जीव इस अनादि-अनन्त चतुर्गति रूप संसार-जंगल मे बहुत लम्बे समय तक परिभ्रमण करते हैं, यह परिग्रह का फल-विपाक है।

१५ चित्तमंतमचित्त वा, परिगिज्भ किसामवि।
अन्नं वा अणुजाणई, एव दुक्खाण मुच्चई॥

—सूत्रकृताग १।१।२

जो व्यक्ति सजीव या निर्जीव, थोडी या अधिक वस्तु को परिग्रह की बुद्धि से रखता है, अथवा दूसरे को रखने की अनुज्ञा देता है, वह दुःख से छुटकारा नही पाता।

१६ थावर जंगम चेव, धण धन्नं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नाल दुक्खाओ मोयणे॥

—उत्तराध्ययन ६।६

धन, धान्य एव घर का सामान रूप स्थावर तथा दास-दासी, पुत्र-पौत्रादि रूप जगम—यह दोनो ही प्रकार का परिग्रह कर्मों से दुःख पाते हुए जीवो को दुःखो से मुक्त करने मे समर्थ नहीं है।



(३) अरति, (४) भय, (५) शोक, (६) जुगुप्सा, (७) क्रोध, (८) मान, (९) माया, (१०) लोभ, (११) स्त्री-वेद, (१२) पुरुष-वेद, (१३) नपुंसक-वेद, (१४) मिथ्यात्व।

—बृहत्कल्प-भाष्य ८३१



(३) अरति, (४) भय, (५ ... ये सोनों की मान माया को
(८) मान, (९) माया, (१
पुरुष-वेद, (१३) नपुंसक-वेद, ।

है। आशा ही पुरानी मदिरा है। सब दोषों की खान आशा को धिक्कार है।

७ खलोल्लापा सोढा: कथमपि तदाराधनतया,
निगृह्यान्तर्बाष्पं हसितमपि शून्येन मनसा।
कृतश्चित्तस्तम्भः प्रतिहतधियामञ्जलिरपि,
त्वमाशे! मोघाशे! किमु परमितो नर्तयसि माम्॥
—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ६

खलों (दुष्ट) पुरुषों को खुश करने के लिए मैंने उनके उच्छृंखल वाक्य सहे, आंख के आंसुओं को भीतर ही रोककर खिन्नमन से उन खलों का हास्य भी सहा तथा चित्त को स्थिर करके उन हंसने वालों के सम्मुख हाथ भी जोड़े। हे आशा! अब इससे अधिक मुझे क्या नचाएगी?

८. अङ्ग गलित पलितं मुण्ड, दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्।।३।।
दिन-यामिन्यौ, सायं-प्रातः, शिशिर-वसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः।।४।।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः, रात्रौ चिबुक समर्पित जानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः।।८।।
—शंकराचार्य-चर्पटपंजरिका

शरीर गल गया, सिर सफेद हो गया, मुंह में दांत बिल्कुल न रहे, बूढ़ा लाठी के सहारे चलता है, फिर भी आशाओं के समूह को नहीं छोड़ता।

दिन-रात, सायं-सुबह और शिशिर-वसन्त आदि ऋतुएं आ-जाकर जा रही हैं, काल क्रीड़ा कर रहा है और आयु घटती जा रही है,

है। आशा ही पुरानी मदिरा है। सब दोषों की खान आशा को धिक्कार है।

७. खलोल्लापाः सोढाः कथमपि तदाराधनतया,
निगृह्यान्तर्बाष्पं हसितमपि शून्येन मनसा।
कृतश्चित्तस्तम्भः प्रतिहतधियामञ्जलिरपि,
त्वमाशे! मोघाशे! किमु परमितो नर्तयसि माम्॥
—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ६

खलों (दुष्ट) पुरुषों को खुश करने के लिए मैंने उनके उच्छृंखल वाक्य सहे, आंख के आंसुओं को भीतर ही रोककर खिन्नमन से उन खलों का हास्य भी सहा तथा चित्त को स्थिर करके उन हंसने वालों के सम्मुख हाथ भी जोड़े। हे आशा! अब इससे अधिक मुझे क्या नचाएगी?

८. अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं, दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्॥३॥
दिन-यामिन्यौ, सायं-प्रातः, शिशिर-वसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः॥४॥
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः, रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः॥८॥
—शंकराचार्य-चर्पटपंजरिका

शरीर गल गया, सिर सफेद हो गया, मुंह में दांत बिल्कुल न रहे, वृद्ध लाठी के सहारे चलता है, फिर भी आशाओं के समूह को नहीं छोड़ता।

दिन-रात, सायं-प्रातः और शिशिर-वसन्त आदि ऋतुएं आ-जा रही हैं, काल क्रीड़ा कर रहा है और आयु घटती जा रही है,

१२. आशा नामनदी मनोरथजला तृष्णातरङ्गाकुला,
रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी ।
मोहावर्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुङ्गचिन्तातटी,
तस्या: पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वरा: ।
—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ४४

आशा नाम की एक नदी है, उसमें मनोरथरूप जल है, तृष्णारूप तरंगे है, रागरूपी मगर है, वितर्करूपी पक्षी हैं, वह नदी धैर्यरूपी वृक्ष का नाश करनेवाली है, अति गम्भीर है, उसमें मोहरूपी भंवर है, उसके चिन्तारूपी ऊंचे तट हैं अत: उसे पार करना अति कठिन है। पवित्र हृदयवाले योगिराज ही उस नदी के पार पहुंचे हैं एवं आनन्द कर रहे हैं।

१३. तौ लगि जोगी जगत गुरु, जौ लगि रहत निराश ।
जब आशा मन में जगी, जग गुरु जोगी दास ॥
—रामचरितमानस

१४. धनाशा जीविताशा च, जीर्यतोऽपि न जीर्यति ।
—हितोपदेश १।११२

मनुष्य के जीर्ण हो जाने पर भी धन की और जीवन की आशा जीर्ण नहीं होती।

१५. द्वे मा, भिक्खवे, आसा दुप्पजहा ।
लाभासा च जीवितासा च ।   —अंगुत्तरनिकाय-२।११।१

भिक्षुओ ! दो आशाएं (इच्छाएं) बड़ी कठिनता से छूटती है—
लाभ की आशा और जीवन की आशा ।

१६. जौलौं तूने कानों आसार आस,
तौलौं मर्दा नागिनुमार नर्वीनाश ।

२५ आशा और आनन्द का रुझान सच्ची दौलत है, भय और रंज का सच्ची गरीबी।
—ह्यूम

२६. नरक के बीज बोकर स्वर्ग की आशा रखने से बढ़कर मूर्खता क्या होगी ?
—हयहया



से रहने लगा। फिर इन्द्रादिक ने एक पेटी भेजी। उसमें रोग-शोक-संतापादि भरे हुए थे तथा "हमारे बनाए मनुष्य न मर जायें" इसलिए एक आशा भी रख दी। Dont open the box डोंट ओपन दी बॉक्स" ऐसे उस पेटी पर लिखा हुआ था। कुछ समय के बाद 'पॅडोरा' ने पेटी खोली तो रोग-शोक आदि फैलने लगे। तब उसने पुनः बन्द करदी अतः आशा अन्दर ही रह गई। उसी के बल से दुनियां जीती है।

८. आशा सर्वोत्तमा ज्योतिर्-निराशा परमं तमः।

—रश्मिमाला १।२

आशा सर्वोत्कृष्ट प्रकाश है और निराशा घोर अन्धकार है।

९. दिल शीशा है, इसे निराशा की ठेस लगी और फूटा। दिल फूल है, इसे नाउम्मीद की हवा लगी और मुरझाया।

—म० भगवानदीन

१०. निराशा का गहरा धक्का मस्तिष्क को वैसा शून्य बना देता है, जैसा कि लकवा शरीर को। —ग्रेविल

११. आशावादी हर कठिनाई में अवसर देखता है और निराशावादी हर अवसर में कठिनाई देखता है।



१० इच्छा हु आगाससमा अणंतया । —उत्तराध्ययन ६।४८

इच्छा आकाश के समान अनन्त है ।

११ न वै कामानामतिरिक्तमस्ति । —शतपथब्राह्मण ८।७।२।१६

कामनाओं-इच्छाओं का अन्त नहीं है ।

12 There is enough for everyone's need, But not everyone's greed

दीयर इज इनफ फोर एव्रीवन्ज नीड, बट नाट एव्रीवन्ज ग्रीड । —एक विचारक

संसार में हर एक मनुष्य की आवश्यकता भरने को पर्याप्त से अधिक पदार्थ है, किन्तु एक भी व्यक्ति की इच्छा भरने को वह अपर्याप्त है ।

१३ इच्छा कभी तृप्त नहीं होती, किन्तु अगर कोई मनुष्य उसको त्याग दे तो वह उसी दम सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेता है ।

—तिरुवल्लुवर

१४. इच्छापूर्ति की कोशिश क्षितिज प्राप्त करने का प्रयत्न है, जिसमें आज तक कोई सफल नहीं हुआ ।

१५. आधी अरु रूखी भली, पूरी सो संताप ।
जो चाहेगा चोपड़ी, बहुत करेगा पाप ॥

—कबीर

16 (Happy is he, whose wants are few)

हैपी इज ही, हूज वान्ट्स आर फ्यू ।

—अंग्रेजी कहावत

सुखी वही है जिसकी इच्छायें कम हैं ।

३१ विविध इच्छाएं

१ इच्छा बहुविहा लोए, जाए बद्धो किलिस्सति ।
तम्हा इच्छामणिच्छाए, जिणित्ता सुहमेधति ॥

—ऋषिभाषित ४०।१

संसार में इच्छाएँ अनेक प्रकार की हैं, जिनसे बंधकर जीव दुःखी होता है। अतः इच्छा को अनिच्छा से जीतकर साधक सुख पाता है।

२ प्रथममशनपानप्राप्तिवाञ्छाविहस्ता,
स्तदनु वसनवेश्माऽलङ्कृतिव्यग्रचित्ता ।
परिणयनमपत्यावाप्तिमिष्टेन्द्रियार्थान्,
सततमभिलषन्त स्वस्थता क्वाप्नुवीरन् ।

—शान्तसुधारस-कारुण्यभावना

रोटी, पानी, कपड़ा, घर, आभूषण, स्त्री, सन्तान एवं इन्द्रियों के इष्ट शब्दादि विषयों की अभिलाषा से व्याकुल बने हुए संसारी जीव स्वस्थता का स्वाद कैसे ले सकते हैं?

३ अधना धनमिच्छन्ति, वाचं चैव चतुष्पदः ।
मानवा स्वर्गमिच्छन्ति, मोक्षमिच्छन्ति देवता. ॥

—चाणक्यनीति ८।१८

निर्धन मनुष्य धन की, चौपाए पशु वाणी की, मनुष्य स्वर्ग की और देवता मोक्ष की इच्छा करते हैं।

(६) काम की इच्छा करना—जैसे मुझे अच्छे शब्द-रूप सुनने-देखने को मिलें।

(७) भोग की इच्छा करना—जैसे मुझे अच्छे गंध-रस-स्पर्श की प्राप्ति हो।

(८) लाभ की इच्छा करना—जैसे मुझे धर्म के फलस्वरूप यश-कीर्ति आदि का लाभ हो।

(९) पूजा की इच्छा करना—जैसे संसार में मेरी पुष्पादि से पूजा हो।

(१०) सत्कार की इच्छा करना—जैसे संसार में वस्त्र-आभूषण आदि से मेरा खूब सत्कार हो।

७. महान् आत्माओं की इच्छा-शक्तियाँ होती हैं और दुर्बल आत्माओं की केवल इच्छाएँ। —चीनी कहावत

८. अपनी प्रचण्ड इच्छा-शक्ति से कोई कब क्या बन जायेगा, कह नहीं सकते। —पतंजलि

९. लोक को चाहने वाले क्रूर हैं, परलोक को चाहने वाले मजूर हैं और मालिक को चाहने वाले शूर हैं।

१०. जीवन के दो स्थल दुःखमय हैं—प्रथम तो इच्छाओं की पूर्ति न होना और द्वितीय इच्छाओं का पूर्ण होना। —बर्नार्ड शा



नि स्पृह (धनादि की लालसा-रहित) व्यक्ति परमुखापेक्षी नहीं होते।

६ तृणं ब्रह्मविद· स्वर्ग-स्तृण शूरस्य जीवितम्।
जिताक्षस्य तृण नारी, निस्पृहस्य तृणं जगत्॥

—चाणक्यनीति ५।१४

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण-समान है, शूर को जीवन तृणवत् है। जितेन्द्रिय को स्त्री तृण-तुल्य है और नि स्पृह को जगत तृण-समान है।

७ समिद्धि किं सारा ? विमुत्तिसारा।

—अंगुत्तरनिकाय, ६।२।४

समृद्धि का सार क्या है ? विमुक्ति (अनासक्ति) ही सार है।



नि स्पृह (धनादि की लालसा-रहित) व्यक्ति परमुखापेक्षी नहीं होते।

६ तृणं ब्रह्मविद स्वर्ग-स्तृण शूरस्य जीवितम्।
जिताक्षस्य तृण नारी, निस्पृहस्य तृणं जगत्॥

—चाणक्यनीति ५।१४

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण-समान है, शूर को जीवन तृणवत् है। जितेन्द्रिय को स्त्री तृण-तुल्य है और नि स्पृह को जगत तृण-समान है।

७ समिद्धि कि सारा ? विमुत्तिसारा।

—अगुत्तरनिकाय, ६।२।४

समृद्धि का सार क्या है ? विमुक्ति (अनासक्ति) ही सार है।



४. रूप को न खोज रह्यो तरु ज्यौं तुपार दह्यो,
भयो पतझार केधौं रही डार सूनी-सी।
कूबरी भइ है कटि दूबरी भई है देह,
ऊबरी इतेक आयु मेर माहि पूनीसी॥
जोवन ने विदा लीनी जरा नै जुहार कीनी,
हीन भई सुधि-बुधि सबै बात ऊनी-सी।
तेज घट्यौ ताव घट्यौ जीतब को चाव घट्यो,
और सब घट्यौ एक तिस्ना दिन दूनी-सी॥
—भूधरदास

५. तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा। —भर्तृहरि-वैराग्यशतक १२
हम बूढे हो गये लेकिन तृष्णा बूढी नही हुई।

६ निःस्वो वष्टि शतं शती दशशतं लक्षं सहस्राधिपो,
लक्षेशः क्षितिराजतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः सुरराजतां सुरपतिर्ब्रह्मास्पदं वाञ्छति,
ब्रह्मा विष्णुपदं हरिः शिवपदं तृष्णावधिं को गतः?
निर्धन सौ की, शतशीश हजार की, सहस्राधीश लखपति बनने की, लखपति राजा बनने की, राजा चक्रवर्तीपद की, चक्रवर्ती सुरेन्द्रपद की, सुरेन्द्र ब्रह्मा के पद की, ब्रह्मा विष्णु के पद की, और विष्णु महादेव के पद की इच्छा करता है—पर तृष्णा को किसने पाया है? अर्थात् किसी ने भी नहीं।

७. कुबेर के एक धनिक ने गोली मारकर आत्महत्या की। उसने [illegible] पत्र में लिखा था कि मेरे पास सिर्फ दो करोड़ पौण्ड बच रहा है—इसी की फिक्र में मैंने आत्म-हत्या की है। —[illegible], पृष्ठ-१७३

१५ शाह सिकन्दर ने फकीर से पृथ्वी का राज्य मांगा। उसने एक मनुष्य की खोपड़ी देकर कहा—इसे अनाज से भर देना, पूरी भरते ही तू सारी पृथ्वी का राजा बन जाएगा। चमत्कारी खोपड़ी में हजारों मन ज्वार डाली फिर भी न भरी। साधु ने तत्त्व समझाया कि इस खोपड़ी की तरह मनुष्य की तृष्णा कभी नहीं भर सकती!

१६. कश्मीर चुनाव में तीन उम्मीदवार खड़े हुए थे, उनकी आयु क्रमशः १६० - १२५ एवं १११ वर्ष की थी, देखिए, तृष्णा का खेल!

१७ ये तण्हं वड्ढेंति ते उपधिं वड्ढेंति।
ये उपधिं वड्ढेंति ते दुक्खं वड्ढेंति॥
—संयुत्तनिकाय-२।१।६६

जो तृष्णा को बढ़ाते हैं वे उपाधि को बढ़ाते हैं, जो उपाधि को बढ़ाते हैं, वे दुःख को बढ़ाते हैं।

१८. जो मनुष्य होकर दौलत और इज्जत के पीछे पड़ा हुआ है, वह तृषा-रोगी समुद्र से अपनी प्यास बुझाना चाहता है। वह जितना ज्यादा पीता है, उतना ही ज्यादा और पीना चाहता है, आखिर पीता-पीता मर जाता है।
—[illegible]

१९. यह जहरीली तृष्णा जिसे जकड़ लेती है, उसके शोक-दुःख बीरण-घास की तरह बढ़ते ही जाते हैं। —बुद्ध

२० अमेरिका के मानसशास्त्री 'विलियम जेम्स' कहते हैं कि मन यदि संतुष्ट हो तो भी उसमें विरोधी वृत्ति तृष्णा प्रकट हो

१५ शाह सिकन्दर ने फकीर से पृथ्वी का राज्य मांगा। उसने एक मनुष्य की खोपड़ी देकर कहा—इसे अनाज से भर देना, पूरी भरते ही तू सारी पृथ्वी का राजा बन जाएगा। चमत्कारी खोपड़ी में हजारों मन ज्वार डाली फिर भी न भरी। साधु ने तत्त्व समझाया कि इस खोपड़ी की तरह मनुष्य की तृष्णा कभी नहीं भर सकती!

१६. कश्मीर चुनाव में तीन उम्मीदवार खड़े हुए थे, उनकी आयु क्रमशः १६० - १२५ एवं १११ वर्ष की थी, देखिए तृष्णा का खेल!

१७ ये तण्हं वड्ढेंति ते उपधिं वड्ढेंति।
ये उपधिं वड्ढेंति ते दुक्खं वड्ढेंति॥

—सुत्तनिपात-३।१२।६६

जो तृष्णा को बढ़ाते हैं, वे उपाधि को बढ़ाते हैं, जो उपाधि को बढ़ाते हैं, वे दुःख को बढ़ाते हैं।

१८. जो मनुष्य होकर दौलत और इज्जत के पीछे पड़ा हुआ है, वह तृषा-रोगी समुद्र से अपनी प्यास बुझाना चाहता है। वह जितना ज्यादा पीता है, उतना ही ज्यादा और पीना चाहता है, आखिर पीता-पीता मर जाता है।

—अरबी कहावत

१९. यह जहरीली तृष्णा जिसे जकड़ लेती है, उसके शोक-दुःख बीरण-घास की तरह बढ़ते ही जाते हैं। —बुद्ध

२०. अमेरिका के मानसशास्त्री 'विलियम जेम्स' कहते हैं कि एक मुनि [illegible]

२५. स तु भवति दरिद्रो, यस्य तृष्णा विशाला।

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ५०

दरिद्र वही है, जिसकी तृष्णा विशाल है।

२६. तृष्णादेवि! नमस्तुभ्यं, धैर्यविप्लवकारिणी।
विष्णुस्त्रैलोक्यनाथोऽपि, यत् त्वया वामनीकृतः॥

—[illegible]

धैर्य का नाश करनेवाली हे तृष्णादेवि! तुझे नमस्कार है, क्योंकि त्रिलोकीनाथ विष्णु को भी तूने वामन बना दिया।

२७. तृष्णादेवि! नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः।
पश्याम्यहं जगत्सर्वं, न मां पश्यति कश्चन॥

हे तृष्णादेवि तुझे नमस्कार है। तेरी कृपा से मैं तो सिद्ध बन गया, क्योंकि मैं सारे जगत को देखता हूँ, मुझे कोई नहीं देखता।

२८. उत्खातं निधिशङ्कया क्षितितलं ध्माता गिरेर्धातवो,
निस्तीर्णः सरितां पतिर्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिताः।
मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः,
प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम्॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ४

निधान मिलने की आशा से मैंने पृथ्वीतल खोदा, रसायनसिद्धि के लिए पर्वतों की धातुएँ फूँकी, समुद्र के पार गया, यत्नपूर्वक राजाओं की सेवा की तथा मन्त्रों की आराधना में लीन होकर श्मशानों में रातें बिताईं, परन्तु एक कौड़ी भी प्राप्त न हुई। हे तृष्णे! अब तो मेरा पिण्ड छोड़!

२९. तृष्णान्धमपि तृष्णान्धा, किन्तु स्थानेषु चाग्रिमे,
ज्ञानिविज्ञजनस्थेषु, जरामरणगेषु न।

—[illegible]

३३ तृष्णा-विजय

१. णिरायणण्हो विहरे। —दशवैकालिक ८।६०

मुमुक्षु को तृष्णा-रहित होकर विचरना चाहिए।

२. मेहावी अप्पणो गिद्धिमुद्धरे। —सूत्रकृतांग ८।१३

मेधावी पुरुष को अपना गृद्धिभाव दूर करना चाहिए।

३. से हु चक्खू मणुस्साणं, जे कंखाए य अंतए। —सूत्रकृतांग १५।१४

वही व्यक्ति मनुष्यों के लिए चक्षु के समान मार्गदर्शक है, जो भोग की तृष्णा का अन्त करनेवाला है।

४. तृष्णा को उखाड़ फेंकनेवाले का पुनर्जन्म नहीं होता। —बुद्ध

५. जिसने तृष्णा जीत ली उसने अक्षय-स्वर्ग जीत लिया। —महाभारत

६. तृष्णा येन परित्यक्ता, को दरिद्रः क ईश्वरः? —भागवत

तृष्णा का त्याग करदेने पर दरिद्र कौन और ईश्वर कौन?

७. मुनि सोंचे तृष्णा तजी, मोह न मटिया नेह।
पग के मणी बाय के, संगत निरागी देह॥

८. जिसकी तृष्णा मरी नहीं, उसे अपने कर्तव्य-धर्म का ध्यान नहीं रहता। तृष्णा के त्याग का अर्थ है—कर्तव्य का ज्ञान। —गांधी

३४ आसक्ति

१. सङ्ग एव मतः सूत्रे, निःशेषानर्थमन्दिरम्। —शुभचन्द्राचार्य

धर्मशास्त्रो मे सङ्ग-(आसक्ति) को ही समस्त अनर्थों का घर माना है।

२. कृपयापिकृतः सङ्गः, पतनायैव योगिनाम्।
इतिसंदर्शयन्नाह, भरतस्यैणपोषणम्॥

—महाभारत शांतिपर्व २१५।४ टीका

दयावश की हुई आसक्ति भी योगियों का पतन कर देती है। जड-भरत का मृगपोषण इसी बात को सिद्ध करता है।

३. पुत्र-दारा-कुटुम्बेषु, सक्ता सीदन्ति जन्तवः।
सरःपङ्कार्णवे मग्ना, जीर्णा वनगजा इव॥

—पद्मपुराण

तालाब के कीचड मे फंसे हुए वनगजो की तरह पुत्र-स्त्री-कुटुम्ब मे आसक्त प्राणी दुःखित हो रहे हैं।

४. कुरर पक्षी मांस का टुकडा लेकर उडा, कौवे आदि पीछे लगे, हारकर उसे छोडा एवं वृक्ष पर शांति मे जा बैठा। दत्तात्रेयजी ने उसे गुरु मानते हुए कहा—जहां तक आसक्ति-रूप मांस का टुकड़ा नहीं छूटेगा, वहाँ तक क्रोध आदि काग पीछा नहीं छोड़ेगे। —भागवत ११।६।१

३५ ममता

१. किं दुःखमूलं? ममताभिधानः। —शंकर-प्रश्नोत्तरी

दुःख का मूल क्या है? —जिसे ममता कहते है, वही।

२. ममत्तबंधं च महब्भयावहं। —उत्तराध्ययन १९।९८

ममत्व का बन्धन महाभय करनेवाला है।

३ ममाइ लुप्पइ बाले, अन्नमन्नेहिं मुच्छिए।

—सूत्रकृतांग-१।१।४

धन-धान्यादि वस्तुओं में मूर्छित अज्ञानी ममत्व-भाव से दुःखी होता है।

४ सेठ ने माल खरीदा। चार मजदूरों के सिर पर सात-सात पेटियां रखी। मजदूर चलते-चलते थके। सेठ ने कहा—तीन डाल दो, तीनों ने चार-चार पेटियां डाल दी, चौथे ने नहीं डाली। घर पहुंचने पर दयालु सेठ ने सारा माल उन्हें ही दे दिया, अब तीनों रोने लगे। (माल पर ममत्व हो गया)

५ ममत्तं छिन्दइ ताए, महानागोव्व कंचुयं।

—उत्तराध्ययन १९।८७

आत्मसाधक ममत्व के बन्धन को तोड़ फेंके,—जैसे सर्प शरीर पर आई हुई केंचुली को उतार फेंकता है।

६ जो सन्निहिं न कुव्वइ स भिक्खू। —उत्तराध्ययन १५।२

३५ ममता

१. किं दुःखमूलं ? ममताभिधानं । —शंकर-प्रश्नोत्तरी

दुःख का मूल क्या है ? —जिसे ममता कहते हैं, वही ।

२. ममत्तबंधं च महब्भयावहं । —उत्तराध्ययन १९।९८

ममत्व का बन्धन महाभय करनेवाला है ।

३. ममाइ लुप्पइ बाले, अन्नमन्नेहिं मुच्छिए ।

—सूत्रकृतांग-१।१।४

धन-धान्यादि वस्तुओं में मूर्छित अज्ञानी ममत्व-भाव से दुःखी होता है ।

४. सेठ ने माल खरीदा । चार मजदूरों के सिर पर सात-सात पेटियाँ रखीं । मजदूर चलते-चलते थके । सेठ ने कहा—तीन डाल दो, तीनों ने चार-चार पेटियाँ डाल दीं, चौथे ने नहीं डालीं । घर पहुँचने पर दयालु सेठ ने सारा माल उन्हें ही दे दिया, अब तीनों रोने लगे । (माल पर ममत्व हो गया)

५. ममत्तं छिन्दए ताए, महानागोव्व कंचुयं ।

—उत्तराध्ययन १९।८७

आत्मार्थी ममत्व के बन्धन को तोड़ फेंके,—जैसे सर्प शरीर पर आई हुई केंचुली को उतार फेंकता है ।

६. जो कम्हि वि न मुच्छए स भिक्खू । —उत्तराध्ययन १५।२

३६ ममता और समता

१. जे ममाइयमतिं जहाति, से जहाति ममाइयं,
से हु दिट्ठपहे मुणी, जस्स नत्थि ममाइतं ।

—आचारांग-२।६

जो ममत्व-बुद्धि का त्याग करता है, वह स्वीकृत परिग्रह का त्याग करता है। जिसके ममत्व एवं परिग्रह नहीं है, उसी मुनि ने ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूप मोक्षमार्ग को जाना है।

२. अवेहि विद्वन् ! ममतैव मूलं,
शुचां सुखानां समतैव चेति । —अध्यात्मकल्पद्रुम

शोक का मूल ममता है और सुखों का मूल समता है। इस तत्त्व को समझो !

३. यत्रास्माकं ममता, ममतापस्तत्र—तत्रैव ।
यत्रैवाहमुदासे, तत्र मुदासे स्वभावसन्तुष्टः ॥

जहाँ-जहाँ ममता है, वहाँ-वहाँ ही मुझे संताप है। जहाँ मैं उदासीन बन जाता हूँ, वहाँ स्वभाव से सन्तुष्ट होकर परम-आनन्द में रमण करने लगता हूँ।

४. द्व्यक्षरस्तु भवेन्मृत्युस्त्र्यक्षरं ब्रह्म शाश्वतम् ।
ममेति च भवेन्मृत्युर्नममेति च शाश्वतम् ॥

—महाभारत शान्तिपर्व १३।४

दो अक्षरों का 'मम' अर्थात् ममत्व मारनेवाला है और तीन अक्षरों का 'नमम' यानि निर्ममत्व तारनेवाला है।

३६ ममता और समता

१. जे ममाइयमतिं जहाति, से जहाति ममाइयं,
से हु दिट्ठपहे मुणी, जस्स नत्थि ममाइयं।

—आचाराङ्ग-२।६

जो ममत्व-बुद्धि का त्याग करता है, वह स्वीकृत परिग्रह का त्याग करता है। जिसके ममत्व एवं परिग्रह नहीं है, उसी मुनि ने ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूप मोक्षमार्ग को जाना है।

२. अवेहि विद्वन् ! ममतैव मूलं,
शुचां सुखानां समतैव चेति। —अध्यात्मकल्पद्रुम

शोक का मूल ममता है और सुखों का मूल समता है। इस तत्त्व को समझो।

३. यत्रास्माकं ममता, ममतापस्तत्र—तत्रैव।
यत्रैवाहमुदासे, तत्र मुदासे स्वभावसन्तुष्टः॥

जहाँ-जहाँ ममता है, वहाँ-वहाँ ही मुझे संताप है। जहाँ मैं उदासीन बन जाता हूँ, वहाँ स्वभाव में सन्तुष्ट होकर परम-आनन्द में रमण करने लगता हूँ।

४. द्व्यक्षरस्तु भवेन्मृत्युस्त्र्यक्षरं ब्रह्म शाश्वतम्।
ममेति च भवेन्मृत्युर्नममेति च शाश्वतम्॥

—महाभारत शान्तिपर्व १३।४

दो अक्षरों का **'मम'** अर्थात् ममत्व मारनेवाला है और तीन अक्षरों का **'नमम'** यानि निर्ममत्व तारनेवाला है।

तीसरा कोष्ठक

१ सन्तोष

१ लोभविजएणं जीवे संतोसं जणयई। —उत्तराध्ययन-२९।७०

लोभ को जीतने से जीव सन्तोष को उत्पन्न करता है।

२. अहंभाव को छोडकर विपत्ति को भी सम्पत्ति मानना सच्चा सन्तोष है। —ऋग्वेद

३ बिना किसी दूसरे से तुलना करते हुए जीवन का उपयोग करो, यही परम सन्तोष है। —बन्टोरसेट

४. सन्तोष कुदरती-दौलत है, ऐश्वर्य कृत्रिम-गरीबी। —सुकरात

५. सन्तोष आनन्द है, शेष सब दुःख है, इसलिए सन्तुष्ट रह! सन्तोष तुझे तार देगा। —तुकाराम

६ ओ सन्तोष! मुझे ऐश्वर्यशाली बना दे! क्योंकि कोई ऐश्वर्य तुझसे बढ़कर नहीं है। —सादी

७. सन्तोष आदमी को शक्तिशाली बनाता है। —जान्सी बराक

८ जबकि सब रास्तों के रास्ते बन्द हो जाते हैं, उस वक्त सन्तोष ही तमाम रास्तों को बिना शक अच्छी तरह खोल देता है। —मुहम्मदबिन बशीर

१७. कन्टेन्टमेन्ट कैन नेवर रियली बी परचेज्ड ।

—अंग्रेजी कहावत

सन्तोष कभी नहीं खरीदा जा सकता है ।

१८. सन्तोष के तीन मार्ग—(१) दान, (२) बुद्धिपूर्वक निराकरण, (३) जबरदस्ती से दमन । उदाहरण—जैसे एक बच्चे ने कुछ खाने के लिए हठ किया । वस्तु खाने के अयोग्य थी, फिर भी एक मनुष्य ने आग्रह देखकर वह वस्तु दिलवा दी । दूसरे ने वस्तु के दुर्गुण समझाकर शात किया और तीसरे ने दो थप्पड़ मारकर चुप कर दिया । इन तीनों में दूसरा मार्ग श्रेष्ठ है । पहले में बच्चे का स्वास्थ्य बिगड़ता है । एव तीसरे में उसे असली सन्तोष नहीं होता ।



१. सन्तोषपाहन्नरए स पुज्जो । —दशवैकालिक ९।३।५

जो संतोष की प्रधानता में अनुरक्त है, वह पूज्य है।

२. सर्वाः सम्पत्तयस्तस्य, सन्तुष्टं यस्य मानसम् ।
उपानद्गूढपादस्य, ननु चर्मावृतेव भूः ॥
—हितोपदेश २।१४४

जिसका मन संतुष्ट है, सभी सम्पत्तियाँ उसके निकट हैं, क्योंकि जिसके पैरों में जूतियाँ पहनी हुई हैं, उसके लिये सारी जमीन चमड़े से मढ़ी हुई है।

३. पुंसोऽयं संसृतेर्हेतु-रसन्तोषोऽर्थकामयोः ।
यदृच्छयोपपन्नेन, सन्तोषो मुक्तये स्मृतः ॥
—भागवत ८।१९।२५

धन और काम का असंतोष मनुष्य को संसार में भटकाता है और जो भी मिल जाय उसमें सन्तुष्ट रहना मुक्ति का हेतु है।

४. कॉटेनमेन्ट इज हेप्पीनेस। —अंग्रेजी कहावत

सन्तुष्टस्य सदा सुखम्। (सन्तोषी सदा सुखी)

५. संतोषामृततृप्तानां, यत्सुखं शान्तचेतसाम् ।
कुतस्तद् धनलुब्धाना-मितश्चेतश्च धावताम् ॥
—चाणक्यनीति ७।३

५ असंतोष

१. असंतुट्ठाणं इह परत्थ य भयं भवति ।

—आचाराङ्ग चू० १।२।२

असन्तुष्ट व्यक्ति को यहां-वहां, सर्वत्र भय रहता है ।

२ असन्तोषवतः सौख्यं, न शक्रस्य न चक्रिणः ।

—योगशास्त्र २।११६

असन्तोषी इन्द्र और चक्रवर्ती को भी सुख नहीं हो सकता ।

३. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः । —कठोपनिषद् १।१।२७

मनुष्य की तृप्ति धन से नहीं हो सकती ।

४ चिड़िया कहती है—काश ! मैं बादल होती । बादल कहता है—काश ! मैं चिड़िया होता । नदी का एक किनारा कहता है—सम्पूर्ण सुख परले किनारे पर है और दूसरा कहता है—सुख सब पहले ही किनारे पर है । —टैगोर

५. कसिणंपि जो इमं लोगं, पडिपुन्नं दलिज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न सन्तुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥

—उत्तराध्ययन ८।१६

धन धान्य आदि से परिपूर्ण यह समग्र विश्व भी यदि एक मनुष्य को दे दिया जाए, तो भी वह सन्तुष्ट नहीं होगा, क्योंकि यह असन्तुष्ट आत्मा दुष्पूर है ।

६ लोभ

१ लोहो सव्वविणासणो । —दशवैकालिक ८।३८

लोभ सब गुणों का नाश करनेवाला है ।

२. लोभो व्यसनमन्दिरम् । —योगसार

लोभ आपत्तियों का घर है ।

३. लोभः प्रतिष्ठा पापस्य, प्रसूतिर्लोभ एव च ।
द्वेष-क्रोधादिजनको, लोभः पापस्य कारणम् ॥ —भोजप्रबन्ध

लोभ पाप की प्रतिष्ठा है, लोभ ही पाप की माता है और राग-द्वेष को पैदा करनेवाला लोभ ही पाप का मूल कारण है ।

४ ग्रास्प आल लूज ऑल । —अंग्रेजी कहावत

लालच बुरी बलाय ।

५ लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधयः ।
स्नेहमूलानि शोकानि, त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव ॥
—उपदेशमाला

लोभ पापों का मूल है, रसास्वादन रोगों का मूल है और स्नेह शोकों का मूल है । इन तीनों को त्यागकर सुखी बनो ।

६ लोहाओ दुहओ भयं । —उत्तराध्ययन ९।५४

लोभ से इस लोक-परलोक, दोनों में भय प्राप्त होता है ।

१४ लोभस्सेस अणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे, गिही पव्वइए न से ॥

—दशवैकालिक ६।१६

भगवान् कहते हैं—मेरे मतानुसार थोड़ा सा भी संग्रह करना—यह लोभ का परिणाम है। जो साधु होकर संग्रह की इच्छा करता है, वह गृहस्थ ही है, किन्तु साधु नहीं।



८ लोभी

१. करेइ लोहं, वेरं वड्ढइ अप्पणो । —आचारांग २।५

जो लोभ करता है, वह अपनी ओर से चारों ओर वैर की वृद्धि करता है ।

२. अल्लजी जमअ मालंव्व अद्ददहू० ।

—कुरानशरीफ १०४।२

लानत है उस पर, जो दौलत का ढेर जुटाता है और जब तब बैठकर उसे गिनता है । वह सोचता है कि उसकी दौलत उसे अमर बना देगी ।

३ लोभाविष्टो नरो वित्तं, वीक्षते न स चापदम् ।
दुग्धं पश्यति मार्जारो, न तथा लगुडाहतिम् ॥

—सुभाषितरत्न भाण्डागार ७२

लोभी मनुष्य धन को देखता है, किन्तु उससे उत्पन्न होनेवाले दुःख को नहीं देखता । बिल्ली दूध को देखती है किन्तु लाठी के प्रहार को नहीं देखती ।

४ मातरं पितरं पुत्रं, भ्रातरं वा सुहृत्तमम् ।
लोभाविष्टो नरो हन्ति, स्वामिनं वा सहोदरम् ॥

—नारदपुराण ३

लोभी मनुष्य माता, पिता, पुत्र, भाई, मित्र, स्वामी एवं सहोदर

१२. लोभी सेठ के प्राण अटक रहे थे। एक साधु ने उसे सूई देकर कहा—यह मेरे पूर्वजो के पास पहुँचा देना।
सेठ—यह साथ नही चल सकती।
साधु—तो फिर तुम्हारी सम्पत्ति साथ कैसे चलेगी जिसके लिये तुम तडफ रहे हो? अत. ममता छोडकर, भगवान् को याद करो।



क्षमा अशक्तों के लिए गुण है और शक्तों के लिए आभूषण है।

७. क्षमा रूप तपस्विनाम्। —चाणक्यनीति ३।९

क्षमा तपस्वियों का रूप-सौन्दर्य है।

८. कोहविजएणं जीवे खंतिं जणयइ। —उत्तराध्ययन २९।६७

क्रोध को जीतने से जीव क्षमा को उत्पन्न करता है।

९. यदि विश्व को आत्मवत् समझा जाय तो किसी भी अपराधी पर क्रोध उत्पन्न न हो। देखिए—दाँतों से जीभ कट जाती है, पैर से पैर के ठोकर लग जाती है, हाथ या कपड़े से आँख में चोट आजाती है, फिर भी दाँत, पैर आदि पर क्रोध नहीं आता, कारण-उनमें अपनत्व की भावना है।

१०. उपकारापकाराभ्यां, विपाकाद् वचनाद् यथा।
धर्माच्च समये क्षान्ति, पञ्चधा हि प्रकीर्तिता॥

समय पर पाँच कारण से क्षमा की जाती है।

(१) उपकार का स्मरण करते हुए।

(२) क्रोध करने से सामने वाला व्यक्ति अपकारी-शत्रु न बन जाय-ऐसे सोचते हुए।

(३) क्रोध के विपाक-फल का चिन्तन करते हुए।

(४) आगम वचनों का विचार करते हुए।

(५) क्षमा धर्म-स्वभाव से हो।

११. चार बातें हमेशा को सहन करनी पड़ती हैं—

(१) [illegible] का बोध

(२) [illegible] गुरु का [illegible]

१० क्षमा का उपदेश

१. खंति सेविज्ज पंडिए। —उत्तराध्ययन १।९

पण्डित पुरुष को क्षमा की आराधना करनी चाहिए।

२ पियमप्पिय सव्वतितिक्खएज्जा। —उत्तरा० २१।१५

प्रिय-अप्रिय सब शांतिपूर्वक सहन करे।

३. अप्पाहारे तितिक्खए। —आचारांग ८।८

विद्वान् अल्पाहारी होता हुआ क्षमावान् बने।

४. हम्ममाणो न कुप्पेज्जा, वुच्चमाणो न संजले।

—सूत्रकृतांग ९।३१

साधक पुरुष मारने पर क्रोध न करे और गाली आदि देने पर द्वेष न करे।

५ अक्कोधेन जिने कोधं। —धम्मपद २२३

क्षमा से क्रोध को जीतना चाहिए।

६ क्षमा करने की आदत डाल, नेकी का हुक्म देता जा और जाहिलों से दूर रह। —कुरानशरीफ ७।१९९



५. क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो,
उसको क्या ? जो दन्तहीन, विषरहित विनीत सरल हो।
जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहाँ निष्फल है,
गरल घूंट पी जाने का, मिष है वाणी का छल है ॥
—कुरुक्षेत्र 'दिनकर'

६. क्षमा बड़न को चाहिए, छोटों को उत्पात।
का 'रहीम' हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात ॥

७. जो गुस्सा पी जाते हैं और लोगों को माफ कर देते हैं, अल्लाह ऐसी नेकी करने वालों को प्यार करता है।
—कुरान सू. ३ आ. १३४

८. भिक्षुओ ! तुम्हें मृदु-कठोर, शत्रुभाव से-मित्रभाव से, कामका-निकम्मा, वचन-कुवचन तथा सच्चा-झूठा कोई कुछ भी कहे, तुम क्षमामूर्ति बन जाना, पृथ्वीवत् धीर, आकाशवत् विशाल तथा गंगानदीवत् तृण से प्रज्वलित न होने वाले बनना, चाहे तुम्हें कोई काट भी डाले तो भी क्रोध मत करना।
—गौतमबुद्ध



क्षमा के उदाहरण

१. भगवान् महावीर को संगम देवता ने भीषण उपसर्ग किए। बीच में एक दिन पूछा—मुझे आप कैसा समझते हैं? प्रभु ने कहा—अच्छे मुनाफे से माल बिकवानेवाले दलाल के समान महान् उपकारी।

२ एक ब्राह्मण महात्मा बुद्ध का शिष्य बना। उसका भाई बुद्ध को गालियां देने लगा। शान्त बुद्ध ने कहा—तुम्हारा माल मेरे यहाँ नहीं खपता, अतः मैं तो नहीं लेता।

३. बुद्ध और पूर्ण का सम्वाद–

बुद्ध—अनार्य गाली देंगे तो?
पूर्ण—उपकार मानूंगा।
बुद्ध—हाथ से मारेंगे तो?
पूर्ण—सोचूंगा कि शस्त्र से तो नहीं मारा!
बुद्ध—शस्त्र से मारेंगे तो?
पूर्ण—सोचूंगा कि जान से तो नहीं मारा!
बुद्ध—अगर जान से मारेंगे तो?
पूर्ण—सोचूंगा कि आत्मा अजर-अमर है।

४. [illegible] बैठे थे। दो नारियाँ [illegible] थीं। युवक

७. कबीरजी नंगे सिर नहाने तालाब पर जा रहे थे। उन्हीं के दर्शनार्थ आनेवाले कई जमींदार मिले। नंगे सिर देखकर उन्हें पीटते हुए कहने लगे—नालायक! संत कबीर के दर्शनार्थ जाते समय तूने अपशकुन कर दिया। ज्यों-त्यों छूटकर कबीरजी नहाने गए और वे सब पूछते-पूछते उनके घर आए। थोड़ी देर बाद जब कबीरजी नहाकर वापस आये तब सबने पैर पकड़ कर माफी मांगी।

८. महात्मा तुकाराम एक बार खेत से गन्ने लेकर आ रहे थे। रास्ते में लोग मांगते गए और वे देते गए। घर आये तब मात्र एक गन्ना शेष रहा। स्त्री के पूछने पर सारी हकीकत कही। उसने क्रुद्ध होकर वह गन्ना छीनकर उन्हीं के माथे पर दे मारा। टूटकर दो टुकड़े हो गए। महात्मा ने कहा—बहुत अच्छा हुआ। दो टुकड़े करने ही थे, चलो! सहज ही में हो गए।

९. भर्तृहरि को किसी ने गालियां दीं तब उन्होंने कहा—

ददतु-ददतु गालिर्गालिमन्तो भवन्तो,
वयमपि तदभावाद् गालिदानेऽप्यशक्ताः।
जगति विदितमेतद् दीयते विद्यमानं,
नहि शशकविषाणं कोऽपि कस्मै ददाति॥

चाहे जितनी गालियां दें! आप तो गालीमान बनें। हम तो वर्षों से गाली देने में असमर्थ हैं, क्योंकि हमारे पास गाली है ही नहीं। जगत में यही रीत चली जाती है, जो विद्यमान हो। खरगोश का सींग कोई किसी को भी नहीं देता।

मार्ग से हट गये एवं अनुयायियों को राह नहीं रोकने की प्रेरणा दी। पता पाकर बीकानेर नरेश श्री गंगासिंहजी ने बहुत प्रशंसा की।

१४. गोली से वार करने पर भी हत्यारे नाथूराम विनायक गोडसे के प्रति गांधीजी के मन में क्रोध नहीं था।

१५ अमरीका के रैले साहब के हाथ पर किसी ने क्रुद्ध होकर थूक दिया। पुलिस-कप्तान ने पिस्तौल उठाई। साहब ने उन्हें रोकते हुए कहा—इसका इलाज तो कपड़े से भी हो सकता है, यों कहकर रुमाल से पोंछ लिया।

१६. राजकुमार को किसी ने गालियां दी, कुमार ने कहा—भाई चाहे तो आप मुझे और भी गालियां दे सकते हैं, क्योंकि मुझमें बहुत ज्यादा दुर्गुण हैं।

१७ एक क्षमावान-तपस्वी की परीक्षा करने के लिए एक दुष्ट व्यक्ति ने उनसे चिलम मांगी। जवाब मिला—मैं तो पीता नहीं अतः मेरे पास नहीं है। बस धूल तेरे योग में, साला सिद्ध कहलाकर चिलम भी नहीं रखता—ऐसे एक घण्टे तक गालियां देता रहा। आखिर हारकर चुप हुआ, तब योगी ने शर्बत का प्याला पिलाकर कहा—बेटा! दिमाग ठण्डा कर ले।

१८. कई ब्राह्मण तीर्थ करने गए। चौधरी ने कृष्णा दांग। मौसर (मृत्यु-भोजन) के प्रसंग पर कुछ देने एवं सीरा बनाने के समय लोगों ने उसे नहीं बुलाया। न्योता नम्र सुनाया भी नहीं किया। बिना न्योते ही सामने आ बैठा।

हुए थे—

(१) तेरे साथ अन्याय करे उसे क्षमा करदे!

(२) काटकर अलग करनेवाले से मेलकर!

(३) बुराई करनेवाले के साथ भलाईकर!

(४) सदा सच्ची बात कह! चाहे वह तेरे खिलाफ ही क्यो न हो!

२२ हजरतमुहम्मद जब नमाज पढने मस्जिद में जाते, तब एक स्त्री उन पर कूड़ा-करकट डाला करती थी एवं वे क्षमा कर देते थे। एक दिन सिरपर कूडा नहीं पड़ा, मुहम्मद साहब उसे बीमार समझकर सुख पूछने उसके पास गए। क्षमा से प्रभावित होकर उसने माफी मांगी एवं भक्त बनी।

२३. एकनाथ महाराज गोदावरी नदी के किनारे पर पैठण गांव में रहते थे एवं अद्भुत क्षमावान थे। कुचर चूंतरे पर एक ब्राह्मण ने लोगों से २००) रुपये मांगे। एक मन-चले ने कहा—एकनाथजी को गुस्सा पैदा कर दो तो रुपये मिल सकते हैं! ब्राह्मण उनके घर गया। वे भजन कर रहे थे ब्राह्मण उनकी गोद में बैठ गया। गुरुजी शान्त रहे। भोजन के समय गिरिजाबाई (उनकी पत्नी) परोसने-को आई। तब उनके कन्धे पर जा चढ़ा। शांत गुरुजी बोले—अतिथि को मां! ध्यान रखना कहीं मेहमान गिर न जावे। यह बोली—मुझे पूरा ध्यान है, नहीं गिरने दूंगी। हरिपंडित कई बार पीठ पर चढ़ जाया करता है। ब्राह्मण

१. खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ॥

—आवश्यक अ० ४

चौरासी लाख योनि के सभी जीवों से मैं क्षमा चाहता हूं। सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरा सभी प्राणियों के साथ मैत्रीभाव है। किसी के साथ मेरा वैरभाव नहीं।

२. इच्छाकारेण संदिस्सह भयवं! खामेउं अब्भुट्ठिओमि। जं अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

—आवश्यक अ० ४

हे प्रभो! कृपया आदेश दीजिए, मैं आपके सम्मुख क्षमायाचना के लिए उपस्थित हुआ हूँ। (दिवस, पक्ष, मास, चातुर्मास, एवं वर्ष में) आहार-पानी के समय, विनय-वैयावृत्त्य एवं आलाप-संलाप करते समय, ऊँचे आसन पर या समान-आसन पर बैठते समय, तथा भाषण के बीच में या पश्चात् बोलते समय थोड़ी या ज्यादा अप्रीति हुई हो, सूक्ष्म या स्थूल अविनय हुआ हो, जिसे आप जानते हैं, किन्तु मैं नहीं जान पाता—उस अप्रीति एवं

५. जइ कसाय-उक्कडताए ण खामियं तो पज्जोसवणासु अवस्स विउसमियव्वं। सजएहि नाणीहिं ज च कय सव्वं पज्जोसवणाए खमियव्वं। एवं कारतेहिं संजयमाराहणा-कया भवइ।

—निशीथ-चूर्णि, उ. १०

कषाय की उत्कटता में यदि क्षमायाचना न की गई हो तो पर्युषण के अवसर पर किए हुए कलह को उपशान्त कर देना ही चाहिए। जो भी अपराध किया गया हो, ज्ञानी मुनि को पर्युषण के समय सबकी क्षमा मांगनी चाहिए। उक्त कार्य करने से मुनि आराधक होता है।

६. जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा।

—बृहत्कल्प भाष्य १।३५

जो कलह को उपशान्त करता है, उसकी आराधना होती है।

७ खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ।

—उत्तराध्ययन २९।१७

क्षमापन से प्रसन्नता के भाव पैदा होते हैं।

८ Forgiveness is the noblest revenge

फार्गिवनेस इज दी नोबलेस्ट रिवेन्ज।

—अंग्रेजी कहावत

क्षमा सबसे बड़ा [illegible] बदला है।

९. ही हू हैज नॉट फारगिवन एन एनिमी, हैज नॉट यट टेस्टेड वन ऑफ दी [illegible] [illegible] ऑफ दी लाइफ।

—अंग्रेजी कहावत

जिसने अपने शत्रु को क्षमा नहीं की, उसने [illegible]

विगलिंदिएसु दो-दो, चउरो चउरो य नारय-सुरेसु।
तिरिएसु होंति चउरो, चउदसलक्खा उ मणुएसु॥

—प्रवचनसारोद्धार ६६८।६६६

पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—प्रत्येक की सात-सातलाख योनि हैं। प्रत्येक वनस्पति की दसलाख और अनन्तकाय अर्थात् साधारण वनस्पतिकाय की चौदहलाख योनि हैं।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीनों विकलेन्द्रियों में से प्रत्येक की दो-दोलाख योनि हैं। नारकी, देवता तथा तिर्यञ्चपचेन्द्रिय की चार-चारलाख योनि हैं। मनुष्य की चौदहलाख योनि हैं। इस प्रकार कुल चौरासीलाख योनि हो जाती हैं।



करना सीख !

(२) अधिक की अपेक्षा थोडे मे संतुष्ट होना सीख !

(३) सदा छोटे समान की खोजकर और छोटा बन !

(४) सदा यह इच्छा एवं प्रार्थना कर कि—"प्रभु की इच्छा मेरे द्वारा पूर्ण हो।"

—टामस कॉम्पिस इमिटेशन ऑफ क्राइष्ट, (इसाईधर्म)

६ तबीयत हो यक्मु* तो होता है काम,
के दुविधा मे माया मिलेगी न राम। —उर्दू शेर

७ विशुद्धपरिणामेन, शान्तिर्भवति सर्वत। —तत्त्वामृत

शुद्धभावना मे ही सब प्रकार की शान्ति मिलती है।

८ शाति ठीक वहा से शुरू होती है, जहा महत्त्वाकाक्षा का अन्त हो! —यग

९. जहा वासना है, वहा शान्ति नही! जहा शान्ति है, वहा वासना नही!

१०. बुढिया की सुई झोपडी मे खोगयी। वह लैंप के प्रकाश में सडक पर देखने लगी, किन्तु नही मिली। इसी प्रकार भौतिक-विलासो मे सुख-शान्ति नही मिल सकती।

११ मौन के वृक्ष पर शान्ति का फल लगता है।

—अरबी कहावत

१२. आनन्द उछलता-कूदता जाता है और शान्ति मुस्कराती

---

* एक तरफ

१६ शांति की महिमा

१. शाति, सुख का सबसे सुन्दररूप है। —चैनिंग

२. शम एव पर तप॰ ।

क्रोधादिक की शाति ही उत्कृष्ट तपस्या है।

३. शान्तता मे एक शाही शान है। —वाशिंगटन इर्विन

४. शान्ति की विजय भी युद्ध की विजयो से कम नही कहला सकती। —मिल्टन

५. शमार्थं सर्व शास्त्राणि, विहितानि मनीषिभि॰ ।

—सूक्तमुक्तावलि

शान्ति की प्राप्ति के लिए ही विद्वानो ने सब शास्त्र बनाए हैं।

६ योगारूढ॰ शमादेव, शुद्ध्यन्त्यन्तर्गतक्रियः। —ज्ञानसार

अभ्यन्तरक्रिया का पात्र योगसाधना मे लीन व्यक्ति 'शम' के द्वारा ही शुद्ध होता है।

७. शान्तिखड्ग करे यस्य, किं करिष्यति दुर्जन॰ ।
अतृणे पतितो वह्नि, स्वयमेवोपशाम्यति ॥

—विदुरनीति १।५५

जिसके हाथ मे क्षमारूपी तलवार है, उसका दुर्जन कर ही क्या सकता है? तृणरहित स्थान मे पड़ी हुई अग्नि अपने-आप शान्त हो जाती है।

यौवन के प्रारम्भ मे जो शान्त-निर्विकार है, वही सच्ची शान्ति वाला है—ऐसी मेरी मान्यता है। धातुओ के क्षीण होने पर कौन शान्त नही होता!

६. अणुवसंतेणं दुक्करं दमसागरो। —उत्तराध्ययन १६।४२

जो व्यक्ति अनुपशात है, उसके द्वारा इन्द्रियदमनरूप समुद्र से तरना कठिन है।



चाहे श्वेताम्बर हो, दिगम्बर हो, बुद्ध हो या कोई अन्य हो। समता से भवित आत्मा ही मोक्ष को प्राप्त करती है।

८. समय तत्थुवेहाए, अप्पाणं विप्पसायए।

—आचाराङ्ग ३।३

अवाञ्छनीय पदार्थों के प्रति समता-उपेक्षा रखते हुए आत्मा को प्रफुल्लित करो!

९. सव्वं जगं तु समयाणुपेही।
पियमप्पियं कस्स वि नो करेज्जा।

—सूत्रकृताग १०।६

समग्र विश्व को जो समभाव से देखता है, वह न किसी का प्रिय करता है और न किसी का अप्रिय, अर्थात् समदर्शी अपने-पराये की भेद-बुद्धि से परे होता है।



(१) चुगली (२) दुस्साहस (३) वैर (४) दूसरे पर जलना (५) दूसरे के गुण मे दोषदर्शन (६) अयोग्य धन लेना-देना (७) कठिन वचन (८) क्रूरता का वर्ताव—ये आठ व्यसन क्रोध से उत्पन्न होते हैं।

७. क्रोध भूल को दोष और सत्य को अविवेक बनाता है।
—प्लेटो

८. क्रोध समझदारी को बाहर निकालकर बुद्धि के दरवाजे के चटखनी लगा देता है। —प्लुटार्क

९. क्रोध की खुराक है—प्रीति, विनय और विवेक।
—जीवनसौरभ, पृष्ठ १७

१०. क्रोध करना दूसरे के अपराधो का बदला अपने से लेना है।
—पोप

११. क्रोध करना, बर्रों के छत्तो मे पत्थर मारना है।
—मालाबारी कहावत

१२ क्रुद्ध अवस्था में आप क्षीण रहते है। कारण क्रोध अस्त्र स्वयं चालक को ही घायल करता है। —आरोग्य से

१३ अनेक व्यक्ति क्रोध से स्थानभ्रष्ट होकर १५० के बदले, ७५ के लिए भटक रहे है।

१४. छ वर्ष की पुत्री के साथ एक बहन जा रही थी। पुत्री ने दो पैसे का गुबारा माँगा। पैसे नही थे। क्रोधित होकर मा ने थप्पड मारा, लड़की सडक पर गिर पडी और मोटर से कुचली गई।



मात्र का क्रोध करोडो पूर्वार्जित-तप को नष्ट कर देता हैं।

६. साढे नौ घटे के शारीरिक श्रम से जितनी शक्ति क्षीण होती है, पन्द्रह मिनट के क्रोध से उतनी ही शक्ति क्षीण हो जाती है।

७. उत्तापकत्वं हि सर्वकार्येषु सिद्धीना प्रथमोऽन्तराय·।

—नीतिवाक्यामृत १०।१३४

गर्म होना, सभी कार्यों की सिद्धि मे पहला विघ्न हैं।

—होरेस



८. क्रोध एक क्षणिक पागलपन है।

वर्ती का, सुमंगलराजा पर सुदत्तमुनि का, यादव-कुमारो पर द्वैपायन ऋषि का, तथा कूलबालक शिष्य पर गुरुदेव का क्रुद्ध होना, अनुचित व्यवहार के कारण से था।

(४) **भ्रम**—मेतार्यमुनि पर सोनार को और स्कंदकमुनि पर पुरुषसिंहराजा को भ्रम के कारण क्रोध उत्पन्न हुआ।

(५) **विचार एवं रुचिभेद**—पिता - पुत्र में, सास-बहू में, भाई - भाई में, सघ और सस्थाओ मे, विचार या रुचिभेद के कारण परस्पर भीषण सघर्ष हो जाया करता है।

३ क्रोध की जड अंहभाव है उसपर आघात लगते ही व्यक्ति उबल पडता है। —जीवन सौरभ, पृष्ठ ३४

४. क्रोध मूर्खता से शुरु होता है और पश्चात्ताप पर खत्म होता है। —पीथागोरस

५ कोपो नेत्रेण गम्यते। —चाणक्यनीति ५।७

क्रोध नेत्रो से जाना जाता है।

६ हम कहते है—गुस्सा आ गया, किन्तु आ कहाँ से गया ? अन्दर ही तो था—पानी में पत्थर डालने से गन्दगी ऊपर आ जाती है। —विनोबा

७. चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्ते, त जहा-आयपइट्ठिए, परपइ-

२३ क्रोध-त्याग

१. आसुरत्तं न गच्छिज्जा, सुच्चाण जिणसासणं ।

—दशवैकालिक ८।२५

जैन धर्म के सिद्धान्तो को सुनकर क्रोध नही करना चाहिए ।

२. कोह असच्चं कुव्विज्जा । —उत्तराध्ययन १।१४

क्रोध को असत्य करदो, अर्थात् दबादो ।

३. क्रोध को पीना इन्सानियत है । —गांधी

४. उवसमेण हणे कोहं । —दशवैकालिक ८।३९

उपशान्तभाव से क्रोध को जीतना चाहिए ।

५ कोहं माणं न पत्थए । —सूत्रकृतांग १।१।३५

क्रोध-मान की इच्छा मत करो ।

६. नो कुज्झे नो माणे । —सूत्रकृतांग १।१।६

आत्मार्थी पुरुष को क्रोध-मान नही करना चाहिए ।

७ गुस्सा मत किया करो । पहलवान और ताकतवर वह नही, जो दूसरे पहलवान को पछाड दे । बल्कि पहलवान वह है, जो गुस्से के वक्त नफ्स पर काबू रखे ।

—ह० बु० मु०

१. कुद्धो सच्च सील विणय हणेज्ज ।

—प्रश्नव्याकरण सवरद्वार २

क्रोध मे अन्धा हुआ व्यक्ति—सत्य, शील और विनय का नाश कर डालता है ।

२. वाच्यावाच्य प्रकुपितो, न विजानाति कर्हिचित् ।
नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य, नावाच्य विद्यते क्वचित् ॥

—वाल्मीकि रामायण ५।५५।५

क्रुद्ध मनुष्य वाच्य-अवाच्य का विवेक नही करता । उसके लिए न तो कुछ वाच्य है और न ही कुछ अवाच्य ।

३ खौलते पानी मे प्रतिविम्व नही पडता, ऐसे ही क्रोधाभिभूत व्यक्ति आत्महित नही देख सकता । —बुद्ध

४ क्रोध के आवेश में एक कह रहा था—मैं काला नाग हूँ, काटने के बाद पानी भी नही मागेगा । दूसरा बोल रहा था—मैं सौ गुण्डो का एक गुण्डा हूँ, किसकी ताकत है जो मेरे सामने देखले ! (क्रोधवश लोग अपने-आप साप एव गुण्डे बन जाते हैं ।)

५. अपनी चीज की आलोचना सुनकर क्रोधी उसे तोड-फोड कर घर मे भी नुकसान कर लेता है ।

२५ क्रोध पर काबू पानेवाले महापुरुष

१ कोपं न गच्छन्ति हि सत्त्ववन्त ।

—वाल्मीकिरामायण ५।५२।१६

सत्त्ववान मनुष्य क्रोध नही किया करते ।

२. देवता सुगुरौ गोपु, राजसु ब्राह्मणेपु च,
नियन्तव्य सदा कोपो, बाल-वृद्धातुरेपु च।

—हितोपदेश ४।१२३

देवता, सद्गुरु, गाय, राजा, ब्राह्मण, बालक, वृद्ध और रोगी पर क्रोध आ जाय तो उसे रोक लेना चाहिए ।

३. न हि स्त्रीपु महात्मान, क्वचित्कुर्वन्ति दारुणम् ।

—वाल्मीकिरामायण

महापुरुष स्त्री पर कभी क्रोध नही किया करते। लक्ष्मण के क्रुद्ध होने पर सुग्रीव 'तारा' को आगे करके इसीलिए उनके सामने गया था।

४ नाऽकारणरुषा सख्या, सख्याता कारणक्रुध ।
कारणेऽपि न क्रुद्ध्यन्ति, ये ते जगति पञ्चपा ॥

बिना कारण क्रोध करनेवाले असख्य हैं । कारण से क्रोध करनेवाले परिमित हैं, किन्तु कारण उत्पन्न होने पर भी क्रोध न करनेवाले व्यक्ति जगत मे केवल पाँच-छः ही हैं।

५. पैगम्बर मुहम्मद के पास एक यहूदी गुस्से मे आकर बोला—

१. वैर पञ्चसमुत्थान, तच्च बुद्ध्यन्ति पण्डिता ।
स्त्रीकृत वास्तुज वाग्ज, ससापत्न्यापराधजम् ॥
—महाभारत शान्तिपर्व १३६।४३

वैर उत्पन्न होने के पाँच कारण हैं–(१) स्त्री के लिए, (२) घर और जमीन के लिए, (३) कटु वचन बोलने से, (४) जातिगत द्वेष के कारण और (५) किसी समय किए गए अपराध के कारण।

२ तीन बात है वैर की, जर-जोरू जमीन ।
"सतदास" इनतें अधिक, मत की बात महीन ॥

३ आदि वैर जोगीनै जती, आदि वैर वैश्या ने सती ।
आदि वैर घंटी ने घऊ, आदि वैर सासू ने वहू ॥

४ १- जोगी-भोगी नै वैर, भगत-जगत नै वैर ।
२- साँच-झूठ नै वैर, हा-ना नै वैर ॥
३- चोर-साहूकार नै वैर, विलाडी-उदरडा नै वैर ।
४- सूम-दातार नै वैर, चोर-चन्द्रमा ने वैर ॥
—गुजराती कहावतें

५ वेराणुवंधीणि महव्भयाणि । —दशवैकालिक ६।३।७

वैर के अनुवन्ध महाभय के कारण हैं।

६. प्रेम टूट जाने से दो मित्र आपस में कट्टर दुश्मन बन गये थे।

२७ वैरत्याग

१ न विरुज्झेज्ज केणइ । —सूत्रकृतांग १५।१३

किसी के साथ वैर-विरोध मत रखो ।

२ न चेम देहमाश्रित्य, वैरं कुर्वीत केनचित् ।

—मनुस्मृति

इस नश्वर शरीर के लिए किसी से वैर नही करना चाहिए ।

३. अपने मन मे किसी के प्रति (वैर-दुश्मनी) का भाव मत रखो । —पु० वा० नाग लेख्यव्यवस्था १६।१७

४. बलोपपन्नोऽपि हि बुद्धिमान् नरः,
परं नयेन्न स्वयमेव वैरिताम् ।
भिषग् ममास्तीतिविचिन्त्य भक्षये-
दकारणात् को हि विषं विचक्षणः ?

—पञ्चतन्त्र ३।१११

बुद्धिमान पुरुष बल से युक्त हो तो भी दूसरे को वैरी न बनाए । वैद्य मेरा ही है—यह सोचकर कौन चतुर अकारण विष खा सकता है ?

५ एरण्डमवलम्ब्य न कुञ्जरं कोपयेत् ।

—कौटलीय अर्थशास्त्र

एरण्ड के सहारे पर हाथी से वैर नहीं करना चाहिए ।

वैरी

१. वेराइ कुव्वइ वेरी, तओ वेरेहिं रज्जइ।
पावोवगा य आरंभा, दुक्खफासा य अंतसो॥ —सूत्रकृतांग ८।७

वैरी अपने असंयम से प्राणियो के साथ वैरभाव बढाता है और फिर उससे स्वयं रग जाता है। वैर के कारणभूत आरम्भ-काम-भोगादि पाप को पैदा करनेवाले एवं अन्त मे दु.खदायी होते हैं।

२. के शत्रव ? सन्ति निजेन्द्रियाणि,
तान्येव मित्राणि जितानियानि। —शंकर-प्रश्नोत्तरी ४

शत्रु कौन है ? अपनी इन्द्रियाँ ही शत्रु हैं, किंतु यदि उन्हे जीत लिया जाय तो वे ही मित्र भी हैं।

२ एक मन वैरी आपणो, दूजो कुसतान।
तीजी वैरण भूख है, नित उठ करै जु हान॥
—राजस्थानी दोहा

४ जात का वैरी जात, और काठ का वैरी काठ। —हिंदी क०

५. नास्त्यविवेकात् पर प्राणिना शत्रु। —नीतिवाक्यामृत १०।४५

अविवेक मे बढकर प्राणियो का कोई भी शत्रु नही है।

६ लुब्धाना याचक शत्रु-मूर्खाणा बोधको रिपु।
जारस्त्रीणा पति- शत्रुश्चौराणा चन्द्रमा रिपु.॥
—चाणक्यनीति १०।६

२६ वैरी के साथ व्यवहार

१ न हि शत्रुरवज्ञेयो, दुर्बलोऽपि महीयसा । —महाभारत

स्वय बली होकर भी दुर्बल शत्रु की अवज्ञा नही करनी चाहिए।

२. न युक्तं प्राकृतमपिशत्रुमवज्ञातुम् । —मुद्राराक्षस नाटक

साधारण शत्रु का भी अपमान करना ठीक नही।

३ नोपेक्षितव्यो विद्वद्भि शत्रुरल्पोप्यवज्ञया।

विद्वान् पुरुष को सामान्य शत्रु की भी उपेक्षा नही करनी चाहिए।

४. दोस्त चाहे कितने ही हो, घमण्ड न करो। शत्रु चाहे एक भी हो, संभल कर रहो।

५. मित्र यदि पच्चास भी है तो भी कम है, किंतु शत्रु यदि एक भी है तो भी पर्याप्त है। —इटालियन लोकोक्ति

६. परदोषान् स्वगुणैश्छादयेद् गुणागुणाद्गुण्येन ।

—कौटलीय अर्थशास्त्र

शत्रु के दोषों को अपने गुणो से और गुणो को अपने सद्गुणो से ढाँकना चाहिए।

७. ऋणशत्रुव्याधिष्वशेष कर्तव्य[illegible]

ऋण, शत्रु और रोग को बिल्कुल [illegible]

१३ शत्रोरपि न पातनीया वृत्ति । —कौटलीय-अर्थशास्त्र

शत्रु की भी आजीविका नष्ट नही करनी चाहिए।

१४. घाव वैरी रो भी सरावणो चाहीजै।

—राजस्थानी कहावत

१५ जीवन्तु मे शत्रुगणा सदैव।
येपा प्रसादात् सुविचक्षणोऽहम्।

—सुभाषित-संचय

मेरे शत्रुगण सदा अमर रहे, जिनकी कृपा से मैं विचक्षण—सावधान बना हुआ रहता हूँ।



लौटते हुए एक ब्राह्मण को मारा। वह मरकर उन्हीका पुत्र हुआ। शादी होते ही मरने लगा। ठाकुर का धर्मभाई सुख पूछने आया। लडके ने कहा—चाचाजी ! यह वही ऊट है, जो पिताजी ने पिछले जन्म मे मुझे मारकर छीना था और यह मेरी स्त्री वही सोनारी है, जो मेरे ससुराल (सुनारी गाँव) मे रहती थी। इसी ने ठाकुर को सुलगाया था। मैने वदला ले लिया, अव मैं मरता हूँ—यो कहकर एक गिलास जल पीया एव मर गया। —रत्नादेसर गाँव मे श्रुत

७ **दिल्ली का मियां**—हैदरावाद से (१०० मोहरें) कमाकर घोडी पर चढा हुआ घर जारहा था। वोरावड केपास मन्नाणा गाँव मे विश्राम किया। ठाकुर ने लूटना चाहा। वह भागा। घोडे की आवाज सुनकर घोडी रुकी और मिया लूटा एव मारा गया। मरकर उन्ही का पुत्र हुआ। घोडी जोवनेर ठाकुर की पुत्री हुई। विवाह हुआ। वीमार होकर मरने लगा, जातिस्मरण मे पिछली वात कही एव मर गया। —सतो मे श्रुत

८. वीकानेर मे एक साथ अनाज की दो वोरियां उठाकर दौड सकनेवाला एक माली था। एक जमीदार का वैल नथ नही डलवाता था। माली ने चंद ही क्षणो मे उसे नाथ डाला। क्रुद्ध वैल ने थोडी ही देर वाद माली को गुदा के रास्ते मे अपने सीग में पिरो लिया। वलिष्ठ माली ने सीग को तो खीच कर निकाल दिया, लेकिन कुछ ही क्षणों वाद वह मर गया। —वि० स० १९०६ कातिक की घटना

चौथा कोष्ठक

१ ईर्ष्या

१ दूसरो का सुख देखकर जलना ईर्ष्या है।

२. गुणी के गुणो पर जलना ईर्ष्या है और उसके गुणो में दोष-छिद्र देखना असूया है।

३ पियाप्पिये सति इस्सा इस्सामच्छरियं होति।

—दीघनिकाय २।८।३

पिय-अप्रिय होने से ही ईर्ष्या एव मात्सर्य होते हैं।

४ ईर्ष्या हि विवेक-परिपन्थिनी। —कथासरित्सागर

ईर्ष्या विवेक की शत्रु है।

५ हेतावीर्ष्यु फले नेर्ष्यु। —चरकसहिता ८।१८

दूसरो की उन्नति के कारणो मे ईर्ष्या करनी चाहिए यानी उन कारणो को अपनाने की चेष्टा करनी चाहिए, किन्तु उनके फल मे ईर्ष्या नही करनी चाहिए अर्थात् धन-सुख आदि देखकर जलना नही चाहिए।

६. सव्वत्थ विरणीयमच्छरे। —सूत्र० २।३।१४

साधु सर्वत्र मत्सर-ईर्ष्याभाव रहित रहे।

ईर्ष्यालु

१ य ईर्ष्यु परवित्तेषु, रूपे वीर्य-कुलान्वये ।
सुख-सौभाग्य-सत्कारे, तस्य व्याधिरनन्तक ॥
—विदुरनीति २।४२

जो दूसरो के धन, रूप, बल, कुलीनता, सुख, सौभाग्य और सत्कार पर ईर्ष्या करता है, उसका यह रोग असाध्य है ।

२. ईर्ष्यालु स्वय कुछ बनने की महत्त्वाकाक्षा न करके, दूसरो को भी मार्ग-पतित करके अपने तुल्य बनाना चाहता है ।
—चढतीकला से

३ ईर्ष्यालु को दुश्मन चाहे छोड दे, ईर्ष्या ही उसका सर्वनाश कर देती है । —तिरुवल्लुवर

४ वह कभी सुखी नही होता, जो अपने से अधिक सुखी को देखकर जलता रहता है ।

५ सच पूछो तो ईर्ष्या का तात्पर्य यही है कि ईर्ष्यालु, जिसको ईर्ष्या करता है, उसे अपने से बडा मानता है —बालटेयर

६. ईर्ष्यावश आप तो दूसरो की तारीफ करता नही किन्तु अपनी तारीफ करवाना चाहता है ।

७ दयापात्र बनने की अपेक्षा ईर्ष्या का पात्र बनना श्रेयस्कर है । —हैरोडोटस

३ ईर्ष्या-सम्बन्धी दृष्टान्त और कहावतें

दृष्टान्त—

१. ईसा को शैतान मिला, जो गदहो पर हसद (ईर्ष्या) लिए दुनियाँ के बाजार मे बेचने जा रहा था।
ईसा ने पूछा—कहाँ जा रहे हो ?
शैतान ने उत्तर दिया—अपना माल बेचने।
वापस लौटते समय ईसा ने उससे पुन. प्रश्न किया—
तुम्हारा माल किसने खरीदा ?
शैतान ने कहा—खासकर के मेरे माल को स्त्रियो ने, व्यापारियो ने और धर्म के ठेकेदारो ने—इन तीनो ने खरीदा है (इन तीनो मे ईर्ष्या अधिक होती है।)

२ स्वामीनारायण-सम्प्रदाय के आदिगुरु श्री सहजानन्द स्वामी अपने सत्सगी के यहा गए। उसके दो स्त्रियाँ थी और आपस मे अनबनाव था। हमेशा बडी ही रसोई बना कर स्वामीजी को भोजन करवाती थी, छोटी को पास भी नही आने देती थी। भेद पाकर स्वामीजी ने छोटी से रसोई बनाने के लिए कहा। बडी को ईर्ष्या हुई गुप्तरूप मे चूरमे के लड्डुओ मे धूल मिला दी। स्वामी जी खाते ही समझ गए और लड्डू तो लड्डू ही हैं

पडोसी छड़ै खीच नै, धमको पडे म्हारै शीश ।

—राजस्थानी कहावत

तेल बालनार नु बले ने मशालची पेट कूटे ।

—गुजराती कहावत

मालिक दान करे ने भंडारी नु पेट बले । " "

पार की गाय पार कु खाय,
जे हांके तेनु सत्यानाश जाय । " "

अन्न तेनु पुण्य, राधनार ने धुमाडो । —राजस्थानी कहावत

रसोईया जलाता रहता है ।

म्हा बैठा ही पडोसी री बेटी सासरे जाय । " "



७ क्लेश नौका छिद्र ज्यों, प्रारम्भ मे ही मेट दो।
अन्यथा सर्वस्व अपना, कुछ क्षणों मे भेंट दो।

—हिन्दी कविता

८. रोग अगन अरु राड, जाण अल्प कीजे जतन !
वधिया पछे विगाड, रोक्यो रहै न राजिया !

९ रोजीना री राड, आपस री आछी नही।
वणे जठा तक वाड, चटपट करणी चकरिया !

१० जंगल जाट न छेड़िये, हाटा बीच किराड।
राघड कदे न छेड़िये, जद-कद करे विगाड॥

—राजस्थानी सोरठे



पलायन करने वाले हैं। —प्रेमादेवी रामायणी

६ उभयोर्दु खकृत् क्लेशो, यथोष्णरेणुका क्षितौ। —हिङ्गुलप्रकरण

गर्म वालू-रेत जैसे स्वय तपती हुई दूसरो को भी तपाती है, वैसे ही यह कलह स्वय करनेवाले को तथा दूसरो को अर्थात् दोनो को दु खित करनेवाला है।

७ लडाई मे किसा लाडू थोडा ही वटे है। —राजस्थानी कहावत

८ कला कलन्दर वसे, ते घड़ियो पानी नसे। —पजावी कहावत



८ बाई जी ! बैठा अछो ! करवा माडे वेढ ।
गुरे थारा बापनी, वेटी छू रे ढेढ । —राजस्थानी कहावत

९. चौधरी बैठा हो ? तूं गुडायदे । ,, ,,

१०. आठ पूरबिया र नौ चूल्हा । ,, ,,
बारह माली र तेरह होका । ,, ,,
● मुनि जिता ही मत । ,, ,,

११ नौ कनौजिए और तेरह चौके । —हिंदी कहावत

१२ देराणी-जेठाणी नी गोठडी मा सक्करपारा ।
ने नणद-भोजाई नी गोठडी मा अगारा ।
—गुजराती कहावत

१३ कुत्ता रै सप हुवै तो गगाजी न्हाय आवै । —राजस्थानी कहावत

१४. कुत्तो लडै दाता सू, मूरख लडै लाता सू और पडित लडै बाता सूं । —राजस्थानी कहावत

१५ सप त्या जप ने फूट त्या फजीत्ती । —गुजराती कहावत

☼

९ निन्दा

१ स्व प्रशंसेवान्यनिन्दा सतां लज्जाकरी खलु।

—त्रिषष्ठि० ४।१

स्वप्रशंसा की तरह परनिन्दा भी सत्पुरुषों के लिए लज्जा की वस्तु है।

२. णिट्ठुर णिण्हेहवयणं खिसा।
मउय सिणेहवयणं उवालंभो॥

—निशीथचूर्णि २६३७

स्नेहरहित निष्ठुर वचन 'खिसा' (फटकार) है, स्नेहसिक्त मधुर वचन 'उपालंभ' (उलाहना) है।

३ अहऽसेयकरी अन्नेसि इंखिणी। —सूत्रकृतांग १।२।२।१

दूसरों की निन्दा हितकर नहीं है।

४. गैबत-निन्दा जिना—व्यभिचार से भी संगीन है। 'जिना' करनेवाला तो 'तोबा' (पश्चात्ताप आदि) करने से बरी हो जाता है, लेकिन गैबत की माफी तब तक नहीं होगी, जब तक वह शख्स खुद माफ न करे, जिसकी उसने गैबत की है। —बैहकी

५ कृतघ्नता और निन्दा—ये दो सबसे ज्यादा खतरनाक ... है। —जरथुस्त

परिशिष्ट

वक्तृत्वकला के बीज
भाग १ से ५ तक में
उद्धृत ग्रन्थों व व्यक्तियों की नामावली

१० निन्दा-निषेध

१. यदीच्छसि वशीकर्तुं, जगदेकेन कर्मणा ।
परापवादशस्येभ्यो, गा चरन्ती निवारय ॥

—चाणक्यनीति १४।१४

यदि केवल एक ही काम से जगत को वश करना है, तो पर-निन्दारूप अनाज को चरनेवाली इस जीभरूप गाय को रोककर रखो ।

२. परापवादे मूको भव !

परनिन्दा करने के लिए मूक बन जाओ ।

३. यदि तुम चाहते हो कि दूसरे लोग तुम्हारी निन्दा न करें, तो तुम भी किसी की निन्दा मत करो ।

—पहेलवी टेक्स्ट्स (पारसीधर्म)

४ जब आपके अपने द्वार की सीढ़िया मैली है तो अपने पडौसी की छत पर पडी हुई गन्दगी के लिए उलहना मत दीजिए ।

—कन्फ्यूशियस

५ नमाज में निन्दा का निषेध—हजरत मुहम्मद से एक नमाजी ने कहा—मैं नमाज पढता था तब मेरे पांच भाई गप्प लड़ा रहे थे । मैंने समझाया तो उल्टे मेरे पास आकर हुक्के की गुड़गुडाहट करते हुए मेरी मजाक करने लगे ।

११ निन्दा में समभाव

१ निन्दा सुनकर डरो मत ! गलती हो तो निकाल लो।

—धनमुनि

२. कटु आलोचना को सहना सीखो ! यदि ऐसा नही कर सकते, तो वह काम बन्द कर दो, जिससे तुम्हारी आलोचना होती हो। —रिस्टर

३. गालिब ! बुरा न मान जो, जायज बुरा कहे,
ऐसा भी है कोई कि, सब अच्छा कहे जिसे ?

४. आवत गाली एक है, उलटत होत अनेक।
कहे कबीर नही उलटिये, वही एक की एक ॥

५. निन्दक बाबा वीर हमारा,
बिन ही कौडी ब है विचारा।
कोटि-कर्म का कल्मष काटै,
काज सवारे बिन ही साटै।
आपन डूबे और कू तारे,
ऐसा प्रीतम पार उतारे।
जुग-जुग जीवो निन्दक मोरा,
रामदेव ! तुम करहु निहोरा ॥

१२ आत्मनिन्दा

१ परस्तुति स्वनिन्दा च, कर्त्ता कोऽपि न दृश्यते ।

दूसरो की प्रशसा और अपनी निन्दा करनेवाला आज कोई नही दीखता ।

२ परनिन्दा के समान पाप नही और आत्मनिन्दा के समान धर्म नही ।

३. निन्दणयाए णं पच्छाणुताव जणयइ ।

—उत्तराध्ययन २९।६

अपनी निन्दा करने मे जीव पश्चात्ताप अर्थात् "मैने यह पाप क्यो किया"—ऐसे अपने प्रति खेद व्यक्त करता है ।

४ **अपनी निन्दा सुनने से पाप का नाश**—एक धर्मात्मा राजा के लिए स्वर्ग मे महल बन गए एव देवदूत उसके पास आने-जाने लगे । एक बार बोलाने पर न बोलने से राजा ने क्रुद्ध होकर एक योगी के सिर पर घोडे की लीद डलवा दी । पाप से स्वर्ग-महल लीद मे भर गए । किसी ज्ञानी के कहने से राजा ने अपना पाप प्रकट कर दिया । लोग ज्यो ही उसकी निन्दा करने लगे महलो मे लीद हटने लगी । एक लोहार ने निन्दा नही की अत एक जगह कुछ लीद लगी रह गई । —कल्याण से

१३ निन्दक

१. सर्ववर्णेषु निन्दकश्चाण्डाल ।

निन्दा करनेवाला चाहे किसी भी वर्ण का हो, वह वास्तव मे चाण्डाल ही है ।

२ अन्नं जणं खिंसइ बालपन्ने । —सूत्रकृतांग १३।१४

अज्ञानी जीव दूसरो की निन्दा करते हैं ।

३. मूर्खरसना परापवादगूथं समुद्धरेत् । —हिंगुलप्रकरण

मूर्खमनुष्यो की जीभ निन्दारूपी विष्टा उठाती है ।

४ नीचो महत्त्वमात्मनो मन्यते परस्य कृतेनापवादेन ।

—नीतिवाक्यामृत

नीच आदमी दूसरो की निन्दा करने मे अपना महत्व मानता है ।

५. दह्यमाना सुतीव्रेण, नीचाः परयशोऽग्निना ।
अशक्तास्तत्पदं गन्तुं, ततो निन्दां प्रकुर्वते ॥

—चाणक्यनीति १३।१०

गुणीजनो की यशरूप अग्नि से जलते हुए नीच व्यक्ति उनके गुणो को तो ग्रहण कर सकते नही, अत उनकी निन्दा किया करते हैं । जैसे अंगूर के वृक्ष पर न पहुच सकने से लोमडी ने कहा— 'ग्रेप्स आर सावर' अर्थात् अंगूर खट्टे हैं ।

६ जैसे—पशुओ को उगाली साहरे विना, कवियो को कविता

१४ द्वेष

१, द्वेष उपशमत्यागात्मकेविकारे । —उत्तराध्ययन ६ टीका

उपशमभाव के त्यागरूप आत्मा के विकार को **द्वेष** कहते हैं।

२. दुःखानुशयी द्वेष । —पातञ्जलयोगशास्त्र २।८

दुःखकी प्रतीति के पीछे-रहनेवाला क्लेश **द्वेष** है।

३ द्वेषाद् दुःखपरम्परा । —तत्त्वामृत

द्वेष से दुःखों की परम्परा चलती ही रहती है।

४ श्वन् ! त्वं तथैव सर्वत्र, जातिद्वेषान् प्रभर्त्स्यसे ।

अरे श्वान ! जातिद्वेष के कारण ही तेरी प्रभर्त्सना होती है।

५, दोसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-कोहे य माणे य ।

—प्रज्ञापनापद २३।१

द्वेष दो प्रकार का है—(१) क्रोधरूप (२) मानरूप ।

६ दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहे चेव माणे चेव । —स्थानांग २।४

द्वेषप्रत्ययिक मूर्छा अर्थात् द्वेषजनित घृणा दो कारणों से उत्पन्न होती है (१) क्रोध से (२) मान से।

७ मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा ।

—अथर्ववेद ३।३०।३

१५ राग

१. असयमसय-सुखाभिप्रायो राग ।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ६।१२

सयम हीन पौद्‌गलिक सुखो की अभिलाषा को 'राग' कहते है ।

२. सुखानुशयी राग । —पातंजल-योगदर्शन २।७

सुख की प्रतीति के पीछे रहनेवाला क्लेश राग है ।

३. नास्ति राग सम दुःखम् ।

राग के समान कोई दुःख नही है ।

पिशाचा इव रागाद्या-श्छलयन्ति मुहुर्मुहु । —योगशास्त्र

रागादिपाप पिशाचो की तरह आत्मा को बारबार धोखा दिया करते है ।

राग के भेद—

४ जं रायवेयणिज्जसमुइण्णं, त भावओ तओ राओ ।
सो दिट्ठि विसय-नेहाणुरागरूवो अभिस्सगो ॥
कुप्पवयणेसु पढमो, बिईओ सद्दाइएसु, विसएसु ।
विसयादनिमित्तो वि हु, सिणेहरागो सुयाईसु ॥

—विशेषावश्यकभाष्य २९६४-६५

माया-लोभरूप रागवेदनीयकर्म के उदय से होनेवाला राग 'भावराग' है। वह दृष्टिराग, विषयराग एवं स्नेहरागरूप

अनुरागी

१. दूरादवेक्षणे हास , सप्रश्नेष्वादरो भृशम् ।
परोक्षेऽपि गुणश्लाघा, स्मरणं प्रियवस्तुषु ॥
असेवके चानुरक्ति-र्दानं संप्रियभाषणम् ।
अनुरक्तस्य चिह्नानि, दोषेऽपि गुणसंग्रह ॥

—हितोपदेश २।५९-६०

दूर से देखकर, प्रेमपूर्वक हँसना, कुशल पूछने पर आदर करना, पीठ पीछे भी गुणों की प्रशंसा करना, प्रियवस्तु मिलने पर प्रेमी का स्मरण करना, सेवा न करने पर भी अनुराग दिखाना, प्रिय वचन सहित दान देना और दोष में भी गुणग्रहण करना—ये 'अनुरागी' के लक्षण हैं।

२. रागान्ध —
पशु-मानव-देवाश्चा- ऽनुरज्यन्ते मृगागके ।
तथैवामी विशेषेण, मृग-स्त्री-सर्प-भूभुज ॥

—चन्द्रचरित्र पृष्ठ ७२

पशु, मनुष्य एवं देवता—ये सभी राग में अनुरक्त होते हैं, लेकिन मृग-स्त्री-सर्प और राजाओं का स्नेहराग विशेष माना गया है।

३. रागान्धो हि जन सर्वो, न पश्यति हिताहितम् ।

—धनिधर्मसमुच्चय

रागान्धप्राणी अपने हित-अहित को नहीं देखता।

१७ राग-द्वेष

१ रागो य दोसोऽवि य कम्मबीयं। —उत्तराध्ययन ३२।७

राग-द्वेष ही कर्मों के बीज हैं।

२. राग-दोसे य दो पावे, पावकम्म-पवत्तणे।
—उत्तराध्ययन ३१।३

राग-द्वेष ये दोनो पाप-पापकार्यों मे प्रवृत्ति करानेवाले हैं।

३ तयो मे भिक्खवे अग्गी—
रागग्गी, दोसग्गी, मोहग्गी। —इतिवुत्तक ३।४४

भिक्षुओ! तीन अग्नियां है—
(१) राग की अग्नि, (२) द्वेष की अग्नि, (३) मोह की अग्नि।

४. नत्थि रागसमो अग्गि, नत्थि दोससमो कलि।
—धम्मपद १५।६

राग के समान अग्नि नही है एव द्वेष के समान क्लेश नही है।

५ कहने को तो कहता हूं कोई गैर नही है।
पर दिल मे मेरे अपना-पराया नही जाता ॥ —उर्दू शेर

६ राग मधुमिश्रित जहर है और द्वेष खालिस।

७ दो प्रकार की बिजली है—एक खींचती है और दूसरी झटका देकर फेंक देती है, किन्तु दोनों ही मारनेवाली है। ऐसे ही राग-द्वेष को समझो।

१८ राग-द्वेष के क्षय से लाभ

१. रागस्स दोसस्स य संखएणं,
एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं। —उत्तराध्ययन ३२।२
राग-द्वेष का क्षय करने से ही आत्मा एकान्त सुखमय मोक्ष को प्राप्त करता है।

२. जे जत्तिया य हेतु भवस्स, ते चेव तत्तिया मुक्खे।
—ओघनिर्युक्ति गाथा ५३
राग-द्वेषयुक्त चलना, देखना, बोलना आदि जितने भी कार्य संसार के हेतु हैं, यदि वे ही राग-द्वेष रहित हो तो मोक्ष के हेतु बन जाते हैं।

३. ज्ञान कैसे हो!
ज्ञानप्राप्ति के लिए राजा ने अनेक साधु बुलाए। ज्ञान नही हुआ, सबको कैद कर लिया। एक साधु ने राजा को ऊंट का मुर्दा दिखाकर कहा—जब तक यह तुम्हारे मन से न निकले, तुम कुछ भी खाना-पीना मत। राजा उसे भूलने की ज्यो-ज्यो चेष्टा करने लगा, वह आंखो के सामने अधिक आने लगा। हैरान होकर गुरु के पैर पकड़े। गुरु ने समझाया कि जैसे हृदय मे मुर्दा रहेगा वहा तक खान-पान नही होगा, वैसे ही मन में राग-द्वेष रहेंगे, तब तक आत्म-ज्ञान नही होगा। राजा समझ गया और सब साधुओं को

ण सक्का फासमवेएउ, फासविसयमागय।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥

—आचाराङ्ग श्रुत २ अ १५ चतुर्थमहाव्रत की भावना

शब्द श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है। कान मे पडे हुए शब्दो को न सुनना शक्य नही, अत साधु को चाहिए कि उनके प्रति मन मे राग-द्वेष न आने दे।

आँखो के सामने आए हुए रूप को न देखना शक्य नहीं, अतः साधु को चाहिए कि उनके प्रति मन मे राग-द्वेष न आने दे।

नाक के समीप आए हुए गन्ध को न सूँघना शक्य नही, साधु को चाहिए कि उनके प्रति मन मे राग-द्वेष न आने दे।

जिह्वा पर आए हुए रस का आस्वाद न लेना शक्य नही, अत साधु को चाहिए कि उनके प्रति मन मे राग-द्वेष न आने दे।

शीतादि स्पर्श के उपस्थित होने पर उनका अनुभव न होना शक्य नही, अत साधु को चाहिए कि उनके प्रति मन मे राग-द्वेष न आने दे।



स्नेहवत स्वल्पो हि रोष । —कौटिलीय अर्थशास्त्र

स्नेही व्यक्ति को रोष बहुत कम हुआ करता है ।

६ स्नेहश्च निमित्त सव्यपेक्षश्च विप्रतिविद्धमेतत् । —उत्तररामचरित्र

स्नेह भी हो और वह निमित्त की अपेक्षा करनेवाला भी हो—

ये दोनो बातें परस्पर विरुद्ध हैं ।



१. दर्शने स्पर्शने वापि, श्रवणे भाषणेऽपि वा।
हृदयस्य द्रवत्व यत्, तत्प्रेम इति कथ्यते॥

देखने या छूने, सुनते या बोलते हृदय का पिघल जाना ही प्रेम कहा जाता है।

२. प्रेम एक वेदनापूर्ण प्रसन्नता है।

३. प्रेम स्थान और समय की सीमा से परे है। —विवेकानन्द

४. एक भयानक मानसिक रोग है, प्रेम। —प्लेटो

५. प्रेम करने का अर्थ है, अपनी प्रसन्नता को दूसरों की प्रसन्नता में लीन कर देना। —सीननिज

६. बिन गुन जोबन रूप धन, बिन स्वारथ हित जानि।
सुद्ध कामना ते रहित, प्रेम सकल रसखानि।
दम्पति सुख अरु विषय रस, पूजा निष्ठा ध्यान।
इनते परे बखानिये, सुद्ध प्रेम रसखानि।

७. प्रेम गुणों का प्रेम है, व्यक्तिप्रेम है मोह।
बस इसके व्यक्तित्व निज, देते हैं कई खोय॥ —दोहासंदोह

८. परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही,
चारु चित्त भीती लिखि लीन्ही। —रामचरितमानस

१७. भारी से भारी चीज भी हलकी फूल जैसी हो जाती है, जब उसे प्रेम उठानेवाला होता है।

—गांधी

१८ पति-पत्नी और पुत्र अपने स्वार्थ के लिये ही एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, न कि उनके हित के लिए।

—बृहदारण्यकोपनिषद २।४।५



प्रेम की महिमा

१ प्रेम ही ससार मे सब मे सूक्ष्म शक्ति है, अगर दुनियां वैर मे भरी होती तो इसका कभी का अन्त हो गया होता।

—गाधी

२ प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, और मनुष्यत्व का दूसरा नाम है। सब प्राणियो से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है। —बुद्ध

३ पोथी पढ़-पढ जग मुवा, पडित हुआ न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पण्डित होय॥ —कबीर

४. मनुष्य को अपनी ओर खीचनेवाला अगर जगत् में कोई चुम्बक है तो वह केवल प्रेम है। —गाधी

५ अमरीका का वनस्पति शास्त्री कैक्टस वृक्ष (जिसकी प्रत्येक डाली कटीली होती है) मे प्रतिदिन अनुरोध करता था कि हे प्रिय वृक्ष! मुझे एक डाली बिना काटे की भी दो। कुछ समय के बाद बिना काटो की डाली निकल आई। दर्शको के आश्चर्य का पार न रहा। तात्पर्य यह है कि वृक्षवत् मनुष्य भी प्रेम से कंटक विहीन बन सकते है।

६. जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसकी सौरभ। —विक्टर ह्यूगो

७. जगत मे सारतत्त्व है प्रेम, आधारशिला है सदाचार।

लाओत्से(—चीन का धार्मिक नेता)



२५ प्रेम का निर्वाह

१. धन दे तन को राखिए, तन दे रखिए लाज।
धन दे तन दे लाज दे, एक प्रीति के काज ॥

२ देखो करणी कमल की, जलसो कीन्हो हेत।
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूखो सरहि समेत ॥ —सूरदास

३. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाय।
प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाय ॥ —कबीर

४. चाखा चाहे प्रेम-रस, राखा चाहे मान।
एक म्यान मे दो खड्ग, देखा सुना न कान ॥

५ जौहरशनास देखले, जौहर कमाल के।
कागज पे रख दिया है, कलेजा निकाल के ॥

६ खो गए जब तेरा मकां देखा,
मिटगए जब तेरा निशां देखा।

७ नहीं जो खार मे डरते, वही उस गुल को पाते है।
उनसे मिलने का तरीका अपने को खो जाने मे है। —उर्दू शेर

८. प्रीति करे सो बावरो, कर तोडे सो क्रूर।
प्रीति करी आजन्म लो, नेय निभै सो शूर ॥

९. यह कहना कि तुम एक व्यक्ति से आजीवन प्रेम करते

२५ प्रेम का निर्वाह

१. धन दे तन को राखिए, तन दे रखिए लाज।
धन दे तन दे लाज दे, एक प्रीति के काज॥

२ देखो करणी कमल की, जलसों कीन्हो हेत।
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूखो सरहि समेत॥ —सूरदास

३. जब मैं था तब हरि नही, अब हरि है मैं नाय।
प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाय॥ —कबीर

४. चाखा चाहे प्रेम-रस, राखा चाहे मान।
एक म्यानमे दो खड्ग, देखा सुना न कान॥

५. जौहरशनास देखलें, जौहर कमाल के।
कागज पे रख दिया है, कलेजा निकाल के॥

६. खो गए जब तेरा मकाँ देखा,
मिटगए जब तेरा निशाँ देखा।

७. नही जो खार मे डरते, वही उस गुल को पाते है।
उनसे मिलने का तरीका अपने को खो जाने में है। —उर्दू शेर

८. प्रीति करै सो बावरो, कर तोडे सो क्रूर।
प्रीति करी आजन्म लो, नेय निभै सो शूर॥

९ यह कहना कि तुम एक व्यक्ति से आजीवन प्रेम करते

प्रेम का नाश

२६

१. अत्यधिक नखरे प्रेम को नष्ट कर देते है। —रोम्यारोला

२ प्रेम के मार्ग मे चालाकी बहुत बुरी चीज है। —रूमी

३ प्रीति जहाँ पर्दा नही, पर्दा वहाँ न प्रीति।
प्रीति करे पर्दा रखे, है यह रीति कुरीति॥

४. प्रेम और संदेह एक साथ एक हृदय मे नही रह सकते। —खलील जिब्रान

५ प्रेम की दो अधोगतियाँ है—
(१) मा से स्त्री पर।
(२) स्त्री से संतान पर।
प्रेम की दो उर्ध्वगतियाँ है—
(१) माँ से सन्तो पर।
(२) सन्तो से ईश्वर पर। —विनो

प्रेम की प्रेरणा

लसी या ससार मे, भांति-भांति के लोग।
सबसे मिलकर चालिए, नदी-नाव-सयोग ॥
जेते जग मे मिनख हैं, सबमे रखिये हेत।
को जाने किह काल मे, विधि काको सग देत ॥

ससार मे इतना लडाई-झगडा, राग-द्वेष, तनातनी क्यो है? इसीलिए कि हममे एक-दूसरे से प्रेम नही। शान्ति का उपाय मात्र एक प्रेम ही है। हर आदमी से प्रेम करो। फिर वह चाहे कही का हो, और कोई भी हो!

—मोल्लू (ईसा से ५०० वर्ष पूर्व चीन मे हुआ था।)

४ प्रेम की अवधि हमें इतनी बढानी चाहिए कि उसमे गांव, नगर, प्रांत, देश यावत् सारा ससार समा जाय। —गांधी

५. यदि तुम प्रिय बनना चाहते हो तो प्रेम करो और प्रेम के योग्य बनो। —फ्रैंकलिन

६ यदि तुम्हे कोई प्रेम नहो करता तो निश्चय समझो कि यह तुम्हारी अपनी ही त्रुटि है। —ड्रिज

धर्म धैर्य संयम नियम, सोच विचार अनेक।
नारायण प्रेमी निकट, इनमें रहे न एक॥

२. राम बुलावा भेजिया, कबीरा दीन्हा रोय।
जो सुख प्रेमी सग में, सो वैकुण्ठ न होय॥

३. मिलबो भलो न बिछुरबो, तज दोनों का सग।
बिछुरत मूई माछली, मिलकर मुवो पतग॥

४. याद रखना भी मिलन का ही एक रूप है। —खलील जिब्रान

५. दूरस्थोऽपि न दूरस्थो, यो यस्य हृदये स्थित।
यो यस्य हृदये नास्ति, समीपस्थोपि दूरत.॥
—चाणक्यनीति १४।१६

जो जिसके हृदय में है, वह दूर रहता हुआ भी उसके निकट ही है। जो जिसके हृदय मे नहीं है, वह निकट रहता हुआ भी उससे दूर है।

६. दयितं जन खलु गुणीति मन्यते। —शिशुपालवध
प्रिय व्यक्ति को मनुष्य गुणी है—ऐसा मानता है।

७. अन्यमुखे दुर्वाद, य प्रियवदने स एव परिहास।
इतरेन्धनजन्मा यो, धूम सोऽगुरुभवो धूपः॥
—गोवर्धनसप्तशती

१६. लोग दुनियाँ मे प्रिय बनने की कोशिश करते हैं, घर मे प्रिय बनने की नही।

प्रेमी का विरह—

१७ तस्य तदेव हि मधुर यस्य मनो यत्र सलग्नम्।
जिसका मन जहाँ लग गया, उसके लिए वही मधुर है।

१८ दाढा खटके काकरो, पूस जु खटके नैंण,
कहियो खटके आकरो, विछुड्या खटके सैंण।
साजन तो साले नही साले आहिठाण,
ऊट मर्यो साले नही, साले पड्यो पिलाण।
—राजस्थानी दोहे



३१ मोह

१. राग-द्वेष परिणतिर्मोह ।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ६।८

रागद्वेष के परिणाम को 'मोह' कहते हैं ।

२ नास्ति मोहसमो रिपु ।

—चाणक्यनीति ५।१२

मोह के समान वैरी नही ।

३ मोहेण गब्भं मरणाइ एइ ।

—आचाराङ्ग ५।३

मोह से जीव बार-बार जन्म-मरण को प्राप्त होता है ।

४ मंदा मोहेण पाउडा ।

—सूत्रकृताग ३।१।११

अज्ञानी जीव मोह से आवृत होते हैं ।

५ अजानन् माहात्म्यं, पतति शलभस्तीव्रदहने ,
समीनोप्यज्ञानाद् वडिशयुतमश्नाति पिशितम् ॥
विजानन्तोप्येते वयमपि विपज्जालजटिलान् ,
न मुञ्चाम कामानहह ! गहनो मोहमहिमा ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक २१

परिणाम को नही जानता हुआ पतंग दीपक की तीव्र अग्नि मे गिरता है । मछली भी अज्ञानवश काटे सहित मास को निगल

३२ मोह-क्षय

१. सेणावइमि निहते, जहा सेणा पणस्सइ।
एव कम्माणि णस्सति, मोहणिज्जे खय गए ॥

—दशाश्रुत ०५

जैसे—सेनापति के मर जाने पर सारी सेना भाग जाती है, उसी प्रकार मोह के क्षय होने पर सभी कर्म नष्ट हो जाते।

२. यदा ते मोहकलिलं, बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं, श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥

—गीता २।५२

जब तेरी बुद्धि—इस मोह दलदल को बिलकुल तर जायेगी तब तू सुनने योग्य एव सुने हुए के वैराग्य को प्राप्त होगा।

३ कस्मात्सौख्यं भवति भगवन्? शान्तित सा च कस्मा-
च्चेत स्थैर्यात् स्थितिरजनि मन कस्य? य स्यान्निराश।
नैराश्यं वै मिलति च कथ? यत्र नासक्तिरन्त',
साऽनासक्तिर्विलसति कुतो? यस्य बुद्धौ न मोह।

भगवान्! सुख किससे मिलता है?
शाति से।
शाति किससे प्राप्त होती है?
चित्त की स्थिरता से।

'जातिद्रोह और चाटुकारिता', चक्रवाक की चाल 'काम', गरुड की चाल 'अभिमान', गीध की चाल 'लोभ' को अर्थात्—हे आत्मा! मोहादि छ राक्षसो को नष्ट कर दो। अन्यथा पत्थर से पक्षी की तरह इनके द्वारा मारे जाओगे। (यहां मोह आदि को उल्लू, भेडिया, आदि की उपमा दी गई है।)



मित्र शोक, और शत्रु भय से रक्षा करनेवाला है, प्रीति व विश्वास का भाजन है। लेकिन यह समझ मे नही आता कि इस दो अक्षरो के रत्न (मित्र) को बनाया किसने ?

७ अमृत शिशिरे वह्नि-रमृत प्रियदर्शनम्।
अमृत राजसम्मान-ममृत क्षीरभोजनम्॥

—पञ्चतंत्र १।१३६

सर्दी के समय अग्नि, प्रियमित्र के दर्शन, राजा का सम्मान और दूध का भोजन ये चारो अमृतवत् सुखप्रद-प्रिय हैं।

८ व्याधितस्यार्थहीनस्य, देशान्तरगतस्य च।
नरस्य शोकदग्धस्य, सुहृद्दर्शनमौषधम्॥

—सुभाषितरत्न भाण्डागार, पृष्ठ ६२

रोग के समय तथा शोक-सतप्त होने पर—इन अवस्थाओ मे मित्र के दर्शन औषधि का काम करते है।

९ विद्या मित्र प्रवासेषु, भार्या मित्र गृहेषु च।
व्याधितस्यौषध मित्र, धर्मोमित्र मृतस्य च।

—चाणक्यनीति ५।१५

परदेश मे विद्या मित्र है, घरो मे स्त्री मित्र है, रोगी के लिए औषधि मित्र है और मृतपुरुष के लिये धर्म मित्र है।

१०. रोगिणा सुहृदो वैद्या प्रभूणा चाटुकारिण।
मुनयो दु:खदग्धाना, गणका क्षीणसपदाम्॥

रोगियो के मित्र वैद्य है, राजाओ के मित्र हा मे हा करनेवाले हैं, दुखी प्राणियो के मित्र साधु हैं और क्षीणसम्पदावालो के मित्र ज्योतिषी है।

३४ मित्र के गुण-दोष

१ शुचित्व त्यागिता शौर्य, सामान्य सुख-दुखयो ।
दाक्षिण्य चानुरक्तिश्च, सत्यता च सुहृदगुणा ॥
—हितोपदेश १।६६

पवित्रता, उदारता, शौर्य, सुख-दुःख मे समानता, दक्षता, अनुराग, सच्चाई—ये सब मित्र के गुण हैं ।

२ जे न मित्र दुख होहिं दुखारी,
तिन्हहिं विलोकत पातक भारी ।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना,
मित्र का दुख रज मेरु समाना ॥ —रामचरितमानस

३ सज्जन ऐसा कीजिये, ढाल सरीखा होय ।
दुख मे तो आगे रहे, सुख मे पाछो होय ॥
रहस्यभेदो याञ्चा च, नैष्ठुर्य चलचित्तता ।
क्रोधो नि सत्यता द्यूत-मेतन्मित्रस्य दूषणम् ॥
—हितोपदेश १।६८

गुप्त बात को प्रकट करना, मागना, निष्ठुरता, चित्त की चचलता, क्रोध, असत्य, द्यूत—ये मित्र के दोष हैं ।



४. एक एव सुहृद्धर्मो, निधनेप्यनुयाति य ।
शरीरेण सम नाश, सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥

—हितोपदेश १।६४

मरने के बाद साथ चलनेवाला सच्चा मित्र एक धर्म ही है, अन्य वस्तुएँ तो शरीर के साथ ही नष्ट हो जाती है ।

५. मुख मीठा सज्जन घणा, मिजलस मित्र अनेक ।
काम पड्या कायम रहे, सो लाखन मे एक ॥

६ मिसरी घोले झूठ की, ऐसे मित्र हजार ।
जहर पिलावे साँच का, वे विरले ससार ॥

७ साचो मित्र सचेत, कहो काम न करै किसो !
हरि अर्जुन रै हेत, रथ कर हाँक्यो राजिया !

—राजस्थानी सोरठा

८ पूर्व जन्म की मित्रता (कार्तिक सेठ एव पूर्ण तापस के भव की) को निभाने के लिए शकेन्द्र-असुरेन्द्र ने कोणिक के लिए भीषण संग्राम किया ।

९ डेलकारनेगी ने कहा—मेरी सारी सम्पत्ति लेकर मुझे कोई एक सच्चा मित्र दे दो !

अमेरिका के धनकुबेर हेनरीफोर्ड ने पूछने पर एक पत्रकार से कहा—अपार धन-सम्पत्ति होने पर भी मेरे जीवन में सबसे बडी कमी यह रह गई कि धन के नशे मे मैं सच्चे मित्र को नही पा सका ।

१० मीन काटि जल धोइए, खाए अधिक पियास ।
तुलसी प्रीति सराहिए, मुये मित्र की आस ॥

३६ मित्र की आवश्यकता

१ एकश्चार्थान्न चिन्तयेत् । —विदुरनीति १।५१

मनुष्य को चाहिए कि विचारणीय विषयो पर अकेला विचार न करें अर्थात् किसी साथी के साथ करे ।

२ द्वितीयवान् हि वीर्यवान् । —शतपथब्राह्मण ३।७।३।८

जिसके साथी है, वही शक्तिमान होता है ।

३ मित्रवान् साधयत्यर्थान्, दु साध्यानपि वै यत ।
तस्माद् मित्राणि कुर्वीत, समानान्येव चात्मन ॥
—पञ्चतन्त्र २।२८

मित्रवाला व्यक्ति दु साध्य अर्थ को भी साध लेता है, अत मनुष्य अपने तुल्य मित्र अवश्य बनाए ।

४ दु खित सुखितो वापि, सख्युर्नित्य सखा गति ।
—वाल्मीकिरामायण ४।८।४०

दु खी हो या सुखी, मित्र की गति मित्र से ही होती है ।



९ परोक्षे कार्यहन्तार, प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
वर्जयेत्तादृश मित्रं, विषकुम्भं पयोमुखम् ।।

—चाणक्यनीति २।५

जो मित्र परोक्ष मे काम बिगाडता है और प्रत्यक्ष मे मीठा बोलता है ऐसा मित्र जहर का घडा है, मात्र उसके मुख पर थोडा-सा दूध है । अत उसका त्याग कर देना चाहिए ।

१० खाली हाथ आकर कुछ न कुछ ले ही जानेवाला, बडी बाते बनानेवाला, हाजीडा और नरक का साथी—ये चार प्रकार के मित्र अमित्र हैं एव दूर से ही त्याज्य है ।

—जातक

११. आए को आदर नही, चलत न पूछे बात ।
तुलसी ऐसे मित्र के, सिर पर डारो खात ।।

१२ मन मलीन तन सुन्दर कैसे,
विषरस-भरा कनक - घट जैसे ।

—रामचरितमानस



७ A Fraind in Power is Fraind Lost.
एफ्रैण्ड इन पावर इज फ्रेण्ड लोस्ट। —अंग्रेजी कहावत
उच्च-पदस्थ मित्र को अपना खोया हुआ मित्र समझना चाहिए।

८ यो मित्रं कुरुते मित्रं, वीर्याभ्यधिकमात्मनः।
स करोति न सदेह, स्वय हि विषभक्षणम्।
—पञ्चतन्त्र ४।२५

जो अपने से अधिक शक्तिशाली को मित्र बनाता है, वह स्वय नि सदेह विप-भक्षण करता है।

९ An Open enemy is better then butyful frind
एन ओपन एनीमी इज बेटर देन ब्यूटी फुल फ्रेण्ड।
—अंग्रेजी कहावत

सदिग्ध मित्र की अपेक्षा खुला शत्रु अच्छा है।

१०. पण्डितोऽपि वर शत्रु-र्न मूर्खो हितकारक।
—पञ्चतन्त्र १।३७५

पडित शत्रु अच्छा है, लेकिन मूर्ख मित्र अच्छा नही।

११ दो मित्रो के वीच मे पडना एक से हाथ धोना है और दो शत्रुओ के वीच मे पडना एक को अपना वनाना है।

१२. दुश्मने दाना वेद अज दोस्ते नादा। —पारसी कहावत
मूर्ख मित्र मे विद्वान् शत्रु अच्छा।

१३ जिमके वहुत से मित्र हैं, निश्चित जानो। उसके एक भी मित्र नही है। —अरस्तू

१४ मित्रो की आलोचना करते समय यदि संताप होता हो तो

३६ मित्रता

उपकाराच्च लोकाना, निमित्तान्मृग-पक्षिणाम् ।
भयाल्लोभाच्च मूर्खाणा, मैत्री स्याद् दर्शनात् सताम् ॥
—पञ्चतन्त्र २।३७

सामान्य लोगो की मित्रता उपकार से, पशुपक्षियो की किसी निमित्त कारण से मूर्खों की भय अथवा लोभ से और सज्जनो की मित्रता मात्र एक-दूसरे को देखने से होती है। ऐसे चार तरह से मित्रता होती है।

आहु सप्तपदी मैत्री। —सुभाषितरत्न मजूषा

सात कदम सामने जाना मित्रता का लक्षण है।

Choreity begins at home

चैरेटी बिगिन्स् एट होम। —अंग्रेजी कहावत

मित्रता कुटुम्ब से शुरू होती है।

मित्रता करने मे धीरज से काम लो, किन्तु कर लेने पर उसे अचल एव दृढ होकर निभाओ।

इब्राहीम लिंकन का दुश्मनो के साथ दोस्ती का व्यवहार देखकर उसके साथियो ने कहा—जिनको हमे खत्म करना है, आप उनसे दोस्ती कर रहे हैं। इब्राहीम ने कहा—दोस्ती करके इनको खत्म ही तो कर रहा हू।

२० शिष्टों एवं दुष्टो की मित्रता

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण,
लघ्वीपुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्ध-परार्द्ध भिन्ना,
छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम्॥

—भर्तृहरि-नीतिशतक ६०

दुर्जनो की मित्रता दिन के पूर्वार्द्ध की छाया के समान है, जो प्रारम्भ मे बडी होकर क्रमश· क्षीण होती जाती है तथा सज्जनो की मित्रता दोपहर की छायावत् है, जो प्रारम्भ मे छोटी होकर फिर क्रमश बढती ही जाती है।

२ इक्षोरग्रात् क्रमश, पर्वणि-पर्वणि रस विशेष।
तद्वत् सज्जन मैत्री, विपरीताना च विपरीता।

—पञ्चतन्त्र २।३६

इक्षु के अग्रभाग से लेकर जैसे क्रमश प्रत्येक पर्व मे रस अधिक अधिक होता है, वैसे ही सज्जनो की मित्रता भी बढती जाती है, किंतु दुर्जनो की मित्रता इससे विपरीत होती है यानी घटती जाती है।

—महाभारत

३ सद्भि सन्धिर्न जीर्यते।
सज्जनो की मित्रता कभी पुरानी नही होती।
सच्ची मित्रता मे बनावट, सजावट एव दिखावट नही होती।

४१ मित्रता न करने योग्य व्यक्ति

१. बाल-वृद्ध-लुब्ध-मूर्ख-क्लिष्ट-क्लीबैः सह सख्यं न कुर्यात्।

—चरकसंहिता ६।२५

बालक, बूढा, लोभी, मूर्ख, दु:खी, क्लीब-इनके साथ मित्रता न करे।

२ उससे कभी मित्रता मत करो। जिसने तीन मित्र करके छोड दिये है।

—लेवेटर

३ लडके की दोस्ती, जी का जंजाल।

लडके की यारी, गधे की सवारी। —हिन्दी कहावत

४. नादान री दोस्ती, जाँन नैं जोखम। —राजस्थानी कहावत

मित्रता-भंग के कारण—

१ विवादो धनसबन्धो, याचनं स्त्रीषु सगति।

आदानमग्रत स्थान, मैत्रीभङ्गस्य हेतव ॥

—सुभाषितरत्न भाण्डागार, पृष्ठ १६०

विवाद, धन का लेन-देन, याचना- मित्र की स्त्रियो से ससर्ग तथा मित्र के कार्यो मे अग्रस्थान का ग्रहण अर्थात् अग्रगण्यता-ये मित्रता टूटने के कारण है।

२. दोस्ती मे लेन-देन वैर का मूल। —हिन्दी कहावत

३ कुवाक्यान्त हि सौहृदम्। —पञ्चतन्त्र ३।५७

कुवाक्य कहने मे मित्रता का नाश होता है।



२३ संगठन

१. सघे शक्ति कलौ युगे।

इस कलिकाल मे पारस्परिक संगठन ही बड़ी शक्ति है।

२. घणा जीतै रे लिछमणा! —राजस्थानी कहावत

३. संहति श्रेयसी पुसा, स्वकुलैरल्पकैरपि।
तुषेणापि परित्यक्ता, न प्ररोहन्ति तण्डुला ॥ —हितोपदेश १।३६

स्वकुल के सामान्य पुरुषो की एकता भी श्रेष्ठ है। देखो! तुषो दूर के हो जाने पर चावल नही उगते।

४. अल्पानामपि वस्तूना, संहति कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नै, र्बध्यन्ते मत्तदन्तिन ॥ —हितोपदेश १।३५

छोटी-छोटी वस्तुओ का भी समूह कार्यसिद्ध करनेवाला हो जाता है। देखो! संगठित तृण भी रज्जु बनकर मत्तहाथी को बांध लेते हैं।

५. पञ्चभिर्मिलितै किं यज्जगतीह न साध्यते। —नैषधीय चरित्र

जगत मे ऐसा कौनसा काम है, जिसे पाच व्यक्ति मिलकर न कर सकें?

१० दूध की नदियाँ

सदा दूध की नदियाँ बहती,
जहाँ एकता कैम्प लगाती,
खुशियो मे दिन-रात गुजरते,
उदासीनता कोसो जाती,
जो भी करो, शुभ-काम सभी में,
सबल सफलता दौडी आती।
अजव एकता के इन्जिन से--
जुडी हुई यह जीवन-गाडी,
फक-फक कर चलती ही जाती॥ सदा०॥

पर्ण कुटी भी राजमहल का,
इचरजकारी दृश्य दिखाती,
सीधी-साधी पोशाके भी,
दिव्य वस्त्र-सा रँग लगाती,
रूखी-सूखी वासी रोटी--
पाँचो पकवानो से भी वढकर,
तन मे जल्दी खून वढाती॥ सदा०॥

एक-एक को वडा समभकर,
वात-वात मे आगे करता,
एक-एक को नम्रभाव से,
पूछ-पूछ कर ही पग धरता,
क्षीर-नीर सम एकरूपता--

दूसरी बात—ये सभी एक-दूसरे के दुःख में भाग लेते हैं जैसे—एक हाथ की हड्डी टूट जाने पर सभी का ध्यान एव प्रयत्न उसके उपचार में लग जाता है।

तीसरी बात—सभी एक दूसरे के आश्रित है, अध्यक्ष नही। बच्चो के अगो मे वृद्धो की अपेक्षा सहानुभूति अधिक होती है। अत उनके घाव आदि जल्दी मिटते हैं। समाज मे भी सहानुभूति परमआवश्यक है।

१४ सर्वे यत्र विनेतार, सर्वे पण्डितमानिन ।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति, तद् वृन्दमवसीदति ॥

—श्राद्धविवरण

जिसे संघ-संगठन मे सब नेता है, सब पण्डितमानी हैं एवं सर्व वडप्पन के भूखे हैं, वह सघ नष्ट हो जाता है।

१५. पाँचसौ सुभटो का दल एक राजा के यहाँ नौकरी करने आया। राजा ने परीक्षार्थ उनके सोने की व्यवस्था एक वडे हॉल मे की, एवं एक पलङ्ग देते हुये कहा—तुम्हारे मे जो सबसे वडा हो, वह इस पर सो जाए। रात भर उन सब मे वडप्पन के लिए विवाद होता रहा। प्रात सूर्य निकल आया, किन्तु उनमें से कोई सो न सका। राजा को जब सब बातें ज्ञात हुई तो उन्हें विदाई दे दी गई।

कुछ दिनो के पश्चात् पुन दूसरा दल आया। राजा ने उनकी भी पूर्ववत् व्यवस्था की। सोने के समय कुछ समय तक 'आप बडे हैं' अत पलङ्ग पर सोइए, इस प्रकार आपस में मनुहारें की गई, लेकिन कोई भी पलङ्ग पर सोने

४४ भिन्नता

१ मुहडा देख र टीका काढै । —राजस्थानी कहावतें

२ हाथी रा दात दिखावण रा और, अने खावण रा और। „

३ यूय वय वयं यूय-मित्यासीन्मतिरावयो ,
किं जातमधुना येन, यूय-यूयं वय-वयम् ।
—भर्तृहरि वैराग्यशतक ६५

पहले तो हम लोगो का विचार यह था कि जो तुम हो, वही हम है और जो हम है वही तुम हो अर्थात कोई द्वैत-भाव नही था । पर अब क्या बात होगई कि तुम तुम हो और हम हम हैं ? अर्थात् हमारे बीच मे भेद-भावना जाग उठी ?

४ मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना, कुण्डे-कुण्डे नवं पय ,
जातौ-जातौ नवाचारा नवा वाणी मुखे-मुखे ॥
—सुभाषित रत्न भाण्डागार पृष्ठ १६५

जितने मस्तक, उतने ही विचार, जितने कुड-कूप, उतने ही प्रकार का पानी जितनी जातिया, उतने प्रकार के आचार-विचार और जितने मुख, उतने ही प्रकार की वाणी होती है ।

५. Every Shoe fits not every foot —अंग्रेजी कहावत
एवरी शू फिट्स नॉट एवरी फूट ।
मुँहडै जिती ही बाता ।

जागृति (मासिक)
जातक
जाबालश्रुति
जाह्नवी
जीतकल्प
जीवन-लक्ष्य
जीवन सौरभ
जीवाभिगम सूत्र
जैनभारती
जैनसिद्धान्त दीपिका
जैनसिद्धान्त बोलसग्रह
टॉड राजस्थान इतिहास
टी वी हैण्डबुक
डिकेन्स
डेलीमिरर
तत्त्वामृत
तत्त्वार्थ-सूत्र
तन्दुलवैचारिकगाथा
तत्त्वानुशासन
ताओ-उपनिषद्
ताओ-तेह्-किंग
तात्त्विक त्रिशती
अनुकूल
न वात
तत्तरीय उपनिषद्

दशाश्रुत-स्कन्ध
दशाश्रुत-स्कन्धवृत्ति
दक्षसहिता
दर्शनपाहुड
दान-चन्द्रिका
दिगम्बर प्रतिक्रमण त्रयी
दीर्घनिकाय
दोहा-सदोह
द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका
द्रव्य-सग्रह
धन-बावनी
ध्यानाष्टक
धम्मपद
धर्मबिन्दु
धर्मयुग
धर्मसग्रह
धर्मरत्न प्रकरण
धर्मशास्त्र का इतिहास
धर्मों की फुलवारी
तैत्तिरीय ताण्ड्य महाब्राह्मण
तोरा
थेरगाथा
दशवैकालिक सूत्र
दर्शन-शुद्धि
धर्म-सूत्र

भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
भक्ति-सूत्र
भगवती-सूत्र
भर्तृहरि नीतिशतक
,, वैराग्य शतक
,, शृंगार शतक
भविष्य-पुराण
भावप्रकाश
भाषा श्लोकसागर
भामिनीविलास
भाल्लवीय श्रुति
भूदान पत्रिका
भोजप्रबन्ध
मज्झिमनिकाय
मन्थन
महाभारत
महानिद्देस पालि
महानिशीथ भाष्य
महानिर्वाण तन्त्र
मनुस्मृति
मनोनुशासनम्
मत्स्यपुराण
[illegible]
[illegible]
मिलाप

मुण्डकोपनिषद्
मुस्लिम
मेडम द स्नाल
मेगजीन डाइजेस्ट
मोहमुद्गर
यश्न्
यश्त्
यशस्तिलकचम्पू
यजुर्वेद
याज्ञवल्क्य स्मृति
यूहन्ना
योगवाशिष्ठ
योगदृष्टि समुच्चय
योगशास्त्र
योगबिन्दु
रघुवंश
रश्मिमाला
राजप्रश्नीय सूत्र
रामचरित मानस
रामसतसई
रामायण
रीड मेगजीन
लूका
व्यवहार चूलिका
व्यवहार-भाष्य

समवायाग सूत्र
सम्वोधसत्तरि
सप्तव्यसन सन्धान काव्य
सरिता
सर्जना
सवैया शतक
स्वप्न शास्त्र
स्वर-साधना
समाधिशतक
सन्मति तर्कप्रकरण
स्टडीज इन डिसीट
सरल मनोविज्ञान
सयुत्तनिकाय
सामायिक सूत्र
सामवेद
सावधानी रो समुद्र
सिद्धान्त कौमुदी
सिन्दूर प्रकरण
सुखमणि सहिता
सुत्तनिपात
सुभापितावलि
सुभापितरत्न खण्ड-मजूषा
सुभाषित रत्नभाण्डागार
सुभापित सचय
सुत्तपाहुड
सुवोध पद्माकर
सुभापित रत्न सन्दोह
सुश्रुत शरीर-स्थान
सूत्रकृताग सूत्र
सूक्तरत्नावलि
सूक्तमुक्तावलि
सौर परिवार
हउश् मज्दा
हदीश शरीफ
हरिभद्रीयआवश्यक
हनुमान नाटक
हृदय प्रदीप
हृपिकेश
हितोपदेश
हिगुलप्रकरण
हिन्दुस्तान (दैनिक व साप्ताहि
हिन्दसमाचार
क्षेमेन्द्र
त्रिपष्टि शलाकापुरुप चरित्र
ज्ञाता-सूत्र
ज्ञानार्णव
ज्ञान-सार
ज्ञानप्रकाश

जान मिल्टन
जामी
जॉनसन
जाविदान ए खिरद
जीनपाली
जुगल कवि
जुन्नेद
जुन्नून
जूवंट
जेगविल
जे फरीश
जे नोफेन
जे पी सी वर्नार्ड
जे पी हालेण्ड
जौक
टप्पर
टालस्टाय
टामस कैम्पिस
टालमेज
टी एल वास्वानी
ड ल जार्ज
डाइट रॉट
डॉ हरदयालमाथुर
डॉ एलेग्जी केरेल
डॉ ग्यास जे रोल्ड

डाड्ज
डिकेन्स
डिजरायली
डी० जेरोल्ड
डी० एल० मूडी
डेलकार्नेगी
तिरमजी
तुलसीदास
थामस केम्पी
थामस फूलर
थेल्स
थैकरे
थोरो
दादू
दीपकवि
धनमुनि
धूमकेतु
नकुलेश्वर
नजिन
नलिन
नाथजी
निकोलस
निपट निरजन
निर्मला हरवर्णसिंह
नीत्से

नेपोलियन
प्लुटार्क
प्लेटो
पटोरिया
पद्माकर
परसराम
पीटर वैरो
पीपाकवि
पेस्क
प्रेमचन्द
पेरोसेल्स
पोप
फुलर
फ्रेंकलिन
वर्टन
वनारसीदास
वर्नार्डशा
वलवर
व्रह्मदत्त कवि
व्रह्मानन्द
वालजक
वावरी साहिव
विल्हण कवि
वीचर
वुल्लेशाह

सत्यदेवनारायण सिन्हा	सुन्दरदास	ह्यूम
सन्त आगस्तीन	सूरत कवि	हाफिज
सत ज्ञानेश्वर	सूरदास	हावेल
सत तुकाराम	मेलहास्ट	हालीवर्टन
सन्त निहालसिंह	सैनेका	हार्टले
सद्गुरुचरण अवस्थी	सेमुअल जानसन	हे एन भाग
समर्थगुरु रामदास	सोमदेव सूरि	हेनरी वार्ड वीचर
सायरस	हजरत अली	हैजलिट
सिगुरिनी	हजरत मुहम्मद	हैली वर्टन
स्विट	हरिभद्र सूरि	होमर
सिसरो	हलवर्ट	होरेश वाल पोल
सुकरात	हयहया	त्रायण्ट

तृष्णा ! तीन जगह तू भी तृष्णान्ध बन जाती है—रोगियों में, निःसतानों में और बूढों में।

३० धन बढाने की इच्छा 'तृष्णा', अभावपूर्ति की भावना 'इच्छा', अत्यावश्यक वस्तु की कामना 'स्पृहा' और प्राप्त वस्तु को स्थिर करने की भावना 'वासना' कहलाती है।

—कल्याण से



९ अत्थे य संकप्पओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ।
—उत्तराध्ययन ३२।१०७

अर्थों के विषय मे सद्विचार करने के अनन्तर आत्मा की कामगुणो मे बढी हुई तृष्णा सर्वप्रकार मे नष्ट हो जाती है।

१० हठीसिंह पटेल सुबह के वक्त पश्चिम की तरफ कही जगल मे जा रहा था एव उसकी छाया आगे-आगे चल रही थी। मूर्ख ने उसे भूत समझकर पीछे करने के लिए काफी दौड लगाई, किन्तु उसे सफलता न मिली। 'स्वामी नारायण-सम्प्रदाय' के आदि गुरू श्री सहजानन्द स्वामी रास्ते मे मिले एव मूर्खता पर हसते हुए उसका मुह घुमाकर पूर्व की ओर कर दिया, बस, अब तो वह भूत पीछे-पीछे चलने लगा।

(तत्त्व यह है कि तृष्णा को पीठ दिखा देने पर लक्ष्मी पीछे-पीछे दौडने लगती हैं।)



५ अनासक्ति मे काम करनेवाला कभी थकता नही। बिना अनासक्ति के मनुष्य न तो सत्य का पालन कर सकता और न अहिंसा का। —गांधी

६ अप्पडिवद्धयाएण जीवे, निस्सगत्त जणयइ।
निस्सगत्तेणं जीवे एगे, एगग्गचित्ते दिया य राओ
य असज्जमाणे अप्पडिवद्धे यावि विहरइ।

—उत्तराध्ययन २६।३०

अप्रतिवद्धता से नि सगभाव आता है। नि संगभाव मे चित्त की एकाग्रता आती हैं एवं जीव अनासक्त रहता हुआ सम्वन्धरहित होकर विचरता है।



जो किसी वस्तु मे मूर्छित नही होता, वही साधु है।

७ अवि अप्पणो वि देहंमि, नायरंति ममाइयं।

—दशवैकालिक ६।२२

ज्ञानीपुरुष अपने शरीर के प्रति भी ममत्व-भाव नही करते।

८ पुव्वकम्मखयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे। —उत्तराध्ययन ६।१३

पहले के किए हुए कर्मो को नष्ट करने के लिए ही इस देह की सार-सभाल रखनी चाहिए।



जो किसी वस्तु मे मूर्छित नही होता, वही साधु है।

७ अवि अप्पणो वि देहमि, नायरति ममाइय।

—दशवैकालिक ६।२२

ज्ञानीपुरुष अपने शरीर के प्रति भी ममत्व-भाव नही करते।

८ पुव्वकम्मखयट्ठाए, इम देह समुद्धरे। —उत्तराध्ययन ६।१३

पहले के किए हुए कर्मों को नष्ट करने के लिए ही इस देह की सार-संभाल रखनी चाहिए।



३७ ममता के विषय में कहावतें

१. खोटो तोये गाँठनो रुपियो, भांग्यु तो ये भरु च, घेलो तोपण पेटनो दीकरो। —गुजराती कहावत

२ वांको तो पण मा को।

३. आपरी मानै डाकण कुण कैवै।

४ एक घर तो डाकण ही टालै।

५ ऊट मरै जद मारवाड साह्मो जोवै।

६ ई आगली रै—आ आंगली नेड़ी रहसी।

७ हाय स्यूं हाथ र पग स्यूं पग नेडो। —राजस्थानी कहावतें

८. एव्री वन थिंक्स हिज शिलिंग वर्थ थर्टीन पेन्स।

अपनी सो लापमी दूसरे की लेई।

९ एव्री वन थिंक्स हिज ओवम गीज स्वान्स। —अंग्रेजी कहावतें

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नही कहती।



३७ ममता के विषय में कहावतें

१. खोटो तोये गाँठनो रुपियो, भांग्यु तोये भरूच, घेलो तोपण पेटनो दीकरो।

—गुजराती कहावत

२. वांको तो पण मा को।

३. आपरी माने डाकण कुण कंवे।

४ एक घर तो डाकण ही टाले।

५ ऊट मरे जद मारवाड साहमो जोवे।

६. ई आंगली रै—आ आँगली नेडी रहसी।

७ हाथ स्यूं हाथ र पग स्यूं पग नेडो।

—राजस्थानी कहावतें

८. एव्री वन थिंक्स हिज शिलिंग वर्थ थर्टीन पेन्स।

अपनी सो लापसी दूसरे की लेई।

९ एव्री वन थिंक्स हिज ओवम गीज स्वान्स।

—अग्रेजी कहावतें

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नही कहती।



९. सन्तोष परम पथ्यम् । —हिङ्गुल प्रकरण

तृष्णा की बीमारी को मिटाने के लिए सन्तोष उत्कृष्ट पथ्य है ।

१० क्रोधो वैवस्वतो राजा, तृष्णा वैतरणी नदी ।
विद्या कामदुहा धेनु, सन्तोषो नन्दनवनम् ॥
—चाणक्यनीति ८।१३

क्रोध यमराज है, तृष्णा वैतरणी नदी है, विद्या कामधेनु गाय है और सन्तोष नन्दनवन है ।

११ सन्तोषमूल हि सुखम् । —मनुस्मृति ४।१२

सुख का मूल सन्तोष है ।

१२ न तोषात् परम सुखम् ।

सन्तोष से बढकर दूसरा कोई सुख नही है ।

१३ विषय-वासना मे रमने से बढकर कोई पाप नही, असतोष से बढकर कोई दु ख नही, लोभ से बढकर कोई अनर्थ नही है और सन्तोष मे शाश्वत सुख है ।
—ताओ उपनिषद्-४६

१४ सतुट्ठी परम धन । —धम्मपद २०४

सन्तोष सर्वोत्कृष्ट धन है ।

१५ गोधन, गजधन, वाजिधन, और रतनधन खान ।
जब आवै सन्तोष धन, सब धन धूल समान ॥
—राम-सतसई

१६ सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् । —पञ्चाशक-२।१४६

सन्तोष पुरुष का सबसे बडा निधान है ।

२ सन्तोष से लाभ

१. सतोषाद् उत्तमसुखलाभ । —पातंजलयोगदर्शन २।१२

सन्तोष से उत्कृष्ट आत्मिकसुख मिलता है।

२ मुत्तीएण अकिंचरण जरणयई।

अकिंचरणेण जीवे अत्थलोभाण, अपत्थरिणज्जे भवइ।

—उत्तराध्ययन २६।४७

मुक्ति अर्थात् निर्लोभता से जीव अकिंचनता परिग्रह-शून्यता को उत्पन्न करता है। उससे वह अर्थलोभी चौरादि द्वारा अप्रार्थनीय होता है। उसे चोर आदि तग नही करते।

३ व अल्लाहु युहिब्बुस्सा बिरीन। —कुरान०२/२४६

अल्लाह सब्र करनेवालो से मुहब्बत रखता है।

४ पेशेन्स इज बिटर बट इट्स फ्रूट इज स्वीट।

सब्र का फल मीठा है।

५ **सतोप से त्रयविकारो का शमन—**

काम—बिनु सतोप न 'काम' नसाही,
काम अछत सपनेहु सुख नाही।

क्रोध—नहि सतोप तो पुनि कछु कहहू,
जनि 'रिस' रोकि दु सह दुख सहहू।

लोभ—उदित अगस्त्य पथजल सोखा,
जिमि 'लोभहि' सोखहि सतोखा।

—रामचरितमानस



संतोषरूप अमृत से तृप्त, शान्त-हृदय-पुरुषो के पास जो सुख है, इधर-उधर भटकते हुए धन-लोभी पुरुषो के पास वह सुख कहां ?

६. द्वे मे, भिक्खवे, पुग्गला दुल्लभा लोगस्मि ।
तित्तो च तप्पेता च । —अंगुत्तरनिकाय २/११/३

भिक्षुओ ! ससार मे दो व्यक्ति दुर्लभ है—
एक वह जो स्वयं तृप्त है, सन्तुष्ट है, और दूसरा वह जो दूसरो को तृप्त अर्थात् सन्तुष्ट करता है ।

७ सर्वोत्कृष्ट मनुष्य वह है, जिसे सर्वोत्कृष्ट संतोष हो ।
—स्पेंसर

८ सबसे अधिक प्राप्ति उसी को होती है, जो सतुष्ट होता है ।
—शेक्सपियर

९ मनसि च परितुष्टे, कोऽर्थवान् को दरिद्र ?
—भर्तृहरि वैराग्यशतक ४०

मन मे संतोष हो जाने के बाद कौन धनवान और कौन गरीब ?

१० संतोसिणो नो पकरेंति पाव । —सूत्रकृताग १०/१५
संतोषी व्यक्ति पाप कर्म नही करते ।

११ संतोषी पतिपत्नी :—
राका सेठ जो सन् १३१३ पंढरपुर मे रहते थे, अपनी पत्नी 'बाका' के साथ कही जा रहे थे । देवता ने उनके सतोष की परीक्षा करने के लिए सोने की थैली रास्ते में रखदी । सेठ ने उसे धूल से ढक दी । सेठानीने कहा—'धूल पर धूल डालने की क्या जरूरत है ?'



६ तृप्तो न पुत्रैः सगरः, कुचिकर्णो न गोधनैः ।
न धान्यैस्तिलकः श्रेष्ठी, न नन्दः कनकोत्करैः ॥

—योगशास्त्र २।११२

चक्रवर्ती 'सगर' साठहजार पुत्र पाकर भी सन्तोष न पा सका, कुचिकर्ण बहुत-से गोधन से तृप्ति का अनुभव न कर सका, तिलक श्रेष्ठी धान्य से तृप्त नहीं हुआ और नन्दराजा स्वर्ण के ढेरों से भी शान्ति नहीं पा सका।

७ असन्तोष चाहिए ही, किन्तु वह असन्तोष खुद के बारे में हो। —गांधी

८ असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः, सन्तुष्टाश्च महीभुजः।

—चाणक्यनीति ८।१८

असन्तोषी ब्राह्मण और सन्तोषी राजा ये नष्ट हो जाते हैं।



७. लोभाद्धर्मो विनश्यति । —महाभारत-शान्तिपर्व

लोभ से धर्म का नाश होता है ।

८. लोभात् क्रोध प्रभवति, क्रोधाद द्रोह प्रवर्तते ।
द्रोहेण नरक याति, शास्त्रज्ञोपि विचक्षण ॥
—भोजप्रबन्ध २

लोभ से क्रोध प्रकट होता है, क्रोध से द्रोह की प्रवृत्ति होती है और द्रोह से निपुण शास्त्रज्ञ भी नरक को प्राप्त हो जाता है ।

९. अहो ! लोभस्य साम्राज्य-मेकच्छत्र महीतले ।
—योगशास्त्र

आश्चर्य है ! जगत मे लोभ का एकछत्र राज्य चल रहा है अर्थात् न्यूनाधिक मात्रा मे सारा ही संसार इसमे फस रहा है ।

१० जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ ।
दो मासकय कज्जं, कोडिए विन निट्ठिय ॥
—उत्तराध्ययन ८।१७

ज्यो-ज्यो लाभ बढता है, त्यो-त्यो लोभ बढता है, लाभ से लोभ घटता नही प्रत्युत बढता ही है । देखो ! दो मासा सोने से होनेवाला कपिल ब्राह्मण का काम करोडो से भी नही हो सका ।

११ दी मोर दे गेट दि मोर दे वान्ट । —अग्रेजी कहावत

जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई । —रामचरितमानस

१२ गर्मी के बुखार में प्यास की तरह लाभ मे लोभ और अधिक बढता है ।

१३ ज्ञानी तापस सूर कवि, कोविद गुन-आगार ।
केहि की लोभ विडम्बना, कीन्हि न एहि ससार ॥
—रामचरितमानस

७ **लोभ-त्याग**

१ दुक्ख हयं जस्स न होइ लाहो।

—उत्तराध्ययन ३२।८

जिसके हृदय मे लोभ नही है, उसका समग्र दु ख नष्ट ही हो गया।

२. दिल से लोभ निकाल दें तो गले से जजीरे निकल जाए।

—जाविदान-ए-खिरद

३. आल कोवेट आल लूज। —अग्रेजी कहावत

अति लोभो न कर्तव्य ।

४ अगर तुम लोभ को हटाना चाहते हो तो तुम्हें उसकी मां अय्यासी को हटाना चाहिए।

—सिसरो



को भी मार डालता है।

५ कावेचस् मैन आर वैड स्लीपर्स। —अंग्रेजी कहावत

लोभी आदमी के आहार और निद्रा नहीं।

६. अर्थातुराणा न गुरुर्न वन्धु ।

—सुभाषितरत्न भाण्डागार १७६

धन के लोभी व्यक्ति न तो गुरु को देखते हैं और न स्वजन-बन्धुओं को ही देखते हैं ।

७ कीर्ति के लोभी-साधु यन्त्र-मन्त्र, डोरे-डाडे एव तेजी-मदी वताकर अपने साधुत्व को खो रहे हैं।

धन के लोभ मे फँसकर वेश्याएँ हारे जैसा अपना शरीर हर एक को सौंप रही है, ऐसे ही मास्टर, वकील, व्यास एव ज्योतिषी लोग धन के लिये अपना अमूल्य ज्ञान वेच रहे है।

८ मीठै के लालच मे ऐठो खावै। —राजस्थानी कहावत

९ सन् १९३१-३२ मे कांग्रेसियो की प्रभातफेरी मे जाने मे जेल होने के कारण मात्र पाच-सात आदमी रह गये। पतासे बाटने शुरू किये तो पुन ४० ५० की सख्या होने लगी।

१०. राज्य के लोभी औरंगजेब ने सूजा-दारा दोनो भाइयो को मरवाया एव पिता शाहजहाँ को कैद किया।

११. पानी अस्सी रुपयो के लोभवश वेदान्ती पडित वेश्या के हाथ से खाने को तैयार हो गए।

६९ क्षमा

१ क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्य, क्षमा भूतं च भावि च ।
क्षमा तप क्षमा शौच, क्षमयेद धृतं जगत् ॥
—महाभारत वनपर्व २९।३७

क्षमा ब्रह्म है, सत्य है, भूत और भविष्यत् है। क्षमा ही तप है और क्षमा ही शुद्धि है। क्षमा ने ही इस जगत् को धारण कर रखा है।

२. नरस्य भूषणं रूपं, रूपस्याभूषणं गुण ।
गुणस्य भूषण ज्ञान, ज्ञानस्याभूषणं क्षमा ॥ —क्षेमेन्द्र

नर का भूषण रूप है, रूप का भूषण गुण है, गुण का भूषण ज्ञान है और ज्ञान का भूषण क्षमा है।

३ क्षमया क्षीयते कर्म । —तत्त्वामृत

क्षमा से कर्मों का नाश होता है।

४ खतिएण जीवे परिसह जिणइ । —उत्तराध्ययन २९।४६

क्षमा से प्राणी परिषहों को जीतता है।

५ क्षमा के बिना जीवन रेगिस्तान है, प्रत्यक्ष जीवन में मैंने यह देखा है। —नेहरू

६. क्षमा गुणो ह्यशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा ।
—विदुर्नीति १।५४

(३) दुधारू गाय की लात,

(४) दवा की कटुता।

१२. सहन करना गुण भी है, शस्त्र भी।

१३ क्षमा शत्रौ च मित्रे च, यतीनामेव भूषणम्।
अपराधिषु सत्त्वेषु, नृपाणां सैव दूषणम्॥

—हितोपदेश ३।१७८

शत्रु मे और मित्र मे क्षमा करना यतियो का ही भूषण है। राजाओ के लिए अपराधि जनो मे वही क्षमा दोष है।



क्षमावान

११

१ यस्य क्षान्तिमयं शस्त्रं, क्रोधाग्नेरुपशामनम्।
नित्यमेव जयस्तस्य, शत्रूणामुदय कुत ॥
स शूर' सात्त्विको विद्वान्, स तपस्वी जितेन्द्रिय ।
येन क्षान्त्यादिखड्गेन, क्रोधशत्रुर्निपातित. ॥
—पद्मपुराण

जिसके पास क्रोध-अग्नि को शात करने वाला क्षमाशस्त्र है, उसकी सदा जय होती है। क्योकि वहाँ शत्रुओ का उदय ही नही होता। वही शूर है, बलशाली है, विद्वान है, तपस्वी एव जितेन्द्रिय है, जिसने क्षान्त्यादि खड्ग द्वारा क्रोध-शत्रु को नष्ट कर दिया।

२ क्रोधी तो कुढ-कुढ बलै, जिम-जिम उठै झाल।
क्षमावन्त मन मे खुशी, जाणै मिसरी पीवी गाल ॥
—राजस्थानी दोहा

३ क्षमा धर्म क्षमा यज्ञ, क्षमा वेदा. क्षमा श्रुतम्।
य एतदेव जानाति, स सर्वं क्षन्तुमर्हति ॥
—महाभारत वनपर्व २९।३६

जो क्षमा को धर्म, यज्ञ, वेद एवं श्रुत रूप मे जानता है वही क्षमा कर सकता है।

—स्थानाग ४।३।३१७

४ खतिसूरा अरिहंता।

अरिहन्त भगवान् क्षमा करने मे शूर होते है।

१२ असह्य बातें

१ सतर सौ मा औगणीस सौ नी भूल । —गुजराती कहावत

२. पसेरी मे पाँच सेर री भूल अने मण मे चालीस सेर को धोखो।
—राजस्थानी कहावत

३ सोना करता घडामण मोघु, रोटला करता य अथाणु वध्यु
—गुजराती कहावत

४ पाई नी भाजी ने टका नो वघार । " " "

५. छिदाम रो छाजलो टको गठाई रो । —राजस्थानी कहावत
० पईसरी डोकरी टको सिरमुडाई रो। " " "

६. एक गाडर साता रो सीर, पिउजी खावें नित की खीर ।
चोहटे बैठा छाग पुकारें, कहो सखि! अणख आवें क नहिं आवें?
● एक बलद जिणमें ही बाडो, पिउजी लदावें नितको टाडो ।
बलि बालद-बालद करता आवें, कहो सखि! अणख आवें
क नहिं आवें ?
● एक गेहूँ जिणमे ही मलियो, पिउजी खावें नितरो दलियो वले
ल्हापी ऊपर घी मंगावें कहो सखि! अणख आवें क नहिं आवें?
—मारवाड़ी सविता

७ मूद गधेडा म्हाय, पेन्नारी बाटी पटका ।
आ अण जुगतो आय, खटके चित्त मे राजिया ।

ने पूछा—क्या कीमत है ? उत्तर—दो रुपया । युवक ने दो टुकडे कर के पूछा—अब ? उत्तर—एक रुपया । युवक टुकडे करता ही गया एव तिरुवल्लुवर शान्त रहे । आखिर युवक पैर पकड कर माफी मागने लगा ।

—जैनदर्शन और संस्कृतिपरिषद् पृष्ठ २८

५. महात्मा ईसू को शूली पर चढाया गया, तब उसने प्रभु से प्रार्थना की—

"Forgive them father ! thay Know not what thay do"

(फॉरगिव देम फादर ! दे नो नॉट वाट दे डू)

अर्थात् हे प्रभो ! उन्हे क्षमा करो ! क्योकि वे नही जानते कि स्वय क्या कर रहे है ?

६. नीति का उपदेश करने पर महात्मा सोक्रेटीस को कैद करके जहर का प्याला पिलाने का हुक्म दिया गया तब क्रीटो ने कहा—भाग जाइए !

महात्मा—सरकार का कायदा तोडना ठीक नही ।

क्रीटो—हमे उपदेश दीजिए !

महात्मा—न्यायी कभी दुःखी नही होता, अन्यायी सुखी नही होता । अन्याय करने की अपेक्षा सहन करने मे अधिक लाभ है ।

● एक दिन उनकी स्त्री ने क्रुद्ध होकर बडबडाते हुए गूदन का कुंडा उनके सिर पर उडेल दिया । महात्मा ने हँसते हुए कहा—गरजने के पश्चात् मेघ बरसता ही है ।

१० **दयानन्दसरस्वती**—इन्हे आखिरी वक्त जब शीशा पिलाया गया तब ये समझ गये कि अब मैं नही बच सकूगा, अत मेरे निमित्त किसी को दु ख न हो, यों सोचकर जिसने उन्हे दूध मे शीशा पिलाया था उससे कहा—भाई ! अब तू यहाँ से भागजा अन्यथा मार दिया जाएगा।

११ **राजारणजीतसिंह**—किसी बालक के हाथ से राजा के सिर मे पत्थर लगा, सिपाही उसे मारने-पीटने लगे। राजा ने उसे मोती का हार देते हुए कहा—वृक्ष भी पत्थर के बदले फल-फूल देते है, मैं तो मनुष्य और मनुष्यों मे भी राजा हूँ।

१२ **आचार्यभिक्षु**—चर्चा करते समय एक व्यक्ति ने क्रुद्ध होकर भिक्षुस्वामी के सिर मे ठोना मारा। श्रावक गर्म होने लगे। स्वामीजी ने उन्हे रोकते हुए कहा—दो पैसो की हाडी को भी खरीदते वक्त मनुष्य बजाकर देखता है। क्या पता ? इसे भी गुरु बनाने होगे। बाद मे उस व्यक्ति ने समझकर गुरुधारणा की।

१३ वि स १९९३ का चातुर्मास पूर्ण करके आचार्य श्री तुलसी बीकानेर के रागडी-चौक मे होकर पधार रहे थे और हजारो श्रावक-श्राविकाएँ उनके साथ थे। स्थानकवासि-युवाचार्य श्री गणेशीलालजी ठीक उसी समय सामने से आ रहे थे और उनके श्रावको द्वारा 'हट जाओ' 'हट जाओ' के नारे लगाए जा रहे थे। सहनशील आचार्य श्री तुलसी स्वय

लोगो ने सीरे पर धूल डाल दी, फिर भी चौधरी ने गुस्सा नही किया। सबने क्षमा मागी।

१९. माषतुष–किसी अल्पबुद्धि मुनि को साथी हास्य मे पण्डित-जी कहने लगे। गुरु ने उस मुनि को 'मारुष-मातुष' सिखाया उसने भूलकर 'मापतुप' याद कर लिया। अब साथी मुनि उसे 'मापतुप' नाम से पुकारने लगे। मुनि शान्त भाव से निम्नलिखित भाव का चिन्तन करता हुआ केवलज्ञानी बन गया—

अचेतनमिद दृश्य - मदृश्य चेतनं तत.।
क्व रुष्यामि क्व तुष्यामि, मध्यस्थोऽहं भवाम्यत ।

दृश्यपदार्थ अचेतन है और चेतन-आत्मा अदृश्य है, अत किसपर रोष करू एवं किसपर तोष करू। मुझे तो मध्यस्थभाव मे रमण करना ही उचित है।

२० किसी ने एक पादरी महोदय से पूछा—आपमे सहनशक्ति कैसे आई ?

उत्तर मिला—ऊपर की ओर देखकर सोचता हूँ कि मैं तो वहाँ (मोक्ष) जाना चाहता हूँ, फिर यहाँ के व्यवहार मे मन क्यो बिगाड़ू ? नीचे की तरफ देखकर विचार करता हूं कि सोने-बैठने-उठने के लिए मुझे कितनी-क-जमीन चाहिए ? आस-पास देखने पर मन मे आता है कि लोग मेरे से भी अधिक दुःख सहन कर रहे है।

२१. मुहम्मदसाहब की तलवार की मूठ पर ये चार वाक्य खुदे

शर्मिन्दा होकर चरणों में झुक गया।

२४ एकनाथजी एकबार नदी से स्नान करके आ रहे थे। एक मुसलमान ने शिर पर थूक दिया। वापस जाकर नहाये। इस प्रकार एक दिन में १०८ बार नहाना हुआ। आखिर वह मुसलमान चरणों में गिरकर क्षमा मांगी। गुरुजी बिल्कुल शान्त थे।

२५. जालोर की धर्मशाला में खड़े हुए सन्त मनोहरलालजी ने ऊपर से थूका। नीचे चम्पाबाई पर पड़ा। उसने खूब गालियाँ दी। बदले में उन्होंने उसे पुत्र होने का वरदान दिया—

चम्पा चुपकी नार ही, दी संता ने गाल।
होसी जीतो-जागतो, चिरजीवी तोहि लाल॥

२६. सुभाषबाबू भाषण कर रहे थे। किसी व्यक्ति ने उन पर एक जूता फेंका। उन्होंने कहा—"जिस सज्जन ने एक जूता फेंका है वे दूसरा जूता फेंकने की कृपा करदें ताकि मेरे पहनने के काम आ जाय।"



अविनय-सम्बन्धी पाप मेरे लिए निष्फल हो, अर्थात् उसकी मुझे माफी मिले। (गुरु से क्षमायाचना करते समय उपरोक्त पाठ बोला करते हैं।)

आयरिए उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि॥

सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करीअ सीसे,
सव्वे खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहय पि।

३. सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म-निहिअनिअचित्तो,
सव्वे खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि।

—संस्तारकप्रकीर्णक गाथा १०४-१०५-१०६

आचार्य,उपाध्याय, शिष्य, सार्धमिक, कुल और गण के प्रति मैंने जो क्रोधादि कषायपूर्वक व्यवहार किया है, उसके लिए मैं मन-वचन-कर्म से क्षमा चाहता हूं।

मैं नतमस्तक हो, हाथ जोडकर पूज्यश्रमणसंघ से अपने सभी अपराधों के लिए क्षमा चाहता हूँ और उनके अपराध भी मैं क्षमा करता हूं।

धर्म से स्थिरबुद्धि होकर मैं सद्भावपूर्वक सब जीवों से अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगता हूँ और उनके सब अपराधों को मैं भी सद्भावपूर्वक क्षमा करता हूँ।

४. जं जं मणेण बद्धं, ज ज वाचाए भासिअं पाव।
ज ज काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कड तस्स॥

—मरणसमाधि-प्रकीर्णक गाथा ३३६

मन-वचन और शरीर से मैंने जो पाप किये हैं, वे मेरे सब पाप मिथ्या हों।

अपने जीवन का श्रेष्ठ-रस चखा ही नही ।

१० अगर तू अपनी आहुति देवता को देने आया है और पडौसी का अनवनाव याद आगया तो आहुति को मन्दिर की चौकी पर रखकर पहले जाकर पडौसी से क्षमा माग ।

—बाइबिल

११ पृथ्वी आदि से क्षमा मागना तो ठीक ही है, किन्तु उन मुनीमो-नौकरो से क्षमा माँगो, जिनसे अधिक काम करवाया हो, उन ग्राहको से क्षमा मागो, जिनको खराब माल दिया हो, पशुओ से क्षमा माँगते समय ख्याल करो कि तुम्हारे जूते एव कपडे अहिंसक है या हिंसक ? विवाहादि के समय किए हुए अपव्यय का पश्चात्ताप करो। जिसके द्वारा तुम समाज मे इजिन जैसे बनकर डिब्बो जैसे गरीबो को हैरान किया है। मनोवध घी-दूध-मिठाई खाने पर भी तुम्हारे मे स्निग्धता, उज्ज्वलता और वचन की मधुरता नही आई, इसके लिए खेद प्रकट करो तथा दिनभर ज्ञानेन्द्रियो से पाप कर रहे हो, उनसे भी क्षमा मागो।

१२ किसी ने पूछा—कसूरवार को कितनी दफा माफ करूँ ? मुहम्मद साहब चुप रहे। फिर पूछा तो आप बोले—हर रोज सत्तर दफा।

—तिरमजी

१३. पुढवी-दग-अगणि-मारुय, एक्केक्के सत्त जोणिलक्खाओ।
वण पत्तेय-अणंते, चउदस - जोणिलक्खाओ ॥१॥

१५ शम-शान्ति

१ ज्ञानस्य परिपाकोय स शम परिकीर्तित । —ज्ञानसार

ज्ञान के परिपक्वफल का नाम शम-शान्ति है ।

२. निग्रहो वाह्यवृत्तीना, दम इत्यभिधीयते —अपरोक्षानुभूति

वाह्यवृत्तियो का निग्रहकरना **दम** कहलाता है ।

३. शमो मन्निष्ठताबुद्धि-र्दम इन्द्रियसयम ।
तितिक्षा दु खसमर्पो, जिह्वोपस्थजयी धृति ॥
दण्डन्यास पर दान, कामत्यागस्तप स्मृतम् ।
स्वभावविजय शौर्यं, सत्यं च समदर्शनम् ॥

—भागवत ११।१६।३६-३७

भगवान मे बुद्धि लगाना **शम** है । इन्द्रिय-सयम का नाम **दम** है । दु ख सहना **तितिक्षा** है । जिह्वा और जननेन्द्रियो पर विजय पाना **धृति** है । किसी से वैर नही करना, सबको अभय देना **दान** है । कामनाओ को त्यागना **तप** है । वासनाओं को जीतना **वीरता** है । और सत्यस्वरूप परमात्मा के दर्शन करना **सत्य** है ।

४. शांति रख दिल मे हमेशा, छोड मन मर्याद को ।
नर्द लोहा काट देता, है गरम फौलाद को ॥

५. शान्ति और मुक्ति का मार्ग—

(१) अपनी इच्छा की अपेक्षा दूसरो की इच्छा पालन

हुई चलती हैं। —हरिभाऊ उपाध्याय

१३ मनुष्य की शान्ति की कसौटी समाज मे ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नही। —गाधी

१४ यदि शान्ति सम्मान के साथ नही रह सकती तो वह शान्ति नही कहला सकती।

१५ एक व्यक्ति ने एक साधु से शान्ति का रास्ता पूछा। साधु ने अपना मुह फेर लिया। वह उधर जा खडा हुआ, फिर मुह फेरा। तात्पर्य यह था कि भौतिक सुखो से मन मोडने पर ही शान्ति मिल सकती है।



१७ शान्त

१ विहाय कामान् य सर्वान्, पुमाँश्चरति नि स्पृह ।
निर्ममो निरहकार, स शातिमधिगच्छति ॥

—गीता २।७१

जो व्यक्ति शब्दादि समस्त विषयो को त्यागकर नि स्पृह रहता है तथा ममत्व और अहंकाररहित है, वही शान्ति को प्राप्त होता है।

२. जो न तो लोगो को खुश करने की लालसा रखता है, न उनके नाखुश होने से डरता है, वही शाति का आनन्द लेता है। —कैम्पिस

३. पहले स्वयं शात बन ! तभी औरो मे शान्ति का सचार कर सकता है। —थामसकेम्पी

४. हे प्रभु ! मुझे अपना शाति का यन्त्र बना ! ताकि मैं जहाँ घृणा है, वहाँ प्रेम ला सकू, जहाँ आक्रमण है, वहाँ क्षमा रख सकू, जहा मतभेद है, वहा मेल-मिलाप कर सकू, जहा भूल है, वहा सचाई ला सकू, जहा अन्धकार है, वहा प्रकाश कर सकू और जहां उदासी है, वहा प्रसन्नता ला सकू।

५ नवे वयसि य शान्त, स शान्त इति मे मति ।
धातुषु क्षीयमाणेषु, शाति कस्य न जायते ॥

—भागवत

१८ समता

१ सम होना माने अनन्त होना, विश्वमय होना।

समग्र विश्वजीवन पर आत्मा का प्रभुत्व स्थापन करने की पहली सीढी का नाम समता है। —अरविन्दघोष

२ समभाव ही समस्त कल्याण का पाया है। —विवेकानन्द

३ जब अन्तःकरण मे अक्षुब्ध-शान्ति सदैव विराजमान रहे, तब समझना चाहिए कि समता प्राप्त हो गई।

—अरविन्दघोष

४ समय सया चरे। —सूत्रकृताग २।२।३

सदा समता का आचरण करना चाहिए।

५ समता सव्वत्थ सुव्वए। —सूत्रकृतांग २।३।१३

सुव्रती को सब जगह समता रखनी चाहिए।

६ न यावि पूयं गरहं च सजए। —उत्तराध्ययन २१।२०

मुनि पूजा और निन्दा-दोनो की चाह न करे अर्थात् समभाव रहे।

७ सेयवरो वा, आसवरो वा, बुद्धो वा, तहेव अन्नो वा।
समभाव - भाविअप्पा लहइ मोक्खं न संदेहो॥

—हरिभद्रसूरि

१६ क्रोध

क्रोध से हानि

१ कोहो पीइ पणासेइ। —दशवैकालिक ८।३८

क्रोध प्रेम का नाश करता है।

२. अहे वयइ कोहेण। —उत्तराध्ययन ६।५४

क्रोध से आत्मा नीचे गिरती है।

३ कोहंधा निहणंति, पुत्तं मित्तं गुरुं कलत्तं च।

क्रोधान्ध व्यक्ति पुत्र, मित्र, गुरु और स्त्री को भी मार डालता है।

४ कोहेण अप्पं डहति परं च, अत्थं च धम्मं च तहेव कामं।
तिव्वंपि वेरंपि करेंति कोधा, अधरं गतिं वावि उविंति कोहा॥
—ऋषिभाषित ३६।१३

क्रोध से आत्मा 'स्व' एवं 'पर' दोनों को जलाता है, अर्थ-धर्म-काम को जलाता है, तीव्र वैर भी करता है तथा नीचगति को प्राप्त करता है।

५. भस्मी भवति रोषेण, पुंसां धर्मात्मकं वपुः। —शुभचन्द्राचार्य

क्रोध से मनुष्यों का धर्मप्रवृत्तिरूप शरीर जल जाता है।

६ पैशुन्यं साहसं द्रोह-मीर्ष्याऽसूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं, क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः॥
—मनुस्मृति ७।४८

२० क्रोध के दुर्गुण

१ क्रोधो मूलमनर्थाना, क्रोध ससारवर्धन ।
धर्मक्षयकर क्रोधस्तस्मात् क्रोध विवर्जयेत् ॥

—पद्मपुराण

क्रोध अनर्थ का मूल हैं, ससार को बढानेवाला है और धर्म का क्षय करनेवाला है अत क्रोध को छोडना चाहिए ।

२. क्रोध शमसुखार्गला । —योगशास्त्र

क्रोध, शान्ति और सुख मे रुकावट डालनेवाला है ।

३ क्रोधो हि शत्रु प्रथमो नराणाम् । —माघकवि

क्रोध मनुष्यो का सबमे बडा शत्रु है ।

४ क्रोध प्राणहर शत्रु·, क्रोधो मित्रमुखो रिपु ।
क्रोधो ह्यसिर्महातीक्ष्ण , सर्व क्रोधोऽपकर्षति ॥

—वाल्मीकिरामायण ७५।६ प्र० २।२१

क्रोध प्राणो को लेनेवाला एक मित्र के रूप मे जानेवाला शत्रु है । क्रोध अत्यन्त तीक्ष्ण-तलवार के समान और सबकी अवनति करनेवाला है ।

५ हरत्येकदिनेनैव, ज्वरं पाण्मासिक बलम् ।
क्रोधेन तु क्षणे नैव, कोटिपूर्वार्जित तप ॥

एक दिन का ज्वर छ महीने का बल हरण करता है, किन्तु क्षण-

२१ क्रोध की उत्पत्ति आदि

१. चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ति सिया, तजहा-खेत्त पडुच्च, वत्थु पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च।

—स्थानाङ्ग ४।१।२४६

चार कारणो से क्रोध की उत्पत्ति होती है—

(१) **क्षेत्र**—नरकादि आश्रित।

(२) **वस्तु**—घर अथवा सचित्त-अचित्त-मिश्र वस्तु आश्रित।

(३) **शरीर**—कुरूपादि आश्रित।

(४) **उपाधि**—उपकरण आश्रित।

२ **क्रोध उत्पत्ति के पाँच कारण—**

(१) **दुर्वचन**—दुर्योधन के दुर्वचन से श्रीकृष्ण को, दुर्मुख दूत के दुर्वचन से प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को, गोशालक के दुर्वचन मे **वेसियायन** वालतपस्वी को, खाती के दुर्वचन मे सिंह को एव वीरवल के दुर्वचन से वेगम को क्रोध उत्पन्न हुआ।

(२) **स्वार्थपूर्ति मे बाधा**—इसके कारण रावण को जटायु पर, विभीषण एवं मन्त्रियो पर तथा सोमिलब्राह्मण को गजसुकुमाल मुनि पर क्रोध उत्पन्न हुआ।

(३) **अनुचितव्यवहार**—चुल्लनीमाता पर ब्रह्मदत्त चक्र-

ट्ठिए, तदुभयपइट्ठिए, अपइट्ठिए। —स्थानाङ्ग ४।१।२४९

क्रोध चार प्रकार का है —

१- **आत्म-प्रतिष्ठित**-अपनी गल्ती पर होनेवाला।

२- **पर-प्रतिष्ठित**-दूसरे के निमित्त से होनेवाला।

३- **तदुभय-प्रतिष्ठित**-दोनो के निमित्त से होनेवाला।

४- **अप्रष्ठित**-निमित्त के बिना उत्पन्न होनेवाला।

८ 'तुलसी' इस संसार मे, गाडा सताइस रीस।
सात गाडा ससार मे, वैराग्या मे बीस॥

९. मुनीना कोपश्चाण्डाल । —महाभारत पर्व १२

मुनियो के लिए क्रोध चाण्डाल के समान है। (धोवी और तपस्वी मुनि की कथा)

१० छुआछूत का वहमी ब्राह्मण नदी पर भजन कर रहा था। निकट ही एक भगी कपडे धो रहा था। कुछ पानी के छींटे ब्राह्मण के ऊपर पड गए। उसने क्रुद्ध होकर भंगी को खूब पीटा और फिर स्नान करने लगा। इधर भगी भी नहाने लगा।

ब्राह्मण ने पूछा—तू क्यो नहा रहा है?

भगी ने कहा—मैं चाण्डाल थोडे ही हूँ! तुम्हारे हृदय के क्रोधरूपी महाचाण्डाल ने मुझे छू लिया है। इसलिए स्नान कर रहा हूँ।

ब्राह्मण शर्मिन्दा हो गया।

८ क्रोध के इन्जिन को रोकना सीखिए अन्यथा ड्राइवर-पुत्रवत् मरना पडेगा। —जीवनसौरभ २०

९ अपकारिणि चेत् कोप कोपे कोपं कथन ते ?
—याज्ञवल्क्योपनिषद् २९

यदि तुम अपकार (बिगाड) करनेवाले पर क्रोध करते हो तो क्रोध पर क्रोध क्यो नही करते ?

१० नित्य क्रोधात्तपो रक्षेत्। —महाभारत शान्तिपर्व

तपस्वी को अपने तप को क्रोध से सदा रक्षा करते रहना चाहिए।

११ क्रोध करने मे विलम्ब करना विवेक है और शीघ्रता करना मूर्खता। —वाइविल

१२ क्रोध का सबसे वडा इलाज विलम्ब है। —सेनेका

१३. अमरीका का एक प्रोफेसर बहुत क्रोधी था। दोस्त की सलाह से उसने नौकर से कहा—मुझे गरम देखो तब खाली लिफाफा दिखा दिया करो! बस, जब भी वह क्रुद्ध होता, नौकर खाली लिफाफा लाकर सामने रख देता। ऐसा करने से क्रमश आदत छूट गई।

१४. क्रोध उठे तब उसके नतीजो पर विचार करो।
—कन्फ्यूसियस

१५. गुस्से मे हो तो बोलने से पहले दस तक गिनो, यदि ज्यादा गुस्सा हो तो सौ तक गिनो!

१६ मुहम्मद साहब ने कहा—गुस्सा आने के समय बैठ जाओ, फिर भी शान्त न हो तो लेट जाओ।

६ घमण्डी का कोई खुदा नही, ईर्ष्यालु का कोई पडौसी नही और क्रोधी खुद का भी नही। —विशपहॉल

७ जे कोहृदसी से माणदंसी। —आचाराङ्ग ३।४

जिसके हृदय मे क्रोध है, उसके हृदय मे मान भी अवश्य है।

८ अतिरोपणश्चक्षुष्मानप्यन्ध एव जन। —हर्षचरित

अतिक्रोधी मनुष्य आंख होते हुए भी अन्धा ही होता है।

९ An angry man opens his Mouth and Shuts his eyes

एन एगरी मैन ओपन्स हिज माउथ एण्ड शटस् हिज आईज्। —केटो

क्रोधी मनुष्य अपना मुह खोलकर आँखें मीच लेता है।

१० कोहधा निहणति, पुत्त मित्तं गुरु कलत्तं च।

क्रोधान्ध व्यक्ति-पुत्र, मित्र, गुरु और स्त्री को भी मार डालता है।

११ राजस्थान के 'वाग' गाँव में भिखारी को भीख न देने के अपराध मे क्रुद्ध होकर एक चमार ने अपनी स्त्री को कुल्हाडे से काट डाला। —हिन्दुस्तान १७ जून १९६२

१२ न कस्यापि क्रुद्धस्य पुरस्तिष्ठेत्। —नीतिवाक्यामृत ७।७

क्रुद्ध व्यक्ति के सामने खडे मत रहो। फिर चाहे वह कोई भी हो।

१३. शिष्टाय दुष्टो विरताय कामी, निसर्गतो जागरुकाय चोर-।
धर्मार्थिने क्रुध्यति पापवृत्ति, शूराय भीरु कवये कविश्च।

शिष्ट से दुष्ट, त्यागी से कामी, जागते हुए से चोर, धर्मिष्ठ से पापी—शूरवीर से डरपोक तथा कवि के साथ कवि—ये स्वभाव से ही क्रोध किया करते है।



"अस्साम अलेकुम्" ।

जवाव मे उनकी बीवी ऐशाहशिद्दी ने कहा—

"वालेयकं अस्साम" ।

तव मुहम्मद ने कहा वुराई का जवाव भलाई से दो और ऐसे कहो—

"वालेयकु अस्सलाम" ।

यानि तुम सलामत रहो !

६. जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ऊपर झेल लेता है, वही दूसरे को क्रोध से वचा सकता है । —सुकरात



एक दिन वे दोनो नाव मे बैठ कर कही जा रहे थे। तूफान आने से नाव डगमगाने लगी। एक मित्र ने पूछा-भाई! नाव पहले किस तरफ डूबेगी? नाविक ने कहा-सामने की तरफ से। मित्र ने सोचा, वहुत अच्छा! मेरे से तो वह पहले ही मरेगा। (वैर मनुष्य को कितना नीचे गिरा देता है।)

७. कुम्हार—कुम्हारी ने को नावडँनी जणा गधी रा कान मरोडँ।

८. वाड मे मूत्या किसो वैर निकलै।

९. वावी कूट्या साप को मरैंनी। —राजस्थानी कहावत

१० कीदृशस्तृणानामग्निना विरोध.! —मुद्राराक्षस-नाटक

अग्नि के साथ तृणो का विरोध कैसा! अर्थात् चल नही मकता।

११ समुद्र मे रहकर मगरमच्छ से वैर नही चल सकता।

—हिन्दी कहावत



६ विरोध नोत्तमैर्गच्छे-न्नाधमैश्च सदा बुधै ,
विवाहश्च विवादश्च, तुल्यशीलैर्नृपेष्यते । —विष्णुपुराण

राजन् ! उत्तम तथा अधम व्यक्तियो से विरोध मत करो । क्योकि विवाह और विवाद समान स्वभाववालो का ही इष्ट है ।

७ नहि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचन ।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो ॥ —धम्मपद १।५

इस ससार मे वैर से वैर कभी शान्त नही होते—यह नियम सदा से चला आया है । अवैर अर्थात् मैत्रीभाव से ही वैर शान्त होते हैं ।



७ लोभियो का शत्रु याचक है, मूर्खों का शत्रु शिक्षा देनेवाला है, कुलटा स्त्रियो का शत्रु पति है और चोरो का शत्रु चन्द्रमा है ।

८ ऋणकर्ता पिता शत्रु-र्माता च व्यभिचारिणी ।
भार्या रूपवती शत्रु, पुत्र शत्रुरपण्डित ॥
—चाणक्य ६।१०

ऋण करनेवाला पिता, व्यभिचारिणी माता, रूपवती स्त्री और मूर्ख पुत्र—ये चारो शत्रु हैं ।

९ मृग-मीन-सज्जनाना, तृण-जल-संतोषविहितवृत्तीनाम् ।
लुब्धक-धीवर-पिशुना, निष्कारणवैरिणो जगति ॥
—भर्तृहरि-नीतिशतक ६१

क्रमश , तृण,जल और सतोष से जीवन - निर्वाह करनेवाले मृग, मत्स्य और सज्जन पुरुषो के साथ शिकारी, मच्छीमार एव दुर्जन-ये तीनो विना मतलब ही वैर रखते हैं ।

१० सीधै नै सो दु ख, सूधै पर दो चढै ।
सुहाली खेजडी पर सै चढै ।

११ गाय घास स्यू भायला करै तो खावै काई ।
—राजस्थानी कहावतें



८ जातमात्र न य शत्रु, व्याधि च प्रशमं नयेत् ।
महाबलोपि तेनैव, वृद्धि प्राप्य स हन्यते ॥
—पञ्चतन्त्र १।२६५

जो पैदा होने के साथ रोग और शत्रु को नही दबाता, वह चाहे महाबली भी क्यो न हो, बढे हुए रोग एवं शत्रु से मारा जाता है।

९ शत्रुमुन्मूलयेत् प्राज्ञ-स्तीक्ष्ण तीक्ष्णेन शत्रुणा ।
व्यथाकर सुखार्थाय, कण्टकेनैव कण्टकम् ॥
—पञ्चतन्त्र ४।१६

प्राज्ञपुरुषो को कांटे से कांटे की तरह शत्रु से दु खदायी शत्रु का उन्मूलन कर देना चाहिए ।

१० ताजा खतर न निहीवर दुश्मन जफर नयाबी। —पारसी क०

जान खतरे मे डाले विना दुश्मन नही जीता जाता ।

११ अनुलोमेन बलिनं, प्रतिलोमेन दुर्जनम् ।
आत्मतुल्यबल शत्रु, विनयेन बलेन वा ॥
—चाणक्यनीति ७।६

बलिष्ठ शत्रु को अनुकूलव्यवहार से, यदि दुर्जन हो तो प्रतिकूल-व्यवहार से और समान शत्रु को विनय अथवा बल से जीतना चाहिए ।

१२. व्यसने योजयेत् शत्रु, मित्र धर्मेण योजयेत् ।
सुकुले योजयेत्कन्या, पुत्र विद्यासु योजयेत् ॥
—चाणक्यनीति ३।२

शत्रु को व्यसन कष्ट मे, मित्र को धर्म मे, कन्या को सकुल मे और पुत्र को विद्याध्ययन मे लगाना चाहिए ।

३० वैर के बदले

१ **स्कन्दक ऋषि**—काचर छीलकर खुश होने के बदले स्कन्दक ऋषि को अपनी खाल खिंचवानी पडी।

२ **गजसुकुमाल**—क्रोधवश बच्चे के सिर पर गर्म रोटी डालने के बदले के गजसुकुमाल को सिर पर धधकते अगारे झेलने पडे।

३ **भगवान् महावीर**—शय्यापाल के कानो मे शीशा डलवाने के कारण भगवान महावीर के कानो मे कीले लगाई गईं।

४ **श्रेणिकराजा**—ऋषि को भिक्षा देने मे वेपरवाही होजाने से सम्राट् श्रेणिक को कैद मे रहना पडा और जहर खा-कर मरना पड़ा।

५ **पन्द्रह हजार**—नाभा (पजाब) के निकट पन्द्रह हजार रुपयो के लिए एक व्यापारी ने अपने साथी को मार दिया। वह उसी का पुत्र होकर १८-२० साल जीवित रहा। मरते समय बोला—पिताजी! "मैं वही हू" पिता को भी ज्ञान हो गया एव वह सन्यासी बन गया।

(नाभा निवासियो मे श्रुत)

६ **ऊंटवाला ब्राह्मण**—नागोर जिला के "कूदसू" गांव के गनपतसिंह जी ठाकुर ने ऊंट एव जेवर के लिए ससुराल मे

९ चमार की सुई ने मना करने पर भी चमडे को बीधा, बस, वह जूता बन कर सदा के लिए काँटो को तोडने लगा एव वैर का बदला लेने लगा। —लोकोक्ति

१० महमूदगजनी जब सोमनाथ की मूर्ति तोडने लगा, तब उसमे लिपटे एक पुजारी ने उसे रोका, नही माना। पुजारी को मारा एव मूर्ति तोडी। उसका कहना था मैं बुत-फरोस (मूर्ति बेचनेवाला) न बनकर बुत-शिकन (मूर्तिभञ्जक) कहलाऊँगा। फिर ब्राह्मणो ने मार्ग-दर्शको से मिलकर उसे रण मे भटकाया।



७ सुरम्यान् कुसुमान् दृष्ट्वा यथा सर्व प्रसीदति।
प्रसन्नानपरान् दृष्ट्वा, तथा त्व सुखमाप्नुया ॥
—रश्मिमाला ८।७

सुन्दर फूलो को देखकर जैसे सब कोई प्रसन्न होते हैं। ऐसे ही दूसरो को प्रसन्न देखकर तू भी सुख का अनुभव कर।

८. लोगो के बीच बडप्पन दिखाना छोड दे तो मत्सर (ईर्ष्या) रुकेगा। —ताओउपनिषद्-३



८ लक्ष्मी ईर्ष्यालु के पास नहीं रहती। उसे अपनी बहन दरिद्रता के हवाले कर देती है। —तिरुवल्लुवर

९ वह फूल, जो अकेला है, उसे कांटों से रक्षा करने की क्या जरूरत है, जो तादाद में बेसुमार है। —टैगोर

१० आज दुनियां दूसरों का मुख नहीं देख सकती। यदि एक व्यक्ति को सरकार की तरफ से पैरों में सोना आदि सम्मानसूचक वस्तु अथवा कोई पद मिल जाता है तो दूसरे जलने लगते है। यदि एक व्यापारी कुछ कमा लेता है तो पड़ोसी जल-भुन कर राख बन जाता है तथा यदि जेठानी-देवरानी में से किसी एक का जेवर चोरी चला जाता है तो वह रोती है—हाय! हाय! इसका क्यों रह गया। —उपदेश सुमनमाला के आधार पर

११ अत्तार गुलाब के फूलों को खरल में पीस रहा था। दार्शनिक ने पूछा—क्या अपराध हो गया है?

फूल ने कहा—दुनियां ईर्ष्यालु है, उसे हमारा हँसना-मुस्कराना देखा नहीं जाता, किन्तु हम तो जिन्दे भी खुशबू दे रहे थे और मरकर (इत्र बनकर) भी देते रहेंगे।



तारीफ करते-करते सारे लड्डू खा गए।

दूसरे दिन वडी ने दाल मे एक मुट्ठी नमक डाल दिया स्वामी जी ऐसी दाल कभी नहीं खाई, यो कहते हुए सारी दाल पी गए। फिर ठहरने का आग्रह करने पर वोले मुझे जान से मारेगी क्या ?

३ दो पडित एक सेठ के यहाँ मेहमान वने। आपसी द्वेपवश दोनो ने एक-दूसरे को **बैल** एव **गदहा** कहा। सेठ ने दोनो के आगे खाने के लिए **घास** और **भूसा** रखा।

४ **राजा-मत्री का संवाद—**

राजा—मेरी हथेली मे वाल क्यो नही ?

मन्त्री—दान देते-देते घिस गए।

राजा—तेरी हथेली मे क्यो नही ?

मन्त्री—लेते-लेते घिस गए।

राजा—इन सभासदो की हथेली मे क्यो नही ?

मन्त्री—कुछ न मिलने से हाथ मलते-मलते घिस गए।

५ शिव—भक्त ! मैं प्रसन्न हूँ, जो तेरी इच्छा हो माग ले, किन्तु ध्यान रहे जो तुझे प्राप्त होगा तेरे पडोसी को उससे दूना।

भक्त—(ईर्ष्या वश) तब तो मेरी एक आँख फोड दीजिए।

कहावतें—

१. परा दुःखरा दुबला थोडा, पराये सुख दुबला घणा।

—राजस्थानी कहावत

कलह

१ अहिगरण न करेज्ज पडिए । —सूत्रकृताग २।२।१६

पडित पुरुष को कलह नही करना चाहिए ।

२ ला त जलिमून व ला तु जल मून० ।

—कुरान सूरा २, आयत २७६

आपस मे न झगडो । सन्तोष करो ।

३ व ला तफर्रकू ऽ

—कुरान सूरा ३, आयत १०३

फूट न डालो ।

४ "Do not throw oil in the fire,,

डु नॉट थ्रो आइल इन दी फायर ।

—अग्रेजी कहावत

आग मे पूला न डालो ।

५ व अस ्लहउ जात बैनिकुम् . ,

—कुरान सू० ८ आ. १

आपस मे सुलह करो ।

६ व ला त.क्तुलूऽऽ अन्फ ुसकुम ,

—कुरान सू० ४ आ २६

आपस मे खून न करो ।

कलह से हानि

१ कलहान्तानि हर्म्याणि, कुवाक्यान्त च सौहृदम् ।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि, कुकर्मान्त यशो नृणाम् ।।
—पञ्चतन्त्र० ५।७३

'कलह' घर कुटुम्ब का, 'कुवचन' मित्रता का, 'कुराजा' राष्ट्र का और 'कुकर्म' यश का नाश करनेवाला होता है।

२ जायते घृष्यमाणाद् हि, दहनश्चन्दनादपि ।
—त्रिषष्ठि० २।२

घर्षण करने पर चन्दन से भी अग्नि उत्पन्न होती है।

३ अतिसय रगड करे जो कोई, अनल प्रगट चन्दन से होई ।।
—रामचरितमानस

४ पति के झगडे का गुस्सा पत्नी ने अपने बच्चो मे निकाला। उनमे से तीन लडके और एक लडकी नीचे कमरे मे सोए हुए थे। जिनकी आयु दो से पाँच वर्ष की थी। क्रोध मे पागल हुई माता ने उन चारो को गोली से मार डाला।
(मिडलैण्ड पेन्सील्वानिया १७ जून १९६४)
—हिन्दुस्तान १३ जून १९६४ से

५ सद्गृहस्थो के यहाँ कलहरूपी बीज का वपन हुआ तो समझो। वहाँ से शान्ति, सुलह और आनन्द शीघ्र ही

६ कलहकर्त्ता

१ कलहकरो असमाहि करे। —दशाश्रुत-१

कलह करनेवाला असमाधि को उत्पन्न करनेवाला है।

२ अविओसिए धासति पावकम्मी। —सूत्रकृतांग १३।५

कलह मे संलग्न पापकर्मी दुःख का ही भागी होता है।

३. न स्रेधन्तं रयिर्नशत्। —ऋग्वेद ७।३२।२१

कलह करनेवाला व्यक्ति लक्ष्मी को प्राप्त नहीं होता।

४ कलङ्केन यथा चन्द्रः क्षारेण लवणाम्बुधिः।
कलहेन तथा भाति, ज्ञानवानपि मानवः।

ज्ञानी व्यक्ति यदि कलह करनेवाला हो तो उसकी कलंकयुक्त चन्द्र से या क्षारतायुक्त लवणसमुद्र से तुलना की जाती है।

५ वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणेत्ति वुच्चई।

—उत्तराध्ययन १७।१२

साधु यदि विग्रह एवं कलह में रत हो तो वह पापी कहलाता है।

६ कलहडमरवज्जिए सुविणीएत्ति वुच्चई।

—उत्तराध्ययन ११।१३

कलह और जीवहिंसा को वर्जनेवाला व्यक्ति सुविनीत होता है।

७ कलगावै रल्या, आवै ऊजनन्या। —राजस्थानी कहावत

७ पैशुन्य (चुगली)

१ पैशुन्य परोक्षे सतोऽसतो वा दोषस्योद्घाटन, परगुणासहनतया दोषोद्घाटन वा ।

पीठ पीछे सत् या असत् दोष को प्रकट करना अथवा दूसरे के गुणो को न सह सकने के कारण उसका दोष दिखलाना 'पैशुन्य' (चुगली) कहलाता है ।

पैशुन्यनिषेध—

२. पिट्ठिमस न खाइज्जा । —दशवैकालिक ८।४७

पीठ पीछे किसी के दोषो का कीर्तन मत करो ।

३ व ला यग्तब बा'दकुम् बादन् । —कुरान० ४९।१२

तुममे से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा न करे ।

४. सर्वत्र प्रविशेहि नत् प्रियसखे ! पैशुन्य-शून्य मन ।

—[illegible]प्रकरण

प्यारे मित्र ! अपने मन को सभी जगह पैशुन्य (चुगली) से मुक्त बनाओ ।

५ वर प्राणत्यागो न च पिशुनवाक्येष्वभिरुचि ।

—हितोपदेश १।९६७

चुगली मे रस लेने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है ।

१ ग्रन्थ सूची

अङ्गुत्तर निकाय
अंगिरास्मृति
अग्निपुराण
अथर्ववेद
अर्थशास्त्र
अध्यात्मसार
अध्यात्मोपनिषद्
अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका
अनुयोग द्वार
अपरोक्षानुभूति
अभिधम्मपिटक
अभिधानराजेन्द्र
अभिधानचिन्तामणि
अभिज्ञान शाकुन्तल
अमितगति श्रावकाचार
अमृतध्वनि
अमर भारती (मासिक)
अवेस्ता
अत्रिस्मृति
अष्टांग हृदय-निदान
आगम और त्रिपिटक एक अनुशील
आचाराङ्ग सूत्र
आर्थिक व व्यापारिक भूगोल
आप्त-मीमांसा
आत्मानुशासन
आवश्यकनिर्युक्ति
आवश्यक मलयगिरि
आवश्यक सूत्र
आत्म-पुराण
आत्मविकास
आतुर प्रत्याख्यान
आपस्तम्बस्मृति
आबा जद्दी मुर्यष्त
औपपातिक सूत्र
इतिहास समुच्चय
ईशोपनिषद्
इस्लामधर्म
इष्टोपदेश
ईश्वरगीता
उत्तरराम चरित्र

६. दुनिया मे निन्दा जैसा कोई रस नही है, लेकिन वह पर-निन्दा सुनने मे है, अपनी सुनने मे नही।

७ सातो सागर मे फिरा, जम्बूद्वीप दे पीठ,
निन्द पराई ना करे, सो मैं विरला दीठ। —कबीर

८ अहिअत्थ निवारितो, न दोसं वत्तुमरिहमि !
—उत्तराध्ययन निर्युक्ति २७६

बुराई को दूर करने की दृष्टि से यदि आलोचना की जाये तो कोई नही है।



मैंने नमाज मे उनकी शिकायत खुदा से की।

मुहम्मद ने कहा—नमाज मे किसी की निन्दा (शिकायत) नही की जा सकती। तू ने यह धर्मविरुद्ध काम किया है।

६ यूरोप मे **पेडलोक सोसाइटी** (निन्दानिपेधक कमेटी) है। उसका सदस्य न तो निन्दा करता है और न सुनता है। सदस्य वनते समय तीन वार ताला खोलकर वन्द करना होता है। मतलव यह है कि आज से मैं **मन-वचन-कर्म से किसी की निन्दा नहीं करूगा।**



६ निन्दक मेरा पर उपकारी, दादू निन्दा करे हमारी।

७ तुम जिसे ढाई सेर कहते हो, उसे कोई पौने दो सेर एव कोई पौने चार सेर भी कह देता है, क्योकि देश-देश के विभिन्न तोल हैं। कही ३२ तोले का सेर है तो कही ४०, ४४, ५६, ६०, ८०, १०० एव १२० तोले का भी सेर है। तुम्हे उलझन मे न पडकर अपना माल बढाने की आवश्यकता है। तत्त्व यह है कि लोग चाहे तुम्हे अच्छा-बुरा कुछ भी कहे, ख्याल न करके आत्मिकगुणो को बढाते रहो!

८ चन्दन निन्दा सुन यदि, गहे मौन की ओट।
पर चुभती है तीर ज्यो, चित मे लगती चोट॥

९ **अपनी आलोचना सुनना कठिन**—कलाकार ने अपने सदृश ८० मूर्तियां बनाई एव स्वय भी उनके बीच मे बैठ गया। यम उसे लेने आया पहचान न सका। तब बोला—कलाकार! तूने मूर्तियां कमाल की बनाई है, किन्तु एक कमी रह गई अन्यथा इन्हे लेने स्वर्ग से शिविकाएं आ जाती। कलाकार सुनते ही खडा होकर पूछने लगा—कौन सी कमी है?
यम ने कहा—यही कमी है कि तू अपनी आलोचना नही सुन सकता। बस पकड कर ले गया। —प्राचीन कथा



५ वैराग्यरङ्गो परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय !
वादाय विद्याध्ययन चमेऽभुत्-कियद्ब्रुवे हास्यकर स्वमीश !
आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि, र्गत वयो नो विपयाभिलाप !
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे,स्वामिन्! महामोहविडम्बना मे !

—रत्नाकर पञ्चविंशिका ६-१६

दूसरो को ठगने के लिए वैराग्य का रग है, लोगो को खुश करने लिए धर्मोपदेश है और वाद-विवाद करने के लिए मेरा विद्याध्ययन है। नाथ ! अपना हास्य हो वैसा कितना-क कहूँ।

मेरी आयु घट रही है पर पापबुद्धि नही घटनी, जवानी चली गई पर विपयाभिलापा नही गई और औपधि का प्रयत्न कर रहा हू, किंतु धर्म के लिए नही। हे नाथ ! मेरी मोहविडम्बना कितनी विचित्र है !



किए विना, वक्ता को व्याख्यान दिये विना, गवैयो को राग का आलाप किये विना, लेखको को लेख लिखे विना, व्यापारियो को व्यापार किये विना, धोवियो को कपडा धोये विना, नशेवाजो को नशा किये विना तथा कसाई एव वेश्याओ को अपना-अपना किसव किये विना चैन नही पडता। उसी तरह निन्दको को भी पराई निन्दा किए विना चैन नही पडता, क्योकि वे आदत से लाचार हैं।

—सकलित

७ यदि कोई मनुष्य तुम्हारे आगे किसी की निन्दा करता है तो निश्चय समझो कि किसी के आगे तुम्हारी निन्दा भी वह अवश्य करेगा।



भाई-भाई ने और बहन-बहन मे द्वेष न करें।

८. मूर्खाणा पण्डिता द्वेष्या, अधनाना महाधना ।
दुर्भगाना च सुभगा, कुलटाना कुलाङ्गना ॥
—चाणक्यनीति ५।६

मूर्ख पण्डितो से, निर्धन धनिको से, विधवास्त्रिया सोहागिनो मे और कुलटायें कुलाङ्गनाओ से प्राय द्वेष रखा करती हैं।

९. **प्रार्थना मे द्वेष–**

योऽस्मान् द्वेष्टि, यं वय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म ।
—अथर्ववेदकाण्ड ३०सूक्त २७ मत्र१

जो हमसे द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं, उसको हे प्रभु! आपके जबडे मे रखते हैं।

• योऽस्मभ्यमराती, यद्यश्चा नो द्विषते जन ।
निन्द्याद् योऽस्मान्धिप्साच्च, सर्व त भस्मसा कुरु ।
—यजुर्वेद ११।६

जो हमसे शत्रुता रखते हैं, जो हमसे द्वेष रखते हैं, जो हमारी निन्दा करते हैं, जो हमे धोखा देते है, ईश्वर! उन सब दुष्टो को भस्म कर डाल।



अभिष्वङ्ग है। पहला कुप्रवचनो मे, मिथ्यादृष्टियो की वाणी मे होता है। दूसरा शब्दादि विषयो मे और तीसरा पुत्र, स्त्री आदि स्वजनो मे होता है।

५ दृष्टिरागस्तु पापीयान्, दुरुच्छेद्य सतामपि।

—वीतराग स्तोत्र

दृष्टिराग अर्थात् अपने पथ का अधविश्वास महापापी है और सत्पुरुषो के लिये भी दुस्त्याज्य है।

६ रागे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—माया य लोभे य।

—प्रज्ञापनापद २३।१

राग दो प्रकार का है—(१) माया (२) लोभ।

७ पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माया चेव, लोहे चेव। —स्थानाग २।४

रागवृत्ति से सम्बन्धित मूर्च्छा दो कारणो से उत्पन्न होती है (१) माया से (२) लोभ से।

८ असुहो मोहपदोसो, सुहो व असुहो हवदि रागो।

—प्रवचनसार १।८८

मोह और द्वेष अशुभ ही होते है, राग शुभ और अशुभ दोनो प्रकार का होता है।

९ राग दो प्रकार का है—(१) प्रशस्त (२) अप्रशस्त। काटे से काटे की तरह अप्रशस्तराग को हृदय से निकालने के लिये प्रशस्त रागरूप सूआ अन्दर डाला जाता है। अन्त मे उसे भी निकालना ही है।



४ एक बार रागान्ध बादशाह ने अपनी बेगम से कहा—प्यारी! मैं तुम्हारे लिए प्राण देने को तैयार हूं। तब बेगम ने निम्नलिखित शेर सुनाया—

मुझपे तुम मरते नहीं, पर मर रहे इन चार पर।
नाज[1] पर अन्दाज[2] पर रफ्तार[3] पर गुफ्तार[4] पर॥

—उर्दू शेर

५ बीकानेर महाराज के भाई पृथ्वीराज की रानी लालदे मर गई। दाग देते समय रागविह्वल होकर बोले—

तो रा ध्या नहि खावसू, रे वासते! निमड।
मो देखत ही बालिया, लालदे हदा हड्ड॥



---

१ नखरा, २ कटाक्ष, ३. चाल, ४ वाणी।

८ रागस्स हेऊ समणुन्नमाहु, दोसस्स हेऊ अमणुन्नमाहु ।
—उत्तराध्ययन ३२।३६

राग के हेतु मनोज्ञ एव द्वेष के हेतु अमनोज्ञ होते है ।

९ रागदोसस्सिया बाला, पाव कुव्वति ते बहु । —सूत्रकृताग ८।८

राग-द्वेष के आश्रित होकर अज्ञानीजीव विविध पाप किया करते हैं ।

१० को दुक्ख पाविज्जा, कस्स य सुक्खेहिं विम्हओ हुज्जा ।
को वा न लभिज्ज मुक्ख, राग-द्दोसा जइ न होज्जा ॥
—मरणसमाधि प्र० १६७

यदि राग-द्वेष न हो तो ससार मे न कोई दुःखी हो और न कोई सुख पाकर विस्मित ही हो, बल्कि सभी मुक्त हो जाये ।



मुक्त कर दिया।

४ राग-द्वेषौ विनिर्जित्य, किमरण्ये करिष्यसि ?
अथ नो निर्जितावेतौ, किमरण्ये करिष्यसि ?

यदि राग-द्वेष को जीत लिया, फिर वन मे जाकर क्या करेगा ? यदि इन्हे नही जीता तो भी वन मे जाकर क्या करेगा ?

५. रागदोसभयातीत, त वय बूम माहण।

—उत्तराध्ययन २५।२१

जो राग-द्वेष और भय से रहित है, उसे हम ब्राह्मण कहते है।

६ जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो। —दशवैकालिक ६।३।११

जो राग-द्वेष मे समभाव रखनेवाला है, वही पूज्य है।

७ छिंदाहि दोस विणएज्ज राग,
एव सुही होहिसि सपराए। —दशवैकालिक २।५

द्वेष का छेदन करो और राग को दूर हटाओ। ऐसा करने से संसार मे सुखी हो जाओगे।

८ ण सक्का ण सोउ सद्दा, सोत विसयमागया।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥
ण सक्का रूवमदट्ठु, चक्खुविसयमागय।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥
ण सक्का गधमग्घाउं, णासाविसयमागयं।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥
ण सक्का रसमस्साउं, जीहाविसयमागयं।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥

१९ स्नेह

१ नेहपासा भयकरा । —उत्तराध्ययन २३।४३

स्नेह के बन्धन भयकर हैं ।

२ यस्य स्नेहो भय तस्य, स्नेहो दुखस्य भाजनम् ।
—चाणक्यनीति १ ।५

जिसका किसी से स्नेह होता है, उसीको भय होता है । स्नेह दुख का भाजन है ।

३ सुख जीवन्ति निस्नेहा, यथा ते वालुकाकणा ।
सस्नेहास्त्वत्र पीड्यन्ते, यथा ते तिल-सर्षपा ॥

वालुकणो की तरह नि स्नेह व्यक्ति सुख से जीते है और सस्नेह तिल,सरसो की तरह पीले जाते हैं ।

• निस्नेही तो सुख लहै, सस्नेही दुख होय ।
तिल-सरसो, जग पीलिए, रेत न पीले कोय ॥

४ मृत मृग-दम्पति के विषय मे दो सखियो के प्रश्नोत्तर—
निकट न दीसै पारधि, लग्या न दीसै बाण ।
हू तनै पूछू हे सखी ! किस विध छूट्या प्राण ?
जल थोडा नेहा घणा, लग्या नेह का बाण ।
'तू पी ! तू पी ! तू पिये', इन विध छूट्या प्राण ॥
—राजस्थानी दोहा

२०　　स्नेह-त्याग

१. विजहित्तु पुव्वसंजोगं, न सिणेह कहिंचि कुव्विज्जा ।

—उत्तराध्ययन ८।२

पूर्व संयोग को छोड चुकने पर फिर किसी भी वस्तु मे स्नेह न करो ।

२ असिणेह सिणेहकरेहिं ! —उत्तराध्ययन ८।२

जो तेरे साथ स्नेह करे, उनसे भी नि स्नेहभाव से रह ।

३ वोच्छिन्द सिणेहमप्पणो, कुमुअं सारइयं व पाणियं ।

—उत्तराध्ययन १०।२८

कमलपत्र की भांति तू निर्लेप बन और अपने शरीर का भी स्नेह छोड !

४ स्नेहानुबन्धो बन्धूना, मुनेरपि सुदुस्त्यज ।

—श्रीमद्भागवत १०।४७।५

स्वजनो का स्नेहबन्धन तोडना मुनियो के लिए भी अत्यन्त कठिन है ।

५. स्नेहक्षयात्केवलमेति शान्तिम् । —उपदेशमाला

मात्र एक स्नेह का नाश होते ही परमशान्ति मिल जाती है ।



९. प्रेम और वासना मे उतना ही अन्तर है, जितना कांचन और काच मे।

१०. ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव, षड्विध प्रीतिलक्षणम् ॥
—पंचतन्त्र २।५१

प्रेम के छ लक्षण हैं यथा—(१) प्रेमी प्रेमी को देता है, (२) उससे लेता है, (३) उससे अपनी गुप्त बात कहता है, (४) उसकी पूछता है, (५) उसके यहा भोजन करता है, (६) अपने यहा उसे भोजन करवाता है।

११ प्रेम मिलने के अभाव में सुसम्पूर्ण और व्यथा मे मधुर होता है। —शरदचन्द्र

१२ प्रेम पश्यति भयान्यऽपदेऽपि। —किरातार्जुनीय

प्रेम अस्थान मे भी अनिष्ट की आशङ्का करता रहता है।

१३ उपयोगं तु प्रीतिर्न विचारयति। —हर्षचरित्र

प्रीति मे उपयोग का विचार नही होता।

१४ प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोले नही, नैन देत है रोय॥
—कबीर

१५ हृदय त्वेव जानाति, प्रीतियोग परस्परम्। —भवभूति

आपसी प्रेम का योग हृदय ही जानता है।

१६ जो हृदय के घावों से घायल हो चुका है, केवल वही प्रेम की अग्नि को पहचानता है।

२२ सहज एवं सच्चा-प्रेम

१. अहो ! साहजिकं प्रेम, दूरादपि विराजते ।
चकोरनयनद्वन्द्व - माह्लादयति चन्द्रमा ॥

सुभाषितरत्न-भाण्डागार, पृष्ठ १६४

अहो ! स्वाभाविक प्रेम दूर से भी चमक जाता है, देखो ! चन्द्रमा कितनी दूर से चकोर के नेत्रों को आह्लादित करता है ।

२ प्रेम सत्यं तयोरेव, ययोर्योग-वियोगयोः ।
वत्सरा वासरीयन्ति, वत्सरीयन्ति वासराः ॥

—चन्दनचरित्र पृष्ठ ६०

सच्चा प्रेम उन्हीं का है, जिनके योग-वियोग में क्रमशः वर्ष दिन के समान और दिन वर्ष के समान व्यतीत होने लगते हैं ।

३ प्रीति सीखिये ईख तें, पोर-पोर रसखान ।
जहा गाठ तहा रस नही, यही प्रीति की बान ॥

४. सच्चे हार्दिक प्रेम का, होना असर अपार ।
मुग्ध स्त्रियों से देखलो ! मोहित है संसार ॥

—दोहासंदोह

२४ प्रेम-बन्धन

१ जैसो बंधन प्रेम को, तैसो बंध न और।
काठहि भेदे कमल को, छेद न निकले भौंर॥

—वृन्दकवि

२ मुहब्बत नही आग से खेलना है,
लगाना पडेगा, बुझाना पडेगा। —आरजू

३ यह प्रेम को पथ कराल महा,
तलवार की धार पैं धावनो है। —बोधा

४ प्रेम - पयोनिधि मे धसिके,
हसिके कढिबो हसि-खेल नही फिर। —पद्माकरकवि

५ इश्क के घाट किसी को संभलते न देखा,
अच्छो-अच्छो का यहा पाव फिसलते देखा। —उर्दू शेर

रहोगे—यही कहने के समान है कि एक मोमबत्ती जब तक तुम चाहोगे, जलती रहेगी। —टाल्स्टाय

१०. महात्मान प्रणयिना प्रणय खण्डयन्ति न।

—त्रिषष्टि० २।४

महापुरुष अपने प्रेमियो से किया हुआ प्रेम कभी नही तोडते।

११ अवज्ञात्रुटित प्रेम, नवधातु क ईश्वर।
सधि न स्फुटित याति, लाक्षा लेपेन मौक्तिकम्॥

—चन्द्रचरित्र, पृष्ठ ११०

अपमान से टूटे हुए प्रेम को कौन जोड सकता है? फूटा हुआ मोती लाख के लेप से नही जुडता।

१२ रहिमन धागा प्रेम का, मत तोडहु तटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिलत गांठ पड जाय॥



रहोगे—यही कहने के समान है कि एक मोमबत्ती जब तक तुम चाहोगे, जलती रहेगी। —टालस्टाय

१० महात्मानः प्रणयिना प्रणय खण्डयन्ति न।
—त्रिषष्ठि० २।४

महापुरुष अपने प्रेमियों से किया हुआ प्रेम कभी नहीं तोड़ते।

११ अवज्ञात्रुटितं प्रेम, समधातु क ईश्वर।
सधि न स्फुटितं याति, लाक्षा लेपेन मौक्तिकम्॥
—चन्द्रचरित्र, पृष्ठ ११०

अपमान से टूटे हुए प्रेम को कौन जोड़ सकता है? फूटा हुआ मोती लाख के लेप से नहीं जुड़ता।

१२ रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़हु तटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिलत गाँठ पड़ जाय॥



२७ प्रेम के भेद

१ प्रेम के तीन रूप हैं–

(१) भक्ति, (२) मैत्री, (३) करुणा।

महापुरुषों के प्रति भक्ति, तुल्य व्यक्तियों से मैत्री और दुःखित के प्रति करुणा होनी चाहिए।

२ प्रेम दो प्रकार का है–

(१) अधोगामी (२) ऊर्ध्वगामी।

अधोगामी प्रेम में मोह, मोह से वासना और वासना से पतन होता है।

ऊर्ध्वगामी प्रेम में सेवा, सेवा से त्याग और त्याग से आत्म-शुद्धि होती है।

३ उत्तम मध्यम अधम की, पाहन सिकता तोय।
प्रीति अनुक्रम जानिए, बैर व्यतिक्रम होय।



७. कली को जीतना है तो, मधुर मनुहार से जीतो,
हिरन-मन जीतना है तो, मधुर झंकार से जीतो।
किसी को जीतना क्या है? खड्ग से तोप से बम से-
किसी को जीतना है तो, हृदय के प्यार से जीतो।

—हिन्दी कविता



दूसरे के मुख से कही हुई जो बात 'निंदा' मानी जाती है। वही बात अपने प्रेमी के मुख की हो तो 'मजाक' (क्रीडा) हो जाती है। जैसे-जलते समय सामान्य लकड़ी से निकाला हुआ जो धूम(धुवां) कहलाता है, अगर से निकलने पर वही धूप कहलाने लगता है।

८ कुर्वन्नपि व्यलीकानि, यः प्रियः प्रिय एव सः।
अनेकदोषदुष्टोऽपि, कायः कस्य न वल्लभः॥

—हितोपदेश ३।१२६

अनेक अपराध करलेने पर भी प्रिय, प्रिय ही रहता है, यह अपना शरीर अनेक दोषयुक्त है फिर भी प्यारा ही लगता है।

९. सुहाते की लात सही, अनसुहाते की बात नहीं।

—हिंदी कहावत

१० कामाऊ दीकरो कुटुम्ब ने वहालो,
दूझणी भेंसनी पाटु सारी लागे।

—गुजराती कहावत

११ आप-आपरो जी सगलां ने प्यारो है।

—राजस्थानी कहावत

१२ आप मरतां बाप किण ने याद आवै।

" " "

१३ नाम प्यारो नहीं, दाम (काम) प्यारो है।

" " "

१४ पावणो प्यारो पण एक-दो दिन।

" " "

१५ साव कहै जिणरा सावन नहीं जिणरा आगन।

" " "

३० जाति-प्रेम के उदाहरण

१ **बीकानेर के दीवान**—बैंद मुहता हिन्दूसिहजी भोजन की तैयारी कर रहे थे। एक घी बेचनेवाला बैद जाति का ओसवाल आया। उन्होंने मनुहार करके उसे अपने साथ खाना खिलाया एव बाद मे घी खरीदा।

२ **मुर्शिदाबाद के सेठ**—उनके यहा कोई भी ओसवाल भाई चला जाता तो उसे बडे प्रेम से भोजन करवाते, व्यापार करने के लिये कपडे की एक गाठ देते जिससे वह कमा-खाने मे सफल हो जाता। एक ही नही, अनेको को उन्होंने ऐसी सहायता दी थी।

३ **पालीवालब्राह्मण**—कहा जाता है कि किसी समय पाली (मारवाड) मे पालीवालो के लाख घर थे। कोई भी पालीवाल ब्राह्मण बाहर से आ जाता तो प्रत्येक घरवाले एक-एक रुपया और प्रत्येक घरवाले एक-एक ईंट देकर उसे अपने तुल्य लखपति बना लेते और वहाँ बसा लेते। (अग्रवालो के उद्भव स्थान अग्रोहा के लिये भी यही बात प्रसिद्ध है।)



जाती है। लेकिन हम काम-भोगो को दुःखदायी जानते हुए भी नही छोड पाते। अहो! मोह की महिमा कितनी गहन है।

६ मायाहिं पियाहि लुप्पइ, णो सुलहा सुगई य पेच्चओ।

—सूत्रकृताग २।१।३

जो माता-पिता के मोह मे फंस जाता है, उसके लिए परलोक मे सुगति सुलभ नही होती।

७ जाणमाणो परिसाए, सच्चामोसाणि भासइ।
अक्खीण-झंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ॥

—दशाश्रुत ०९।९

जो स्थिति को जानता हुआ भी सभा के बीच मे अस्पष्ट एव मिश्रभाषा (कुछ सच, कुछ झूठ) का प्रयोग करता है तथा कलह-द्वेष से युक्त है, वह महामोहकर्म का बंध करता है।



मन किसका स्थिर होता है ?
जो आशा (मोह) से मुक्त होता है ।
आशा से मुक्ति कैसे मिलती है ?
मन मे अनासक्ति होने से ।
अनासक्ति किसे मिलती है ?
जिसकी बुद्धि मे मोह नही होता ।

४ लीला की लगन माह, ज्ञान की जगन नाह,
जग न रहाय नर ! तउ न रहायवो ।
चले जर कौन-वट को यहा करत हठ,
नदी-तट तरु कौन भांति ठहरायवो ।
सपना जहान तामे अपना निदान कौन,
जपना किसन ! जान तातें दुख जायवो ।
मोह मे मगन सगमग ना धरे है पग,
नग न चलेंगे सग नगन चलायवो ॥

५ मोह जहि महामृत्यु, देह-दाससुतादिपु ।
यं जित्वा मुनयो यान्ति, तद्विष्णो परमपदम् ॥
—विवेकचूडामणि

देह, स्त्री और पुत्रादि मे मोहरूप महामृत्यु को छोड, जिसको जीतकर मुनिजन भगवान के उस परमपद को प्राप्त होते हैं ।

६ उलूकयातु शुशुलूकयातु, जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्,
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु, दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ।
—अथर्ववेद ८।४।२२

उल्लू की चाल 'मोह', भेडिये की चाल 'द्वेष', कुत्ते की चाल

३३ मित्र

१. आपत्सु स्नेहसयुक्तो मित्रम् । —कौटिलीय अर्थशास्त्र

विपत्ति के समय स्नेह रखनेवाला मित्र है ।

२. माथु आपे ते मित्र । —गुजराती कहावत

३. आपत्काले तु सप्राप्तो, यन्मित्र मित्र मेवतत् ।
वृद्धिकाले तु सप्राप्ते, दुर्जनोऽपि सुहृद् भवेत् ॥
—पचतत्र २।११८

आपत्ति के समय जो मित्र है, वस्तुत सच्चा मित्र वही है । सुख एव धनवृद्धि के समय तो दुर्जन भी मित्र बन जाता है ।

४ तन्मित्र यत्र विश्वास । —चाणक्यनीति २।४

वास्तव मे मित्र वही है, जिसमे व्यक्ति का विश्वास हो ।

५ य दृष्ट्वा वर्धते स्नेह , क्रोधश्च परिहीयते ।
स विज्ञेयो मनुष्येण, ममैप पूर्वमित्रक ॥
—चन्दचरित्र पृष्ठ ८२

जिसे देखकर स्नेह की वृद्धि एवं क्रोध की शान्ति हो, उसे अपना पूर्वजन्म का मित्र समझना चाहिये ।

६ शोकारातिभयत्राण, प्रीतिविश्रम्भभाजनम् ।
केन रत्नमिद सृष्ट, मित्रमित्यक्षरद्वयम् ?
—हितोपदेश १।२१३

११ **तुलसी** असमय के सखा, धीरज धरम विवेक।
साहित साहस सत्यव्रत, रामभरोसो एक ।।

१२ बुद्धिर्नाम च सर्वत्र, मुख्यमित्र न पुरुष ।
सभी जगह मुख्यमित्र अपनी बुद्धि ही है, पुरुष नही ।

१३. मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं ।

—लॉग फेलो

१४ पुरिसा ! तुममेव तुम मित्ता किं वहियामित्तमिच्छसि ।

—आचाराङ्ग ३।३

हे पुरुष ! तुम ही, तुम्हारे मित्र हो। बाह्यमित्र की इच्छा क्यो करते हो ?

१५. औरस कृतसंबन्ध, तथा वंशक्रमागतम ।
रक्षित व्यसनेभ्यश्च, मित्रं ज्ञेय चतुर्विधम् ।।

—हितोपदेश २।२०३

मित्र चार प्रकार के हैं (१) एकदेह से उत्पन्न, (२) सबन्ध से बना हुआ, (३) कुल क्रमागत, (४) विपत्ति मे रक्षित ।



३५ सुमित्र एवं सच्चा मित्र

१ पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्य निगूहति, गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गत च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिद प्रवदन्ति सत ।

—भर्तृहरि-नीतिशतक ७३

पाप से हटाता है, हित के काम मे लगाता है, गुह्य बात को गुप्त रखता है, गुणो को प्रकट करता है। आपत्तिकाल मे साथ नही छोडता, समय पर सहायता देता है, सन्त अच्छे मित्र के—ये लक्षण कहते हैं।

२ अप्रियाण्यपि पथ्यानि, ये वदन्ति नृणामिह ।
त एव सुहृद प्रोक्ता, अन्ये स्युर्नामधारका ॥

—पञ्चतन्त्र २।१७०

जो हित की बात कठिन शब्दो मे भी कह देते हैं, वास्तव मे मित्र वे ही है। दूसरे तो नाम के मित्र हैं।

३ नालिकेरसमाकारा, दृश्यन्ते हि सुहृज्जना ।
अन्येवदरिकाकारा, बहिरेव मनोहरा ॥

—हितोपदेश १।९४

सन्मित्र नारियल के फल के समान अन्दर से सारयुक्त होते हैं और कुमित्र बदरीफलवत केवल बाहर से मनोहर लगते हैं।

११. एक सच्चामित्र दो शरीर मे एक आत्मा के समान है।

—अरस्तू

१२ जीवन मे तीन सच्चे मित्र है -
(१) वृद्ध पत्नी (२) पुराना कुत्ता (३) वर्तमान धन।

—फ्रैंकलिन

१३ जैसे पुरानी लकडी जलने मे उपयोगी, पुराना घोडा चढने मे अच्छा एवं पुरानी मदिरा पीने मे लाभदायक है। वैसे ही पुराने मित्र विश्वसनीय और श्रेष्ठ होते हैं।

—लियोनाल्ड राइट

१४ एक घण्टे का अण्डा, एक वर्ष की शराब और तीस वर्ष का मित्र सर्वोत्तम होता है। —इटालियन कहावत

Where and what, when and why, how and who—
These six are my true friends

—रडयार्ड किपलिंग

व्हेयर एण्ड व्हाट, व्हैन एण्ड व्हाई, हाऊ एण्ड हू—ये छः मेरे सच्चे साथी हैं।

कौन ? कहां ? और कैसे ? क्या ? क्यो ? और कब ?
छः ये सच्चे साथी मेरे, मुझे सिखाया सब।



३७ कुमित्र

१ वर न मित्र न कुमित्रमित्रम् । —चाणक्यनीति १६।१३

मित्र का न होना अच्छा, किन्तु कुमित्र का होना अच्छा नही ।

२ कुमित्रमित्रेण, कुतोऽभिनिर्वृ ति ? —चाणक्यनीति १६।१४

कुमित्र मित्र होने से सुख कहाँ ?

३ न स सखा यो न ददाति सख्ये । —ऋग्वेद १०।११७।४

वह मित्र नही, जो मित्र की सहायता नही करता ।

४. सेवक-शठ नृप-कृपण कुनारी, कपटी-मित्र शूल सम चारी ।
पीछे अनहित मन कुटिलाई, अस कुमित्र परिहरे भलाई ।
—रामचरितमानस

५ बेदिल दोस्त दुश्मन नी गरज सारे । —गुजराती कहावत

६ पल-पल मे पलटै परा, पल-पल मे हुवै मीत ।
तुलसी ऐसे मीत की, सन्निपात की रीत ॥

७ पल-पल में कर प्यार, पल-पल मे पलटै परा ।
वै मतलब का यार, रहै ना छाना राजिया ।
—राजस्थानी सोरठा

८ न भजे पापके मित्ते । —धम्मपद ७८

पापी मित्र का साथ नही करनी चाहिये ।

वह व्यक्ति जीवन की कला को भूल गया है,जो नए मित्र नही वना सकता ।

लोगो को मित्र वनाने की चार रीतियाँ हैं—
(१) मिलने पर मुस्काना, (२) नाम याद रखना,(३) दिलचस्पीपूर्वक बात करना, (४) उसके गुणो की प्रशसा करना । —डेलकार्नेगी

३ परिहास मे भी मित्र को ठेस नही पहुचानी चाहिए । —सायरस

४ दूसरे लोगो मे दिलचस्पी लेकर हम दो मास मे जितने मित्र वना सकते है, दूसरो को हम मे दिलचस्पी लेनेवाला वनाने का प्रयत्न करके दो वर्ष मे भी उतने मित्र नही वना सकते —डेलकार्नेगी

५ अगर तुम वडे आदमी को मित्र वनाना चाहते हो तो उसके गलती करने पर सुधार दो। यदि छोटे को मित्र वनाना चाहते हो तो उसके गुणो की प्रशसा करो ।

६ मित्र चाहिये तो मीन जैसे वनाओ, सरोवर के पछी जैसे नही !

करते रहो, किन्तु यदि उसमे रस आने लगे तो बन्द कर दो।

—डेलकार्नेगी

१५ मित्रो की भर्त्सना तो एकान्त मे करो, किन्तु प्रशंसा सर्वत्र और मुक्तकण्ठ से करो।

—सायरस

१६ शत्रुर्दहति सयोगे, वियोगे मित्रमप्यहो !
उभयोर्दु खदायित्वं, को भेद शत्रु-मित्रयो ?

शत्रु सयोग मे जलाता है और मित्र वियोग मे जलाता है। जब दोनो ही दु खदायी हैं तो फिर शत्रु-मित्र मे अन्तर क्या रहा ?



६ ययोरेव सम वित्त, ययोरेव सम कुलम् ।
तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्ट-विपुष्टयो ॥

—पञ्चतन्त्र १।३०४

जो धन से और कुल से बराबर हैं। उन्ही की मित्रता एव वैवाहिक सम्बन्ध उचित माने जाते हैं, हीनाधिको के नही ।

७ जो मित्रता बराबरी की नही, वह घृणा से समाप्त होती है।

—गोल्डस्मिथ

८ मित्रता की रक्षा के चार उपाय—

[१] बहस बाजी न करना,

[२] मित्र की सम्मति का सम्मान करना,

[३] अपनी गलती को स्वीकार करना

[४] मित्र की गलती की स्पष्ट चर्चा न करना ।

—डेलकार्नेगी



सच्ची मित्रता पानी के साथ कीचड की है, पानी सूखते ही कीचड का भी मुह फट जाता है।

मुझे ऐसी दोस्ती नही चाहिए, जो पाँवो मे उलझकर चलने मे बाधक हो। —मोर्की

आजकल की दोस्ती, कागज का फूल है।
देखने मे खूबसूरत, सूघने मे धूल है॥



४२ मित्रता की प्रेरणा

१ मेत्तिं भूएसु कप्पए। —उत्तराध्ययन ६।२

प्राणिमात्र से मित्रता रखें।

२ मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। —यजुर्वेद ३६।१८

मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं। हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें।

३ संगच्छध्वं संवदध्वम्। —ऋग्वेद १०।१५।१२

मिलकर चलो और मिल कर बोलो!

४ अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
—ऋग्वेद ५।६०।५

हम साथियों में न तो कोई बड़ा है, न छोटा है। हम सब एक भाई जैसे हैं और सब मिलकर उन्नति का प्रयत्न करते हैं।

५ करूं मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने नहीं दिलमें, जगह छोड़ी अदावत की!
—उर्दू शेर



६ धूमायन्ते व्यपेतानि, ज्वलन्ति सहितानि च ।
धृतराष्ट्रोल्मुकानीव, ज्ञातयो भरतर्षभ ! ॥

—विदुरनीति ४।६०

भरतश्रेष्ठ धृतराष्ट्र ! जलती हुई लकडिया अलग-अलग होने पर धुआ फेंकती हैं और एकत्रित होने पर प्रज्वलित हो उठती हैं। इसी तरह जातिबन्धु भी फूट होने पर दु ख उठाते है एव सगठित होने पर सुखी रहते हैं।

७ अनाधृष्टा सीदत सहौजस ।

—शुक्लयजुर्वेद १०।४

सगठित होकर रहने से तुम्हे कोई धमका न सकेगा ।

इसी प्रकार सामायिक-पौषध-ध्यान आदि क्रियाओ में भी मन-वचन-काया तीनो सगठित होने पर ही धार्मिक क्रियाएं सफल होती हैं, अन्यथा नही ।

८ United we stand, devided we fall

यूनाइटेड वी स्टैंड डिवाइडेड वी फाल ।

—केन्टकी का उद्देश्य

सगठित होकर हम खडे रह सकते हैं, विभाजित होते ही गिर पड़ेंगे ।

९. हमे सगठित होकर प्राण देने को प्रस्तुत होना चाहिए, अन्यथा अलग-अलग तो हम प्राण ही दे बैठेंगे ।

—फ्रैंकलिन

इस दुनियाँ मे बोलो ! क्या-क्या
काम नही करके दिखलाती ? सदा० ॥

छोटी-सी सगठित शक्ति एक,
महाशक्ति पर काबू पाती,
हडताले सगठित आज भी,
सरकारो का होश भुलाती,
खेल ताश का देखा होगा--
एकाकी ताकत को देखो !
बादशाह को मार भगाती ॥ सदा० ॥

—धनमुनि

११ तम्बूरे के तीन तार होते हैं- एक करता है—ड-र-ड-डुं, दूसरा बोलता है—भ-र-ड-भूं, और तीसरा सुनाता है—तन्-नन्-नन। श्रोताओ को रस नही आता। ज्योही तीनो तार मिलकर बजते है, सुननेवाले मुग्ध हो जाते हैं।

१२ जिस समाज मे फूट और पक्षभेद है, वह किस काम का ? आत्मप्रतिष्ठा और आत्मएकता की मूर्ति का समाज चाहिए। अलग-अलग रहकर जितना काम होता है—उससे सौगुणा सघशक्ति मे होता है। —अरविन्दघोष

१३ सामाजिक सगठन—शरीर के आँख-नाक आदि सभी अग भिन्न-भिन्न है एव अपना-अपना निश्चित कार्य ही करते है, एक दूसरे का नही। लेकिन ये सभी शरीर के साथ रहकर करते है, अलग होकर नही। कटी नाक नही सूंघ सकती, उखडे दाँत नही चबा सकते।

के लिए तैयार न हुआ। अन्त मे सबने पलङ्ग की ओर अपना-अपना सिर करके फर्श पर ही सो गए। राजा को जब सारी स्थिति का पता चला तो सभी व्यक्तियो को अपनी सेना मे स्थान देकर सम्मानित किया।

१६. **अंगुलियाँ एवं अंगूठा—**

तर्जनी— मैं लिखने मे, चित्र करने मे, संकेत मे, मना करने मे, चिमटी भरने मे, काम आती हू।

मध्यमा—मैं वीन, चिमटी एवं रुपयो बजाने को के काम मे आती हूँ और सबसे बडी हू।

अनामिका— मैं पूजा मे और स्वस्तिकादि करने मे मुख्य हूँ।

कनिष्ठा—मैं कान खुजलाने मे, कष्ट पडने पर छेदन-भेदन कराने मे, शाकिन्यादि के उपद्रव हरने में और भजन करने मे प्रधान हूँ।

अगुष्ठ— मैं तुम्हारा पति हूँ, देखो लिखना, चित्र करना, ग्रास भरना, चिमटी भरना, चिमटी बजाना, कातना, पीजना, मुट्ठी (गाँठ) बांधना, दाढी-मूछ सवारना, शस्त्र चलाना, धोना, पोछना, काँटा निकालना, गाय दुहना, शत्रु का गला पकडना इत्यादि मेरे आश्रय बिना नही होते तथा तिलक आदि काम तो खास मेरे से ही होते है। फिर भी हमें एक-दूसरे की सहानुभूति अपेक्षित है।

१७. एक घर मे सात मता, क्यो फटे न होय?

—राजस्थानी कहावत



उत्तराध्ययन सूत्र
उत्तराध्ययन वृहद्वृत्ति
उदान
उपदेश तरङ्गिणी
उपदेशप्रासाद
उपदेशमाला
उपदेशसुमनमाला
उपासक दशा
ऋग्वेद
ऋपिभासित
ऐतरेय ब्राह्मण
कठोपनिपद्
कथासरित्सागर
कल्याण (मासिक)
कवितावली
कात्यायन स्मृति
किशन वावनी
किरातार्जुनीय
कोर्तिकेयानुप्रेक्षा
कुमारपालचरित्र
कुमार सम्भव
कुरानशरीफ
कुरुक्षेत्र
कुवलयानन्द
कूटवेद
केनोपनिषद्
कौटिलीय अर्थशास्त्र
खुले आकाश मे
गच्छाचार प्रकीर्णक
गरुड पुराण
गृहस्थधर्म
गीता
गीता भाष्य
गुर्जरभजनपुष्पावली
गुरुग्रन्थ साहिव
गोम्मटसार
गौतमस्मृति
गोरक्षा-शतक
घटचर्पटपजरिका
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
चन्द-चरित्र
चरक सहिता
चरित्र रक्षा
चरकसूत्र
चाणक्यनीति
चाणक्यसूत्र
चित्राम की चोपी
चीनी सुभापित
छान्दोग्य उपनिपद्
जपुजी साहिव

न्याय दीप
नन्दी सूत्र
नवी
नविश्ते
नवभारत टाइम्स (दैनिक)
नवनीत (मासिक)
नवीन राष्ट्र एटलस
नारद पुराण
नारद नीति
नारद परिव्राजकोपनिषद्
निर्णयसिन्धु
नियमसार
निरुक्त
निशीथ चूर्णि
निशीथ भाष्य
निरालम्बोपनिषद्
नीतिवाक्यामृत
नैषधीय चरित्र
पञ्चतन्त्र
पञ्चास्तिकाय
पंजाबकेशरी
पद्मपुराण
पहेलवी टेक्स्ट्स्
पश्चिमी नाइम्स
परमानन्द पञ्चविंशति
प्रवचन सार
प्रवचन सारोद्धार
प्रवचन डायरी
प्रश्नव्याकरण सूत्र
प्रशमरति
प्रज्ञापना सूत्र
पातंजल योगदर्शन
पारस्कर स्मृति
प्रास्ताविक श्लोकशतकम्
पुरानी बाइबिल
पुरुषार्थ सिद्धिचुपाय
पुराण
पूर्व मीमांसा
बृहत्कल्प भाष्य
ब्रह्मग्रन्थावली
ब्रह्मानन्द गीता
बृहदारण्यकोपनिषद्
बृहस्पतिस्मृति
बाइबिल
बुखारी
बोस्पन्
बुद्ध-चरित्र
बेदोदाद
बौद्ध-नावक
वगश्री

व्यवहार-सूत्र
व्यासस्मृति
व्यास-सहिता
वृहत्पाराशर सहिता
वृहद् द्रव्यसग्रह
वाल्मीकि रामायण
वशिष्ठ-स्मृति
विचित्रा (मासिक)
विवेकचूडामणि
विदुर नीति
विनयपिटक
विवेक विलास
विशेपावश्यक भाष्य
विशेपावश्यक चूर्णि
विश्वकोष
विज्ञान के नए आविष्कार
विसुद्धिमग्गो
विष्णुस्मृति
विश्वमित्र (दैनिक)
वीतराग स्तोत्र
वैद्यक ग्रथ
वैद्यक-शास्त्र
वैद्य रत्नराजसमुच्चय
वैशेषिक दर्शन
वैदिक धर्म क्या कहता है ?
वैदिक-विचार विमर्शन
शतपथ ब्राह्मण
श्वेताश्वेतारोपनिषद्
शकरप्रश्नोत्तरी
शख स्मृति
शार्ङ्गधर
शान्त सुधारस
शान्तिगीता
श्राद्ध विधि
शास्त्रवार्तासमुच्चय
श्रावकप्रतिक्रमण
शिशुपालवध
शिवपुराण
शिव-सहिता
श्रीमद्भागवत
शील की नववाड़
शुकबोध
शुक्ल युजर्वेद
षट्प्राभृत
स्कन्ध पुराण
स्थानाग सूत्र
सभा तरग
सचित्र-विश्व कोष
सत्यार्थप्रकाश
समयसार

व्यक्ति-नामावली २

अफलातून
अबुमुर्ताज
अबीदाउद
अबूबकर केतानी
अल्फान्सीकर
अरविन्द घोष
अरस्तू
आचार्य उमाशंकर
आचार्य श्रीतुलसी
आचार्य रजनीश
आरकिंग
आरजू
आस्निओमले
ओडोर पारकर
इपिक्टेट्स
इब्राहिम लिंकन
उमास्वाति
एच, मोर
एञ्जिलो
एनीबिसेन्ट
एमर्सन
एडीसन
एविड
एलाव्हीलर
एलोसियस
कविराज हरनामदास
कबीर
कन्फ्युसियस
कण्डोर सेट
कागक्युत्सी
कार्लाइल
कार्लमार्क्स
कामवेल
विवकाक्
कालूगणी
कुन्दकुन्दाचार्य
कूपर
केटो
कैनेथवालसर
कैम्पिस
कैथराल
कोल्टन
खलील जिब्रान
ग्वाल कवि
गांधी
गिवन
गुरु गोरखनाथ
गुरु नानक
गेटे
ग्रेविल
गेनविल
गोल्डस्मिथ
गोल्डो जी
गौतम बुद्ध
जगन्नाथ कवि
जयचन्द
जयशंकर प्रसाद
जयाचार्य
जवाहरलाल नेहरू
जार्ज चेपमैन

ूलकोट
ेकन
वेताल कवि
वैल
वो वो
वोधा
भगवतीचरण वर्मा
भिक्षु गणी
भूधर दास
महात्मा भगवानदीन
मदन द० ग्यू
महर्षि रमण
मार्कटेन
माण्टेन
माघकवि
मिल्टन
मेरीकोन ए-टी
मुहम्मद-बिन-बशीर
मेरी ब्राउन
मेसेंजर
मैकिन्तास
मैथिलीशरण गुप्त
मोलियर
यशोविजय जी
यूसुफ अन्वात

रज्जवदास
रडयार्ड कियलिग
रहीम
रविया
रवि दिवाकर
रस्किन
रवीन्द्रनाथ टैगोर
रामकृष्ण परमहंस
रामचरण कवि
रामतीर्थ
रामरतन शर्मा
रिस्टर
रिशर
रूसो
रोम्यारोला
रोशे
रोशफूको
लाफान्टेन
लावेल
लागफेलो
लौटन
लौनलिज
लुकमान हकीम
लूथर
लेनिन

लोकमान्य तिलक
ब्लेर
व्यावली
वृन्द कवि
वायरन
वायर्स
वारटल
वाल्टेयर
वाशिगटन इर्विन
विजयधर्मसूरि
विनोवा भावे
विलकाक्स
विलियमपिट
विलियमपेन
विवेकानन्द
शंकराचार्य
शापेनहावर
शिलर
शिवानन्द
शुभचन्द्राचार्य
शेक्सपियर
शेखसादी
स्टैनिस्ल
स्टील
स्पेन्सर

लेखक की महत्वपूर्ण रचनाएं

प्रकाशित

क आदर्श आत्मा	०-४०	हरकचन्द इन्द्रचन्द नौलखा माधोगंज, लश्कर ग्वालियर (म० प्र०)
चमकते चांद	०-४०	रतीराम रामस्वरूप जैन पो० कैथलमण्डी (हरियाणा)
चरित्र-प्रकाश	२-५०	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा बालोतरा (राजस्थान)
भजनो की भेंट	०-६०	" "
...क प्रकाश	१-२५	" " नीभाव
...दह नियम	०-२०	आन... पं...
७ मोक्ष प्रकाश	...१६	
८ जैन-जीवन		